फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 75 संख्याः 35 प्रभात जयपुर, गुरुवार 5 सितम्बर, 2024 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

ARBiT

Spooked out and Laughing too!

Sometimes, you show the head, the hand or the leg throughout the movie, to create the mystery and so that you can spend more money on making the climax grand.

Chanda Mama

Here are some of the best books about the moon for those interested in all aspects of our nearest neighbour

राजस्थान पुलिस फोर्स में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण मिलेगा

मुख्यमंत्री भजनलाल की अध्यक्षता में मंत्रिमण्डल ने महिलाओं, विशेष योग्यजन, वृद्ध कल्याण के महत्वपूर्ण फैसले लिये

- यह भी निर्णय लिया गया कि कर्मचारी की सेवानिवृत्ति पर अन्य पात्र सदस्य नहीं होने पर विशेष योग्य बच्चों, आश्रित माता-पिता तथा विशेष योग्य भाई-बहनों के नाम पैन्शन ऑर्डर में जुड़ सकेंगे।
- तीन हजार मैगावॉट सौर ऊर्जा के लिये जैसलमेर की रामगढ़ तहसील में तथा 150 मैगावॉट सौर ऊर्जा के लिये फतेहगढ़ में भूमि आवंटन का निर्णय भी लिया गया।

जयपुर, 4 सितम्बर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की अध्यक्षता में बुधवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में आयोजित मंत्रिमण्डल की बैठक में महिला सशक्तिकरण, विशेष योग्यजन एवं वृद्धजन कल्याण और प्रदेश के विकास से जुड़े महत्वपूर्ण फैसले किए गए। उप मुख्यमंत्री डॉ. प्रेम चन्द बैरवा तथा विधि एवं न्याय मंत्री जोगाराम पटेल ने पत्रकारों को संबोधित करते हुए मंत्रिमण्डल द्वारा लिए गए निर्णयों की जानकारी दी।

उप मुख्यमंत्री डॉ. प्रेम चन्द बैरवा ने बताया कि विधानसभा चुनाव से पहले "आपणो अग्रणी राजस्थान संकल्प पत्र-2023" में हमने महिला सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए पुलिस बल में महिलाओं की न्यूनतम 33 प्रतिशत भर्ती करने का वादा किया था। इसी संबंध में आज मंत्रिमण्डल की बैठक में राजस्थान पुलिस अधीनस्थ सेवा नियम, 1989 में संशोधन के प्रस्ताव का अनुमोदन किया गया है। कार्मिक विभाग द्वारा इस बारे में शीघ्र अधिसूचना जारी की जाएगी। उन्होंने बताया कि इस निर्णय से प्रदेश में महिलाओं को रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध हो सकेंगे और राजस्थान पुलिस में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ेगा। साथ ही, महिलाओं से जुड़े मामलों में पुलिस और अधिक संवेदनशीलता के साथ कार्य कर सकेगी।

डॉ. बैरवा ने बताया कि मंत्रिमण्डल ने राज्य सरकार के कर्मचारियों के हित में एक और महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। अब राज्य सरकार के कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति पर अन्य पात्र सदस्य नहीं होने पर, विशेष योग्य बच्चों, आश्रित माता-पिता तथा विशेष योग्य भाई-बहनों के नाम पैंशन पेमैंट ऑर्डर में जुड़ सकेंगे।

उप मुख्यमंत्री ने बताया कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने विधानसभा में राजस्थान विनियोग एवं वित्त विधेयक पर चर्चा के दौरान 70 से 75 वर्ष तक के पैंशनर एवं पारिवारिक पैंशनर के लिए 5 प्रतिशत अतिरिक्त भत्ता दिए जाने की घोषणा की थी। इस क्रम में राजस्थान सिविल सेवा पैंशन नियम, 1996 के नियम 54बी को प्रतिस्थापित किए जाने की मंजूरी भी आज कैबिनेट में दी गई।

विधि एवं न्याय मंत्री जोगाराम पटेल ने बताया कि राज्य सरकार बिजली उत्पादन बढ़ा कर प्रदेश को ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के लिए निरंतर प्रयास कर रही है। इसी दिशा में आज कैबिनेट की बैठक में 3 हजार 150 मेगावाट की सौर ऊर्जा परियोजनाओं के लिए भूमि आवंटन की स्वीकृतियां दी गईं। उन्होंने बताया कि "क्रिस्टलाइन टैक्नॉलजी विद ट्रैकर" पर आधारित 3000 मेगावाट की सौर ऊर्जा परियोजना जैसलमेर जिले की उपनिवेशन तहसील रामगढ़ नं.-1 में लगाई जाएगी तथा इस प्रोजैक्ट के लिए 6877.66 हैक्टेयर भूमि आवंटित की जाएगी। उन्होंने कहा कि सौर ऊर्जा परियोजनाओं की स्थापना से रोजगार के अवसर बढ़ेंगे एवं राज्य के राजस्व में बढ़ोतरी होगी।

पटेल ने बताया कि उत्कृष्ट खिलाड़ियों को राज्य के अधीन सेवाओं में नियुक्तियों में 2 प्रतिशत आरक्षण के प्रावधान के संबंध में खिलाड़ियों की परिभाषा को सुस्पष्ट करने के लिए 21 नवम्बर, 2019 को अधिसूचना जारी की गई थी। उत्कृष्ट खिलाड़ियों के संबंध में इस स्पष्टीकरण को प्रतिस्थापित किए जाने के समय यह प्रावधान दो सेवा नियमों, राजस्थान लैंग्वेज एण्ड लाइब्रेरी (स्टेट एण्ड सबॉर्डिनेट) सर्विस रूल्स, 2013 एवं राजस्थान एक्साइज लैबोरेटरी (स्टेट एण्ड सबॉर्डिनेट) सर्विस रूल्स, 2015 में सम्मिलित किए

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'आर्थिक स्थिति अच्छी होना बच्चे की कस्टडी पाने का आधार नहीं'

जयपुर, 4 सितंबर। राजस्थान हाईकोर्ट ने दुबई में बसे पिता को सात साल के बच्चे की अभिरक्षा मां से लेकर उसे दिलवाने से इन्कार कर दिया है। अदालत ने कहा कि ऐसा करना बच्चे के सर्वोत्तम हित में नहीं होगा। अदालत ने कहा कि पिता के वित्तीय हालात इस बात को तय करने में निर्णायक नहीं हो सकते कि बच्चे की अभिरक्षा उसे सौंपी जाए। हालांकि अदालत ने पिता को बच्चे से मिलने -जुलने की छूट दी है। राजस्थान के मुख्य न्यायाधीश एम.एम. श्रीवास्तव और जस्टिस शुभा मेहता की खंडपीठ ने यह आदेश पिता की बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका का निस्तारण करते हुए दिए।

- राजस्थान हाई कोर्ट ने यह टिप्पणी करते हुए दुबई में बसे पिता को बच्चे की कस्टडी सौंपने से इन्कार कर दिया, पर, कहा कि पिता अपने बच्चे से मिल सकता है।

पिता ने हाईकोर्ट में बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका दायर कर कहा था कि उसकी पत्नी ने उसके नाबालिग बच्चे को अवैध तौर पर अपनी अभिरक्षा में रखा हुआ है, जबकि उसका बेटा दुबई में पैदा हुआ था और वहां पर सामान्य

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

जनता नाखुश सी नज़र आ रही है सुप्रीम कोर्ट की भूमिका से

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 4 सितम्बर। कोलकाता शहर पूरी रात अंधेरे में डूबा रहा, ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। पर ऐसा हुआ और कोलकाता 9 अगस्त की रात को युवा मेडिकल छात्रा के साथ हुए रेप तथा मर्डर को लेकर न्याय की माँग के लिए अँधेरे में डूबा रहा। आर.जी.कार. मेडिकल कॉलेज की पोस्ट ग्रेजुएट मेडिकल छात्रा के हत्यारों की गिरफ्तारी के मामले में राज्य सरकार की निष्क्रियता को लेकर कोलकाता नगर में उत्तर से दक्षिण तथा पूर्व से पश्चिम तक लाइट ऑफ करके विरोध किया गया।

इस राज्यव्यापी विरोध के बीच, सर्वोच्च न्यायालय ने रेप और हत्या के इस केस की सुनवाई आगे के लिए टाल दी है। लोग इस बात की भी आलोचना कर रहे हैं कि इस केस की सुनवाई हो रही थी, तो सर्वोच्च न्यायालय ने इस केस को अपने हाथ में क्यों लिया था।

लोग सर्वोच्च न्यायालय से कहीं ज्यादा विश्वास कलकत्ता उच्च न्यायालय पर व्यक्त कर रहे हैं। जब लोग न्याय की माँग कर रहे हैं, ऐसे समय में, सर्वोच्च न्यायालय ने इस केस के मामले में जो तौर-तरीका प्रदर्शित किया है, उससे लोग निराश हुए हैं।

इन स्वप्रेरित विरोध प्रदर्शनों का नेतृत्व राज्य के वरिष्ठ डॉक्टर कर रहे हैं उनके सैनिकों की भूमिका जुनियर डॉक्टर निभा रहे हैं। जनता विरोध प्रदर्शन कर रहे इन लोगों के साथ एक परिवार की तरह खड़ी हो गई है।

- कलकत्ता हाई कोर्ट संषोजजनक तरीके से सुन रहा था, महिला डॉक्टर के "रेप" व हत्या के मामले को, पर, "अकारण" सुप्रीम कोर्ट ने मुकदमे को हाई कोर्ट से सुप्रीम कोर्ट स्थानान्तरित कर लिया।
- अतः स्वाभाविक तौर पर इस घटनाक्रम के बारे में हाई कोर्ट को सुनवाई रोकनी पड़ी।
- पर, फिर सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई की तारीख खिसका दी।
- जनता इस पूरे घटनाक्रम को संदेह की दृष्टि से देख रही है, क्योंकि उसे रेप व हत्या के मामले की फाइलों को दफन करने की यह साजिश लग रही है।
- बहरहाल जनता ने अपनी नाराज़गी जताते हुए रात को सभी दुकानों व घरों में बत्तियाँ बुझाने का निर्णय लिया।
- रात्रि के अंधेरे में सड़कों पर जगह-जगह लोग इकट्ठा होकर टैगोर के गीत गाते हुए सुनाई दिये।

जनता स्व-प्रेरणा से विरोध करने के लिए सड़कों पर आ गई है तथा सर्वोच्च न्यायालय ने आर.जी.कार में हुई हत्या के इस केस को जिस तरह से हैंडल किया है, उसकी कड़ी आलोचना कर रही है। पूरे बंगाल की जनता अपना रोष जताने के लिए सड़कों पर आ गई है। जनसामान्य ने अपने घरों की लाइटें बुझा दी तथा सड़कों पर आ गए तथा अपराधियों को बचाने में मुख्यमंत्री की भूमिका को लेकर, जोर-जोर से उनके इस्तीफे की माँग करने लगे। इस बात पर विश्वास करने के पर्याप्त कारण हैं कि कोलकाता पुलिस और प्रशासन अपनी ड्यूटी निभाने में असफल रहे हैं तथा उन्होंने अपराध से सम्बन्धित सारे साक्ष्य मिट जाने दिए।

इस केस में सुनवाई को रोक देने के सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को लेकर,

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

नायडू आंध्र में भारी जीत के बाद तेलंगाना में जड़ें जमाना चाहते हैं

पर, उन्हें सफलता मिलेगी इसकी संभावना काफी क्षीण है

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 4 अगस्त। आन्ध्र प्रदेश में जबसे चन्द्रबाबू नायडू सत्ता में आए हैं उनका ग्राफ ऊपर ही बढ़ता जा रहा है और अब उन्होंने तेलंगाना में भी अपनी पार्टी को मजबूत कराने का इरादा जताया है।

- तेलुगूदेशम का तेलंगाना के कुछ भागों में थोड़ा बहुत प्रभाव है, पर, पार्टी इतनी मजबूत नहीं है कि राज्य की राजनीति में अहम् भूमिका निभा सके।
- बी.आर.एस. के उत्थान के साथ ही तेलुगूदेशम पार्टी तेलंगाना में शून्य पर आ गई थी, पार्टी के सभी नेता, कार्यकर्ता बी.आर.एस. में चले गए थे।
- अब नायडू तेलंगाना में अपनी पार्टी को पुनः स्थापित करना चाहते हैं और इसकी शुरुआत वे हैदराबाद नगर निगम के चुनाव में जोर आजमा कर करना चाहते हैं।

यह संयोग ही है कि तेलगाना में कभी तेलुगूदेशम का कांग्रेस से गठबंधन था। पर इस गठबंधन को के.चंद्रशेखर राव की भारत राष्ट्र समिति ने हरा दिया था, उसके बाद कांग्रेस व तेलुगुदेशम का गठबंधन भी टूट गया। हालांकि तेलंगाना के कई भागों में तेलुगूदेशम का वजूद था पर वह इतनी मजबूत नहीं थी कि बी.आर.एस. को चुनौती दे सके। विपक्ष का रिक्त स्थान जल्दी ही कांग्रेस ने अधिग्रहित कर लिया। हालांकि एक बार तो भाजपा राज्य में मुख्य विपक्षी दल के रूप में उभरने लगी थी, पर भाजपा और बी.आर.एस. के बीच पर्दे के पीछे की सांठगांठ का खामियाजा भाजपा को भुगतना पड़ा। उल्लेखनीय है कि उस समय भाजपा ने अपने तेज तर्रार नेता बंडी संजय को हटाकर केन्द्रीय मंत्री जी.किशन रेड्डी को प्रदेश प्रमुख बना दिया था, जिसके बाद विधानसभा चुनाव में भाजपा का भी सफाया हो गया और बी.आर.एस. भी सत्ता से बेदखल हो गई और कांग्रेस सत्ता में आ गई।

वर्तमान में बी.आर.एस. सत्ता से बाहर है और लोकसभा में भी उसका एक भी सदस्य नहीं है। बी.आर.एस. का राजनैतिक स्थान खाली है और भाजपा एवं तेलुगूदेशम उसे भरना चाहती हैं। खासकर आंध्रप्रदेश में जीत के बाद नायडू तेलंगाना में भी अपनी पार्टी को मजबूत करना चाहते हैं।

हैदराबाद में एच.टी.आर.ट्रस्ट भवन के हुई पार्टी का मीटिंग में नायडू ने कहा कि वे पार्टी को पुनर्जीवित करेंगे,

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'होम लोन के बीमा कवर पर वसूली सेवा दोष'

जयपुर, 4 सितंबर। जिला उपभोक्ता आयोग द्वितीय ने होम लोन के बीमा कवर के रूप में वसूली गई राशि को उपभोक्ता को लौटाने के दौरान कटौती करने को सेवा दोष माना है। इसके साथ ही आयोग ने एस.बी.आई. लाइफ इंश्योरैंस कंपनी को कहा है कि वह काटी गई 41,059 रुपए की राशि ब्याज सहित लौटाए। इसके साथ ही आयोग ने बीमा कंपनी पर कुल 65 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया है। आयोग अध्यक्ष ग्यारसी लाल मीना ने यह आदेश जगमोहन सिंह यादव के परिवाद पर दिए।

- उपभोक्ता आयोग ने एस.बी.आई. लाइफ इंश्योरैंस कम्पनी को कहा है कि बीमा कवर के रुप में काटी गई 41,059 रु. की राशि ब्याज सहित वादी को लौटाए, आयोग ने बीमा कम्पनी पर 65 हजार रु. का हर्जाना भी लगाया।

परिवाद में कहा गया कि परिवादी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भाजपा मीडिया का आकलन स्वीकार करने को तैयार नहीं जम्मू-कश्मीर चुनाव के बारे में

भाजपा का मानना है कि यह सबसे बढ़िया समय है जब पार्टी अपनी स्थिति सुदृढ़ करेगी

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 4 सितम्बर। ब्रुनेई व सिंगापुर की अपनी यात्रा से लौटने के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जम्मू-कश्मीर में पहली बार सरकार बनाने के प्रयास में जुट जाएंगे और इसी के तहत अगले सप्ताह उनकी तीन रैलियाँ प्रस्तावित हैं। इनमें से दो रैलियाँ जम्मू क्षेत्र में होंगी, जिसमें डोडा भी शामिल है, जहाँ, हाल के महीनों में कई आतंकवादी गतिविधियाँ हुई हैं। तीसरी रैली कश्मीर क्षेत्र में होगी।

संभावना है कि प्रधानमंत्री 8 सितम्बर के बाद इस केन्द्र शासित प्रदेश का दौरा करेंगे।

सन् 2014 में हुए गत विधानसभा चुनावों में भाजपा ने 25 सीटें जीती थीं और महबूबा मुफ्ती की पार्टी 28 सीटों पर विजयी रही थी।

तथापि, इस बार चुनाव विश्लेषकों की भविष्यवाणी भाजपा के लिए उतनी फायदेमंद नहीं है। "लोकपोल" के अनुमान के अनुसार, नैशनल कॉन्फ्रैंस - कांग्रेस गठबंधन को आसान जीत मिलेगी, जबकि 90 सदस्यीय विधानसभा में भाजपा 20 सीटों पर सिमट जाएगी।

तथापि, भाजपा के "थिंक टैंक" का सोच अलग है। पार्टी का मत है कि तीन कारक हैं, जो इस बार भाजपा के सत्ता में आने की संभावना को मजबूत करते हैं। पहला, धारा 370 तथा 35 ए निरस्त होने के बाद क्षेत्र में, विशेषरुप से जम्मू क्षेत्र में, भाजपा की स्वीकार्यता बढ़ी है। दूसरा, चुनाव आयोग ने 90 सदस्यीय जम्मू-कश्मीर- विधानसभा में एस.सी./एस.टी. के लिए सीटें आरक्षित की हैं। तथा अंतिम कारक है, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की निरंतर बनी हुई लोकप्रियता।

- जम्मू-कश्मीर चुनाव के सह प्रभारी भाजपा नेता राम माधव चुनाव प्रचार की रणनीति बना रहे हैं, भाजपा की नीति अनुसूचित जाति व जनजाति के वोटर्स को साधने की है।
- पहली बार राज्य की 90 सदस्यीय विधानसभा में एस.सी./एस.टी. समुदायों के लिए सीटें रिज़र्व की गई हैं और भाजपा को इसका फायदा मिलने की उम्मीद है।
- भाजपा को उम्मीद है कि धारा 370 खत्म करने से पार्टी को जम्मू क्षेत्र में काफी लाभ होगा।

भाजपा की धारणा है कि बहुकोणीय प्रतिस्पर्धा में एन.सी.-कांग्रेस गठबंधन के उम्मीदवारों को नुकसान होगा, क्योंकि बड़ी संख्या में निर्दलीयों तथा छोटी पार्टियों के मैदान में उतरने की संभावना जताई जा रही है।

इसके अतिरिक्त, राम माधव तथा अनुराग सिंह ठाकुर जैसे भाजपा नेताओं को चुनाव प्रचार की जिम्मेवारी दी गई है और भाजपा युवाओं के अलावा, एस.सी. व एस.टी. मतदाताओं को आकर्षित करने की रणनीति पर काम कर रही है।

हाल के दिनों में, टिकटों के बंटवारे को लेकर जम्मू क्षेत्र में काफी अन्तर्कलह सामने आई है, जबकि पार्टी की कश्मीर शाखा भी, घाटी की 16 सीटों के लिए केवल 8 प्रत्याशी मैदान में उतारने के पार्टी नेतृत्व के निर्णय को लेकर असंतुष्ट तथा व्यथित है। इन सीटों पर, पहले चरण में, 18 सितम्बर को मतदान होना है।

तथापि, भाजपा के चुनाव सह-प्रभारी राम माधव को विश्वास है कि

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

राजस्थान में पहली बार दिखी "गोले दागने वाली" अनोखी फंगस

उदयपुर, 4 सितम्बर (वार्ता)। दक्षिणी राजस्थान के मांडलगढ़ क्षेत्र के राजपुरा गांव में जैव विविधता की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण खोज हुयी है और राज्य में पहली बार "स्पिरोबोलस जयसुखियेंसिस" देखी गयी है।

- दक्षिणी राजस्थान के मांडलगढ़ क्षेत्र के राजपुरा गांव में "स्पिरोबोलस जयसुखियेंसिस" नाम की फंगस को छूते ही छोटे-छोटे काले रंग के गोले, यानी बीजाणुओं की तेजी से बरसात करती है, मानो तोप गोले दाग रही हो।

फाउंडेशन साइकोलॉजिकल सिक्योरिटी के फील्ड इकोलॉजिस्ट डॉ.

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

दो राज्य, एक संकट, दो हीरो!

कुछ घंटों में 30-34 सैन्टीमीटर बारिश ने आंध्र व तेलंगाना को भारी विपदा में घेर लिया

-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 4 अगस्त। दो तेलुगू भाषी राज्यों- आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में अतिवृष्टि के चलते दोनों मुख्यमंत्री- एन. चंद्रबाबू नायडू तथा रैवन्त रेड्डी अपने-अपने राज्यों में बचाव, राहत और पुनर्वास के लिये पूरी तरह सक्रिय हो गये हैं। नायडू कल से विजयवाड़ा में तेजी से बचाव कार्य में जुट गये हैं। वे बस में बैठकर तथा ज़मीनी स्तर पर उतर कर हर चीज़ पर नज़र रख रहे हैं। उन्होंने एन.टी.आर. जिला कलेक्टर के कार्यालय को अपना अस्थाई कार्यालय बना लिया है तथा खुद ही राहत कार्यों की निगरानी कर रहे हैं। उन्होंने अपने सुरक्षा-अधिकारियों की सलाह की अनसुनी करते हुये, बाढ़-प्रभावित क्षेत्रों के कई दौरे किये हैं तथा वे असाधारण रूप से सक्रिय दिखाई दे रहे हैं क्योंकि भारी वर्षा के कारण कई क्षेत्र जलमग्न हो गये हैं तथा अनेकानेक लोग बेघर हो गये हैं। इस जैसी प्राकृतिक आपदाओं के दौरान, चार बार मुख्यमंत्री रह चुके नायडू की प्रशासनिक शैली अलग और स्पष्ट दिखाई दे रही है। वर्ष 2014 में, जब "हुद-हुद" चक्रवात से विशाखापट्टनम शहर और बंदरगाह पूरी तरह तबाह हो गये थे, उस समय बंदरगाह नगर का सतत निरीक्षण करने के लिये वे विशाखापट्टनम में डेरा डाले रहे थे और पूरे शहर के पुनर्निमाण का काम किया था।

सप्ताहांत के समय तीन दिन से चल रही भारी बरसात ने आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना में जबरदस्त तबाही की थी। कुछ ही घंटों में बादल फटने से 29 से 34 सेमी. तक हुई बरसात होने के कारण बाढ़ की स्थिति बन गई। बाढ़ के पानी के ओवरफ्लो के कारण राष्ट्रीय राजमार्गों पर ट्रैफ्रिक रूक गया था तथा बड़ी संख्या में रेल-सेवायें रद्द कर दी गई थी। बाढ़ से हुई यह तबाही उस समय और विकराल रूप में आ गई, जब विजयवाड़ा से गुजरने वाली बुडामेरू स्ट्रीम के कारण बहुत सी कॉलोनियाँ जलमग्न हो गईं तथा करीब दो लाख लोगों ने अपनी जान बचाने के लिये अपनी इमारतों के टैरेस या फर्स्ट फ्लोर पर शरण ली।

- तेलंगाना में 16 व्यक्तियों की मृत्यु हुई तथा आंध्र में विजयवाड़ा में दो तीन लोगों ने मकानों की छत पर शरण लेकर जान बचाई।
- चंद्रबाबू नायडू ने राजधानी अमरावती का सचिवालय छोड़कर विजयवाड़ा के जिलाधीश कार्यालय को अपना ऑफिस बनाया, दो-तीन रात, बस को ही अपना निवास बनाया, जनता के बीच में 24 घंटे रहकर विपदा प्रबंधन में लगे रहे।
- तेलंगाना के मु.मंत्री रैवन्त रेड्डी भी वारांगल शिफ्ट हो गये तथा आंध्र व दिल्ली जहाँ प्रतिस्पर्धी पार्टी भाजपा की सरकार थी, से भी सम्पर्क किया और राहत कार्यों की सामग्री व साधन मांगने में कोई भी हिचकिचाहट नहीं रखी।

बाढ़-पीड़ित लोगों की दुर्दशा से विचलित हुये मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने संकट की इस घड़ी में चुस्त-दुरुस्त नेतृत्व उदाहरण पेश किया। वे अपने कार्यालय एवं प्रशासन को सचमुच ही अमरावती से विजयवाड़ा ले गये जिससे वे बाढ़-प्रभावित क्षेत्र के निकटतम स्थान पर रह सकें।

अधिकारियों को राज्य में बाढ़ की चुनौती का मुकाबला करने के निर्देश देते हुये, वे फील्ड-स्तर पर होने वाले कामों में कूद पड़े। एक विशेष बस में बैठकर मुख्यमंत्री स्थिति को संभालने की कार्यवाही में प्रशासन का मार्गदर्शन कर रहे हैं। वे बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में तब तक दौरे करते रहेंगे, जब तक सामान्य स्थिति बहाल नहीं हो जाती।

भारी बरसात के कारण विशेष रूप से कृष्णा एवं गुन्टूर जिलों में भयंकर तबाही हुई है। बुडामेरू में आई बाढ़ से विजयवाड़ा के सिंह नगर, नन्दापुरी तथा निचले इलाके में बसी अल्प बस्तियाँ जलमग्न हो गई हैं तथा बाढ़ से दो लाख लोग प्रभावित हुये हैं।

मुख्यमंत्री नायडू ने आधी रात के समय बाढ़-पीड़ित क्षेत्र का दौरा किया, ताकि प्रभावित लोग आश्वत हो सकें कि प्रशासन उनका पूरा-पूरा ध्यान रखेगा। अगले दिन सुबह वे यह जानकारी लेने के लिये उस इलाके में गये कि उन लोगों खाना तथा पीने का पानी पहुँचा है या नहीं।

मुख्यमंत्री नायडू ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तथा गृह मंत्री अमित शाह से सम्पर्क किया तथा उन्हें वर्तमान बाढ़ संकट की स्थिति से अवगत कराया।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

वायनाड पीड़ितों के लिए राहुल ने एक माह की सैलरी दान की

नई दिल्ली, 4 सितम्बर। केरल के वायनाड में आई भयानक बाढ़ से प्रभावित लोगों की मदद के लिए कांग्रेस सांसद और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी आगे आए हैं। उन्होंने वायानाड के बाढ़ पीड़ितों के लिए अपनी एक महीने की तनख्वाह दान कर दी है। राहुल गांधी ने बुधवार को इस बात की जानकारी देते हुए एक्स पर एक पोस्ट किया जिसमें उन्होंने देशवासियों से अपील की कि वे बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिए आगे आएं। गौरतलब है कि राहुल गांधी पिछली लोकसभा में

- राहुल गांधी ने बुधवार को इस बात की जानकारी देते हुए एक्स पर एक पोस्ट किया जिसमें उन्होंने देशवासियों से अपील की कि वे बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिए आगे आएं।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। –सुफियान सौरी

संदर्भ पश्चिम बंगाल अपराजिता काननू

कानून नहीं, कानून के भय से ही बचाया जा सकता है निर्भयाओं को

आखिरकार कोलकता आरजी कर अस्पताल रेप व रेप के बाद हत्या घटना के बाद जिस तरह से देशव्यापी माहौल बना, उसके परिणाम के रुप में पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा अपराजिता महिला एवं बाल विधेयक (पश्चिमी बंगाल आपराधिक कानून एवं संशोधन) विधानसभा से पारित हो गया। सवाल यह नहीं है कि कानून कितना सख्त बनाया गया है? सवाल यह भी नहीं हैं कि कानून में किस तरह से जांच से लेकर सजा तक की समय सीमा तय की गई है? सवाल यह भी नहीं हैं कि कानून बनने के क्या परिणाम सामने आएंगे? देखा जाए तो सौ टके का सवाल यह है कि 2012 में निर्भया कांड के बाद जिस तरह से कानून में बदलाव कर सख्ती के प्रावधान किये गये, जिस तरह से पॉक्सों एक्ट के तहत कार्रवाई की बात हुई और जिस तरह से देश में त्वरित न्याय के लिए फास्ट ट्रेक स्पेशल अदालतें और पाक्सों अदालते बनाई गई उसके बाद भी हालात में कोई बदलाव नहीं दिखाई दे रहे हैं। बल्कि यह कहा जाएं तो ज्यादा ठीक होगा कि–'ज्यों–ज्यों दवा की गई, मर्ज बढ़ता ही गया।' निर्भया कांड के चार दरिंदों को फांसी की सजा के बावजूद महिलाओं के खिलाफ रेप व हत्या के मामलों में कोई कमी नहीं आई है अपितु देखा जाएं तो पिछले 12 सालों में रेप–हत्याओं के मामलों में बढ़ोतरी ही देखने को मिल रही है।

दिसंबर 2012 में जब निर्भया कांड हुआ और उसके सामने आते ही जिस तरह से देशव्यापी आक्रोश देखने को मिला उसके बाद जिस तरह से 2013 में नया आपराधिक कानून लाकर सरकार ने सख्ती की मंशा दिखाई उसके बावजूद कोई सकारात्मक परिणाम देखने को नहीं मिला। 2015 में किशोर न्याय अधिनियम के माध्यम से 16–18 साल के दोषियों को भी कोई रियायत नहीं देने के प्रावधान किये गये और 2019–20 में 1023 फास्ट ट्रेक स्पेशल कोर्ट का गठन और 389 पॉक्सों कोर्टो के गठन के बावजूद अपराधियों में किसी तरह से भय का वातावरण नहीं बना है। दिसंबर, 12 में जिस तरह से निर्भया रेप व हत्या कांड सामने आया और खासतौर से युवाओं में जिस तरह का आक्रोश देखा गया, तब समझा जाने लगा था कि हालातों में सुधार होगा, पर आंकड़े कुछ और ही कहानी कहते हैं। उज्जेन, अयोध्या और इसके बाद आरजी कर प्रकरण से साफ हो गया है कि भले ही अब ममता सरकार ने नया अधिनियम पारित करा लिया हो पर तस्वीर का एक पहलू यह भी है कि ऐसे मामलों में भी सभी लोग एक ना होकर के राजनीतिक फायदें नुकसान के तराजू पर तोलकर प्रतिक्रिया देते हैं। मानवता के लिए इससे अधिक कलंक की दूसरी बात क्या होगी। जिस तरह से घटना होने के बाद एक पक्ष बचाव में तर्क गढ़ने लगता है तो दूसरा पक्ष आंदोलन, प्रदर्शन आदि के माध्यम से जितना लाभ उठाने का प्रयास करते हैं यह दोनों ही स्थितियां मानवता के लिए शर्मनाक है।

तस्वीर का एक पहलू यह भी है कि ऐसे मामलों में भी सभी लोग एक ना होकर के राजनीतिक फायदें नुकसान के तराजू पर तोलकर प्रतिक्रिया देते हैं। मानवता के लिए इससे अधिक कलंक की दूसरी बात क्या होगी। जिस तरह से घटना होने के बाद एक पक्ष बचाव में तर्क गढ़ने लगता है तो दूसरा पक्ष आंदोलन, प्रदर्शन आदि के माध्यम से जितना लाभ उठाने का प्रयास करते हैं यह दोनों ही स्थितियां मानवता के लिए शर्मनाक है।

ऐसा नहीं है कि रेप व उसके बाद हत्या जैसी घटनाएं हमारे देश में ही होती हो, बल्कि कहा जाये तो यह वैश्विक समस्या है। निर्भया के टाइम पर ही किस तरह से मी टू अभियान ने गति पकड़ी थी, किस तरह से महिलाएं मुखर हो रही थी, वह अपने आप में एक सशक्त आंदोलन या कहें कि महिला सशक्तीकरण की दिशा में बढ़ता कदम था, पर इससे देश–दुनिया में महिला अपराध खासतौर से रेप, गेंगरेप या इसी तरह की घटनाओं में तनिक मात्र भी कमी नहीं आई है। हालिया दिनों में ही सिने संसार में किस तरह से महिला अभिनेत्रियों के शोषण की मुखरता से चर्चा हुई है वह भी रुपहले पर्दे के पीछे की काली कहानी बयां कर देती हैं। यदि आंकड़ों की भाषा में ही बात करें तो निर्भया एपिसोड के समय 24915 मामले सामने आये थे तो 2016 में सर्वाधिक 38947 अपराध सामने आये। 2020 जो कि कोरोना काल था उसमें अवश्य 28046 मामलें सामने आये अन्यथा आंकड़े 30 हजार से अधिक ही रहे। 2022 के आंकड़ों की बात करें तो महिलाओं के खिलाफ अपराध के इस तरह के 31516 मामलें आएं। यानी कि 2012 के निर्भया एपिसोड और उसकी प्रतिक्रिया स्वरुप देश ही नहीं विश्वव्यापी आक्रोश व जनचेतना के बावजूद अपराध में कमी नहीं आने से साफ हो जाता है कि कहीं ना कहीं इस तरह के समाज विरोधी लोगों में भय ही नहीं रहा। सख्त कानूनी प्रावधानों के बावजूद अपराधी प्रवृति के लोग बेखौफ इस तरह की घटनाओं को अंजाम देते आ रहे हैं। मजे की बात यह है कि अपराधियों में कानून व सजा का कोई भय ही नहीं दिखाई दे रहा अन्यथा इस तरह के अपराध कम ही नहीं बल्कि रुक जाते पर ऐसा हुआ नहीं और ऐसा होगा, इस तरह से लगता भी नहीं हैं। इससे एक बात साफ हो जाती है कि कानून बनाने या सख्त सजा व त्वरित न्याय की व्यवस्था एक बात है और समाज को अपराध विहीन बनाना दूसरी बात। इसके लिए हमें और सब के साथ हमारे मूल्यों और संस्कारों को आज की पीढ़ी तक पहुंचाना ही होगा। खाओं पीओ और मौज करों की सोच किसी भी हालत में सभ्य समाज के लिए उचित नहीं हो सकती। हमें महिलाओं की इज्जत करना, उनके सम्मान की रक्षा करना सीखना और सीखाना होगा नहीं तो कानून के डर से अपराध कम हो जाएंगे यह सोचना एक हद से अधिक सही नहीं हो सकता। यह धरातलीय अनुभव है जो हमारे सामने लगातार आ रहा है।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

लोक देवता बाबा रामदेव ने सनातन धर्म की रक्षा के लिए धरती पर अवतार लिया

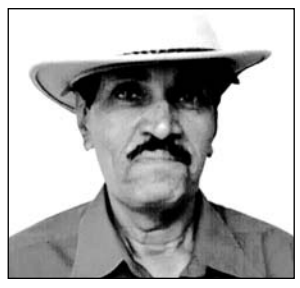

मिश्रीलाल पंवार

लोक देवता बाबा रामदेव ने सनातन धर्म की रक्षा के लिए धरती पर अवतार लिया था। उन्होंने हिन्दुओं में व्याप्त जाति–पाति को मिटाने के लिए बहुत संघर्ष किया। लोक देवता बाबा रामदेव जी उडूं काश्मीर के राजा अजमलजी के पुत्र थे। मान्यता है कि भगवान द्वारकाधीष ने उनके घर अवतार लिया था। कलयुग के अवतारी बाबा रामदेव ने अपने बाल काल में ही दिव्य चमत्कारों से देव पुरुष की प्रसिद्धि पा ली थी। उन्होंने अपने जीवन में समय–समय पर अनेक लोगों को पर्चे दिए तथा अज्ञान रूपी अंधकार से बाहर निकला। इतना ही नहीं आज भी वे अपने भक्तों को पर्चे देते रहते हैं। भाद्र मास में करीब पचास लाख श्रद्धालु उनके दर्शन की अभिलाषा लेकर देश के विभिन्न क्षेत्रों से मारवाड़ आते हैं। ऐसी अद्भुत श्रृद्धा एवं भक्ति अन्यत्र नजर नहीं आती।

माता मैणादे को पर्चा दिया :– प्रचलित लोक गाथाओं के अनुसार लोक देवता बाबा रामदेव ने पहला पर्चा माता मैणाद को ही दिया। एक दिन माता मैणादे अपनी गोद में बालक रामदेव को दूध पिला रही थी कि ध्यान आया कि वे चूल्हे पर दूध रख कर आईं थी। अब तो दूध उफन रहा होगा। माता के मन की बात बालक रामदेव जान गए। मां को चिंता में देखा तो उन्होंने हाथ बढ़ा कर उफनते दूध के बर्तन को नीचे उतार लिया। पुत्र का यह चमत्कार देख मां आश्चर्य चकित रह गई। इस चमत्कार से भगवान ने सभी माताओं को संदेश दिया है कि अपने शिशु को जब भी स्तनपान कराओ तो शान्तचित्त और चिन्ता मुक्त होकर कराना चाहिए। चिंता ग्रस्त मां का दूध पीने वाला बालक आगे जाकर मंदबुद्धि, कमजोर व रोगी होगा जबकि शिशु को खुशी–खुशी तथा चिंता मुक्त होकर दूध पिलाने वाली माता की संतान बुद्धिमान, तेजस्वी तथा सूर्यवीर होगी। सभी माताओं को यह बात ध्यान रखनी चाहिए। बाबा का यह सन्देश सभी माता–बहनों को समझ लेना चाहिए।

कपड़ा चुराने पर दर्जी को सबक सिखाना :– बचपन में बाबा रामदेव जी ने एक बार घोड़े की सवारी करने की जिद कर ली। जिद पर अड़ जाने के बाद अजमल जी ने एक दर्जी को बुलाया और कहा कि बालक रामदेव घोड़े की सवारी की जिद कर रहे हैं। तुम कपड़े का एक घोड़ा बना दो। इस प्रकार खीनखाफ का कपड़ा देकर बालक रामदेव के लिए घोड़ा बनाने का आदेश दे दिया। कपड़ा बहुत किमती था। इसलिए दर्जी की नियत में खोट आ गई। उसने आधा कपड़ा बचाकर अपने पास रख लिया। कपड़े का घोड़ा माता मैणादे को सौंपते दर्जी ने कह दिया कि कपड़ा पूरा हो गया है। इस प्रकार झूठ बोलकर दर्जी अपने घर चला गया। इधर बाबा रामदेव जी जब उस कपड़े के घोड़े पर बैठे तो वह आकाश में उड़ गया। यह देख कर माता मैणादे और पिता अजमल जी के होश उड़ गए। उन्हें लगा कि दर्जी ने घोड़े पर कुछ जादू टोना किया है। उन्होंने आदमी को भेज कर दर्जी को वापस बुलवाया। उन्होंने दर्जी से कहा कि तूने क्या जादू टोना किया कि कपड़े का घोड़ा रामदेव को लेकर उड़ गया। दर्जी ने कहा कि उसने कोई जादू टोना नहीं किया है। बार–बार पूछने पर भी दर्जी ने एक ही जवाब दिया तो महाराज अजमलजी ने उसे कैदखाने में डाल दिया। इधर दर्जी को अहसास हो गया कि यह सब करामात खुद बालक रामदेव की है। उसने तुरंत ही रामदेव से विनती की कि हे प्रभु आपने मुझे किस संकट में डाल दिया। तब आकाशवाणी हुई कि तुमने कपडे की चोरी की है। उसी की तुम्हें सजा मिली है। तब दर्जी ने अपने अपराध को स्वीकार कर माफी मांगी। थोड़ी ही देर में बालक रामदेव आकाश मार्ग से उड़ते घर लौट आए। बालक को सकुशल वापस आया देखा तो सब ने चैन की सास ली। रामदेव जी के कहने से दर्जी को रिहा कर दिया गया। भगवान ने इस कथा से हमें संदेश दिया है कि भगवान से कुछ भी छुपा नहीं है। बुरे कर्म कर भले ही एक बार खुश हो जाओगे मगर बुरा कर्म करोगे तो सजा तो मिलेगी ही और सच्चे मन से कोई पश्चाताप कर ले तो भगवान उसे क्षमा करने में भी देर नहीं करते।

भैरव राक्षस का वध :– एक दिन बाबा रामदेव जी अपने साथियों के साथ गेंद खेल रहे थे, खेलते–खेलते गेंद को इतना दूर फैंक दिया कि सभी साथियों ने अपने आपको गेंद लाने में असमर्थता जताते हुए कहा कि आपको ही गेंद लानी पड़ेगी। इस पर बाबा रामदेव गेंद लाने के बहाने वर्तमान पोकरण की घाटी के ऊपर स्थित साथलमेर जा पहुंचे। बाबा रामदेव जी के बालक रूप में सुनसान पहाड़ी पर अकेले देखकर पहाड़ी पर धूना लगाए बैठे बालीनाथ जी महाराज ने देखा तो कहा कि बालक तू कहां से आया है ? जहां से आया है, वापस चला जा। यहां पर रात को भैरव राक्षस आएगा। बालीनाथ जी ने कहा कि यह आदमखोर राक्षस तुझे खा जाएगा। तब बाबा रामदेव जी ने रात के समय वहां पर रुकने की प्रार्थना की तो बालीनाथ जी ने अपनी कुटिया (आश्रम) में पुरानी गुदड़ी ओढ़ाकर बालक रामदेव को चुपचाप सुला दिया। इधर भैरव घूमता–फिरता बाबा बालीनाथ जी की समाधि पर आ पहुंचा। मनुष्य की गंध आई तो वह हैरान रह गया। उसने बालीनाथ जी से कहा कि आपने आसपास किसी मनुष्य को देखा क्या। बालीनाथ जी ने भैरव से कहा कि यहां पर तो तूने बारह–बारह कोस तक तो पक्षी भी नहीं छोड़ा है, मनुष्य कहां से आया। जाओ, चुपचाप अपनी गुफ़ा में जाकर सो जाओ। मगर भैरव को विश्वास नहीं हुआ। वह गंध वाली दिशा की ओर चल पड़ा। इधर बाबा रामदेव बालीनाथ जी और भैरव राक्षस की बातें सुन रहे थे। गुरु बालीनाथ द्वारा चुपचाप सो जाने का आदेश दिए जाने के कारण बोले तो कुछ नहीं मगर अपने पैर से गुदड़ी को हिलाई। भैरव वहीं खड़ा था। गुदड़ी हिलती देखी तो समझ गया कि इस गूदडी के नीचे कोई सो रहा है। वह गुदड़ी के पास पहुंचा और जोर से खींच लिया। इधर बाबा बालीनाथ जी महाराज बुरी तरह घबरा रहे थे। वे समझ नहीं पाए कि इस बालक को इस राक्षस से कैसे बचाएं।

इधर भैरव राक्षस गुदड़ी को खींचने लगा। बाबा के चमत्कार से गुदड़ी द्रौपदी के चीर की तरह बढ़ने लगी। यह देख बालीनाथ जी महाराज ने सोचा कि यह कोई सामान्य बालक तो नहीं है। गुदड़ी को खींचते–खींचते भैरव राक्षस हांफ गया। अब वह भी समझ गया कि गूदडी के अन्दर सो रहा मनुष्य साधारण ईसान नहीं है। ज़रूर उसका काल है। खुद को खतरे में पाकर सोचने लगा कि यहां से भाग जाना अच्छा है। यूं सोच उसने गूदडी खींचना छोड़ दिया और भागने लगा। उसी समय बाबा रामदेव जी ने गुदड़ी से उठकर हूंकार भरी। भगवान रामदेव जी ने बालीनाथजी महाराज से आज्ञा लेकर भैरव राक्षस का पीछा किया। कुछ ही दूरी पर उन्होंने भैरव राक्षस को धर दबोच लिया। उसका वध कर लोगों को उसके आंतक से मुक्त किया। भैरव के आंतक से मुक्त होने के बाद पोकरण क्षेत्र में मानव चहलपहल फिर से शुरू होने लगी। अजमलजी ने पोकरण गढ़ की स्थापना की। वे अपने परिवार के साथ आडू काश्मीर से पोकरण आ गए।

बाबा रामदेव दिव्य देव होने के साथ–साथ एक महान समाज सुधारक भी थे। जाति–पाति के झगड़ों में जकड़े हिन्दुओं को एकजुट करने का बहुत प्रयास किया। हिन्दू समाज जातियों में बिखरा हुआ था। इससे हिन्दुओं को भारी नुक़सान हो रहा था। बड़ी संख्या में हिन्दु इस्लाम कबूल कर मुस्लिम धर्म अपना रहे थे। बाबा रामदेव ने हिन्दुओं की एकता पर विशेष ध्यान दिया। बाबा रामदेव ने क्षत्रिय कुल में जन्म लेकर भी अछूत समझी जाने वाली जातियों को गले लगाया। उनके घरों में जाकर उनके साथ भजन सत्संग करना दलित और हीन समझने जाने वाले लोगों के साथ उठने–बैठने को लेकर उनके रिश्तेदारों तक ने उनके यहां आना–जाना व बोलना बंद कर दिया था। मगर बाबा रामदेवजी ने इन सबकी परवाह किए बिना सामाजिक कुरितियों से जंग जारी रखी।

वे जानते थे कि हिंदू समाज जातियों में बंटा रहा तो उनका सर्वनाश हो जाएगा। खुद को स्वर्ण जाती का मानने वाले छूआछूत को बहुत बढ़ावा देते थे। श्रमसाध्य समाज के साथ घृणित व्यवहार करते थे। इसी बात का फायदा उठाकर मुस्लिम शासक इन्हें बहला–फुसलाकर इस्लाम कबूल करने पर राजी कर लेते। उन दिनों हजारों हिंदू मुस्लिम धर्म अपना रहे थे। देश में मुस्लिम धर्म अपनाने वाले हिन्दू ही सनातन का विरोध तथा हिन्दुओं का संहार करने लगे थे। शायद बाबा रामदेव जी ने सनातन धर्म की रक्षा के लिए धरती पर अवतार लिया था। मगर तत्कालीन हिंदू समाज में किसी प्रकार की चेतना नहीं जागी, उल्टे लोगो ने उनका ही विरोध करना शुरू कर दिया। खुद उनके अपने बहनोई उनका विरोध करते थे। किसी ने बाबा रामदेव की बात को गंभीरता से नहीं समझा। इस बात से व्यथित होकर छोटी उम्र में उन्होंने रामदेवरा में जीवित समाधि ले ली और अपने धाम वापस लौट गए।

–मिश्रीलाल पंवार,
(वरिष्ठ पत्रकार)

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में शिक्षक की भूमिका

प्रो. अशोक कुमार

गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा किसी भी समाज के विकास का आधार होती है और इस प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे न केवल ज्ञान देते हैं बल्कि बच्चों के व्यक्तित्व का विकास भी करते हैं। शिक्षक गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा में कैसे योगदान देते हैं:–

1. **ज्ञान का संचार:** शिक्षक को अपने विषय का गहन ज्ञान होना चाहिए ताकि वे बच्चों को सही और अद्यतन जानकारी दे सकें। रटने की बजाय समझ पर जोर देना, प्रयोग, चर्चा, और दृश्य–श्रव्य सामग्री का उपयोग करना शिक्षण को रोचक बनाता है। बच्चों को प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करना उनकी जिज्ञासा को बढ़ाता है।

2. **व्यक्तित्व विकास:** एक सकारात्मक और समावेशी माहौल में बच्चे आत्मविश्वास से सीखते हैं।

शिक्षक बच्चों में संचार, समस्या समाधान, टीम वर्क जैसे कौशल विकसित करते हैं। ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, सहयोग जैसे मूल्यों को सिखाकर शिक्षक अच्छे नागरिक बनाते हैं।

3. **व्यक्तिगत ध्यान:** हर बच्चा अलग होता है, इसलिए शिक्षक को प्रत्येक बच्चे की व्यक्तिगत जरूरतों को समझकर शिक्षण करना चाहिए। बच्चों को उनकी कठिनाइयों को दूर करने में मदद करना चाहिए। बच्चों की उपलब्धियों को सराहना और प्रोत्साहित करना उनका मनोबल बढ़ाता है।

शिक्षक को अभिभावकों के साथ मिलकर बच्चों के विकास के लिए काम करना चाहिए। बच्चों की प्रगति के बारे में नियमित रूप से अभिभावकों को सूचित करना चाहिए। शिक्षक को हमेशा नई शिक्षण विधियों के बारे में सीखते रहना चाहिए। अपने विषय के ज्ञान को अद्यतन रखना महत्वपूर्ण है। गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा में शिक्षक की भूमिका अहम है। वे बच्चों को सिर्फ ज्ञान नहीं देते बल्कि उन्हें जिंदगी के लिए तैयार भी करते हैं। एक अच्छा शिक्षक न केवल ज्ञानी होता है बल्कि एक मित्र, मार्गदर्शक और प्रेरणा का स्त्रोत भी होता है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए शिक्षक में निम्नलिखित गुण होने चाहिए: एक अच्छा शिक्षक वह होता है जो न केवल ज्ञान देता है बल्कि छात्रों को सीखने के लिए प्रेरित भी करता है। एक अच्छे शिक्षक में कई गुण होते हैं जो उन्हें एक प्रभावी शिक्षक बनाते हैं।

एक अच्छे शिक्षक के प्रमुख गुण निम्नलिखित हैं:–

ज्ञान: एक अच्छे शिक्षक को अपने विषय का गहरा ज्ञान होना चाहिए। उन्हें छात्रों के सवालों का जवाब देने और उनकी जिज्ञासा को शांत करने में सक्षम होना चाहिए।

संचार कौशल: एक प्रभावी शिक्षक छात्रों के साथ स्पष्ट और प्रभावी ढंग से संवाद कर सकता है। उन्हें छात्रों की समझ को सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न शिक्षण विधियों का उपयोग करना चाहिए।

धैर्य: शिक्षण एक धैर्यवान काम है। एक अच्छा शिक्षक छात्रों की गति और सीखने की शैली को समझता है और उन्हें प्रोत्साहित करता रहता है।

रचनात्मकता: एक अच्छा शिक्षक सीखने को रोचक और आकर्षक बनाने के लिए नए–नए तरीके खोजता रहता है। वे छात्रों की रुचियों को ध्यान में रखते हुए अपनी शिक्षण पद्धित को अनुकूलित कर सकते हैं।

प्रेरणा: एक अच्छा शिक्षक छात्रों को सीखने के लिए प्रेरित करता है। वे छात्रों की उपलब्धियों को पहचानते हैं और उन्हें प्रोत्साहित करते हैं।

सहानुभूति: एक अच्छा शिक्षक छात्रों की भावनाओं को समझता है और उनकी मदद करता है। वे छात्रों को एक सुरक्षित और सहायक वातावरण प्रदान करते हैं।

लचीलापन: एक अच्छा शिक्षक बदलती परिस्थितियों के अनुकूल हो सकता है और अपनी शिक्षण योजनाओं को बदल सकता है।

व्यक्तिगत विकास: एक अच्छा शिक्षक लगातार सीखने और विकसित होने का प्रयास करता है। वे नए शिक्षण पद्धतियों और तकनीकों के बारे में जानने के लिए उत्सुक रहते हैं।

अतिरिक्त गुण जो एक अच्छे शिक्षक में होने चाहिए:–

सकारात्मक दृष्टिकोण: एक सकारात्मक दृष्टिकोण छात्रों को प्रेरित करता है और एक सकारात्मक सीखने का वातावरण बनाता है।

संगठन: एक अच्छा शिक्षक अपनी कक्षा को व्यवस्थित रखता है और समय का प्रबंधन करता है।

तकनीकी ज्ञान: आजकल तकनीक शिक्षण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। एक अच्छा शिक्षक तकनीक का उपयोग करके छात्रों को पढ़ा सकता है।

एक अच्छे शिक्षक के गुणों का महत्व: एक अच्छे शिक्षक के गुण छात्रों के जीवन पर गहरा प्रभाव डाल सकते हैं। एक अच्छा शिक्षक न केवल छात्रों को ज्ञान देता है बल्कि उन्हें एक बेहतर इंसान बनने में भी मदद करता है।

–प्रो. अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर, गोरखपुर विश्वविद्यालय, विभागाध्यक्ष राजस्थान विश्वविद्यालय

राशिफल गुरूवार 5 सितम्बर, 2024

पंडित अनिल शर्मा

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, द्वितीया तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2081, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र 6:41 तक, शुभ योग रात्रि 9:08 तक, कौलव करण दिन 12:22 तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–सिंह, चन्द्रमा–कन्या, मंगल–मिथुन, बुध–सिंह, गुरू–वृष, शुक्र–कन्या, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

आज तेलाधर तपस्या (जैन), साम श्रावणी उपाकर्म (सामवेदियों की राखी) है। आज से मेला रूणीचा रामदेव 9 दिन का आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:45 तक, चर 10:52 से 12:26 तक, लाभ–अमृत 12:26 से 3:53 तक, शुभ 5:06 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:12, सूर्यास्त 6:39

मेष
परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

सिंह
आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है।

धनु
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

वृष
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को व्यस्तता अभी बनी रहेगी। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कन्या
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा है। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

मकर
अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ से राहत मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
घर–परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में दिनचर्या अस्त–व्यस्त हो सकती है। अनावश्यक धन खर्च होगा। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

तुला
व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखे। व्यावसायिक कार्यों के कारण मानसिक तनाव रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। महत्वपूर्ण मामलों दुविधा बनी रहेगी।

कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कर्क
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

वृश्चिक
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

मीन
घर–परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

एक क्विंटल पांच किलो पॉलीथिन व डिस्पोजल जब्त

पालिका टीम ने चार हजार की जुर्माना राशि वसूल की

बीदासर पालिका टीम ने प्रतिबंधित सिंगल यूज प्लास्टिक के खिलाफ छापेमारी की।

बीदासर, (निसं)। नगर पालिका की गठित टीम ने बुधवार को प्रतिबंधित सिंगल यूज प्लास्टिक के खिलाफ छापेमारी करते हुए कस्बे के मुख्य बाजार से एक क्विंटल पांच किलो पॉलीथिन व डिस्पोजल जब्त कर चार हजार रूपये की जुर्माना राशि वसूल की। पालिका की टीम के ज्योंही बाजार में पहुंचने की सूचना मिली तो व्यापारियों में हड़कंप मंच गया। छापेमारी के डर से कई दुकानदारों ने अपनी दुकानों के शटर गिराकर भाग गए।

प्राप्त जानकारी के अनुसार पालिका के अधिशाषी अधिकारी सोहन लाल नायक के नेतृत्व में पालिका की गठित टीम ने सिंगल यूज प्लास्टिक के खिलाफ कार्यवाही करते हुए सब्जी मंडी व बैरी चैक में कार्यवाही को अंजाम दिया। इस मौके पर ईओ सोहनलाल ने राज्य सरकार के निर्देशानुसार प्रतिबंधित पॉलीथिन का व्यापारियों को भविष्य में क्रय विक्रय की चेतावनी देते हुए कहा कि पॉलीथिन के उपयोग करने से कस्बे के सौंदर्यकरण पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। ईओ ने व्यापारियों को चेतावनी दी कि सिंगल यूज प्लास्टिक बेचता हुआ या उपयोग करते हुए मिलने पर उसके खिलाफ उचित कानूनी कार्रवाई की जाकर चालान किया जाएगा। वहीं कस्बे के नागरिकों से अपील की कि पॉलीथिन की जगह कपड़े व जूट के थैले का उपयोग करें। कार्रवाई टीम में सफाई निरीक्षक गिरधारी लाल, कार्यवाहक सफाई जमादार अमित, तेजपाल, फायरमैन सौरभ भाटिया, राजेंद्र कुमार, शकील बल्खी आदि शामिल थे।

राज. बोर्ड की मुख्य परीक्षा के आवेदन की अंतिम तिथि आज

अजमेर, (कासं)। राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने 10वीं व 12वीं की मुख्य परीक्षा–2025 के लिए ऑनलाइन आवेदन फॉर्म भरने की तिथि फिर से पांच सितंबर तक के लिए बढ़ा दी है। अब बिना विलंब शुल्क के साथ बढ़ी हुई तिथि तक आवेदन कर सकेंगे। पूर्व में आवेदन करने की अंतिम तिथि 23 अगस्त निर्धारित थी जिसे पहले दो सितम्बर किया गया और अब 5 सितम्बर कर दिया गया है। परीक्षा के लिए अब तक 19 लाख से ज्यादा आवेदन प्राप्त हो चुके है।

बोर्ड सचिव कैलाश चन्द्र शर्मा के अनुसार एक अतिरिक्त शुल्क के साथ 10 सितम्बर तक आवेदन कर 13 सितम्बर तक बैंक में शुल्क जमा करवा सकेंगे। असाधारण शुल्क केवल प्राइवेट परीक्षार्थियों के लिए जिला मुख्यालयों पर 27 सितम्बर तक भरे जा सकेंगे। इसका चालान 4 अक्टूबर तक जमा होगा। आवेदन पत्र एवं चालान नोडल केन्द्रों पर जमा कराने के लिए 18 सितम्बर तक समय तय किया गया हैं। रेगुलर स्टूडेंट्स के लिए परीक्षा शुल्क 600 रुपए एवं प्राइवेट स्टूडेंट्स के लिए 650 रुपए निर्धारित किया गया है। प्रैक्टिकल एग्जाम शुल्क 100 रुपए प्रति विषय अलग से देना होगा।

बोर्ड परीक्षा के लिए आवेदन करने वालों में विशेष आवश्यकता वाले छात्र, दृष्टि बाधित एवं दिव्यांग परीक्षार्थी, युद्ध में वीरगति को प्राप्त या अपाहिज सैनिकों के बच्चों, पुलवामा हमले में शहीद हुए सैनिकों के आश्रितों को परीक्षा शुल्क से मुक्त रखा गया है। लेकिन इन सभी कैटेगरी के विद्यार्थियों को 50 रुपए टोकन शुल्क जमा कराना होगा। उच्च माध्यमिक, उच्च माध्यमिक (व्यवसायिक) वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा 20 फरवरी 2025 को आरम्भ होगी। माध्यमिक, माध्यमिक (व्यवसायिक) प्रवेशिका परीक्षा 27 फरवरी 2025 को प्रारम्भ होगी।

बारिश से मौसम सुहावना हुआ

गंगापुर सिटी, (निसं)। जिला मुख्यालय सहित आसपास के क्षेत्र में बुधवार दोपहर के बाद से लगातार एक घंटे तक रिमझिम तो कभी तेज बारिश का दौर चला। बारिश से किसान भी खुश दिखाई दिए।

बारिश के बाद तापमान में गिरावट आने से गर्मी और उमस से लोगों को काफी राहत मिली। तहसील कानूनगो राजेन्द्र जायसवाल के अनुसार गंगापुर सिटी में क्षेत्र में अब तक 842 मिमी बारिश दर्ज की जा चुकी है। इससे तापमान में गिरावट आने से गर्मी और उमस से लोगों को काफी राहत मिली है। वहीं, मुरझा रही फसलों को जीवनदान मिला है। एक सप्ताह पूर्व गर्मी के कारण लोगों का हाल बेहाल हो गया था। बीच–बीच में एकाध बार कुछ देर के लिए तेज बारिश भी हुई। रिमझिम बारिश के बाद कई जगहों पर सड़कों पर पानी भर गया, जिसके कारण आमजन, राहगीर, वाहन सवारों को आवागमन में परेशानी का सामना करना पड़ा।

वृक्षारोपण केवल फोटो के लिये नहीं करें : निंबाराम

'आज रोपा हुआ वृक्ष जीवित रहे यह संकल्प होना चाहिए'

- अमृता देवी प्रकृति संवर्धन अभियान के तहत सघन वृक्षारोपण
- सैकड़ों मातृशक्ति ने किया प्रतापनगर मे एक दिन में 1000 वृक्षों का रोपण

जयपुर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्र प्रचारक निंबाराम ने कहा कि हम वृक्षारोपण केवल फोटो के लिए नहीं करे। आज रोपा हुआ वृक्ष जीवित रहे इतनी चिंता और संकल्प हमारा होना चाहिए। मातृशक्ति अपने घरों के आगे अपने नाम से न्यूनतम एक वृक्ष लगाकर उसको पालने और हर साल उसका जन्मदिन मनाने का आज संकल्प ले। निंबाराम बुधवार को अमृता देवी प्रकृति संवर्धन अभियान के अंतर्गत प्रताप नगर सेक्टर 7 स्थित प्रज्ञासागर उद्यान में मातृशक्ति द्वारा आयोजित सघन वृक्षारोपण कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बोल रहे थे। निम्बाराम ने कहा कि देश हमें सब कुछ देता है हम भी देश को देना सीखे। हम केवल लेते रहे और देने की दिशा में कोई प्रयास नहीं हो तो यह कितने दिन चलेगा? एक दिन प्रलय को आना ही है। वायनाड इसका प्रत्यक्ष ताजा उदाहरण है।

उन्होंने कहा कि पर्यावरण को लेकर पूरे देश दुनिया में बड़ी चिंता है। पिछले 20 सालों में वनो को काटकर उन्हें कम किया गया जो निश्चित ही परेशान करने वाला विषय है। वृक्षारोपण कर इस परिदृश्य को बदलना होगा जिसमे हम सब की सक्रिय भूमिका चाहिए, विशेषकर उपस्थित मातृशक्ति की अहम है। वैसे भी आज अमृता देवी पर्यावरण का प्रतीक है। पर्यावरण के संरक्षण और संवर्धन की दिशा मे काम करनेवाले लोगो के लिए आज अमृता देवी प्रेरणास्त्रोत है। ऐसे ही उपस्थित मातृशक्ति अपने अपने क्षेत्र में सघन वृक्षारोपण कर इस कार्य को आगे बढ़ने का कार्य बेहतर तरीके से कर सकती है और देश मे कई स्थानो पर ऐसा कर भी रही है। यहा भी मातृशक्ति को ऐसा करने की निश्चित ही आवश्यकता है। इस अवसर पर उन्होने वृक्षों व पर्यावरण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए वृक्षो की रक्षा हेतु अमृता देवी सहित 363 मातृशक्तियो के बलिदान को याद किया। साथ ही तुलसी-पीपल इत्थादि पौधों का वैज्ञानिक महत्व पर भी प्रकाश डाला।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि सामाजिक कार्यकर्ता सुमन शेखावत रही। उन्होने भी पर्यावरण संरक्षण और संवर्धन की दिशा में मातृशक्ति की अहम भूमिका पर अपनी सक्रिय जिम्मेदारी निभाने की बात कही।

मंचीय कार्यक्रम के बाद क्षेत्रीय प्रचारक निंबाराम द्वारा वृक्षारोपण कर वृक्षारोपण कार्य की शुरूआत की। इसके बाद उपस्थित सैकडों महिलाओं ने एक ही दिन मे 1000 वृक्षो का रोपण कर उनके पालन-पोषण का संकल्प लिया।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि विवेकानंद आश्रम के स्वामी एस.पी. आचार्य ने अंग्रेजी शब्द की व्याख्या करते हुए उसके पीछे छुपे संदेश को सबके सामने रखा। उन्होने कहा कि मानव को शब्द, क्रिया, विचार, चरित्र और स्वास्थ्य पर सतत वॉच रखना चाहिए। ऐसा करेगे तो हम सच्चे मानव बन सकेगे। उन्होंने यह भी कहा कि जो आप चाहते हैं उसे देना शुरू करिए। आप दुख चाहते हैं तो लोगो को दुख देना शुरू करिए और आप सुख चाहते हैं तो सुख देना शुरू करिए। जैसा आप देंगे वैसा ही आपको ईश्वर देगा।

2 साल के बच्चे की कस्टडी विधवा मां को देने के आदेश

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने 2 साल के बच्चे की कस्टडी के संबंध में दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए उसकी कस्टडी दादा-दादी से लेकर विधवा मां को सौंपने के आदेश दिए हैं। जस्टिस इन्द्रजीत सिंह और जस्टिस भुवन गोयल की खंडपीठ ने यह आदेश मां की बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए। अदालत ने माना कि नाबालिग संतान की मां उसकी सबसे पहले स्वाभाविक अभिभावक होती है। याचिकाकर्ता शिक्षित और आर्थिक रूप से सुदृढ़ है, जबकि दादा सिर्फ आठवीं पास है। वही उसके पास आय का नियमित स्त्रोत भी नहीं है। ऐसे में याचिकाकर्ता बच्चे का अच्छी तरह ख्याल रख सकती है। याचिका में कहा गया कि उसके पति की बीते दिनों कार दुर्घटना में मौत हो गई। इसके बाद याचिकाकर्ता को स्कूल व्याख्याता पद पर नियुक्ति मिली। ऐसे में वह अपने दो साल के बेटे को दादा-दादी के पास छोड़कर कार्य ग्रहण करने चली गई। वहीं बाद में उसे बच्चे की कस्टडी नहीं सौंपी गई।

महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ता के लिए अंतिम वरीयता सूची जारी

जयपुर। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर की पहल पर चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग में भर्तियों के काम को मिशन मोड में अंजाम दिया जा रहा है। इसी कड़ी में चिकित्सा मंत्री की मंजूरी के बाद बुधवार को महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ता के 3671 पदों पर अंतिम वरीयता सूची जारी की गई। इन महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं का जल्द पदस्थापन होने से गांव-ढाणी तक स्वास्थ्य सेवाओं को और मजबूती मिलेगी।

अतिरिक्त मुख्य सचिव शुभ्रा सिंह ने बताया कि चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग में राज्य स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान (शीफू) के माध्यम से 20 हजार से अधिक विभिन्न पदों पर भर्ती की प्रक्रिया तेजी से चल रही है। इसी क्रम में महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के 4847 पदों में से 3671 पदों के लिए अंतिम वरीयता सूची को चिकित्सा मंत्री ने मंजूरी दी है। उन्होंने बताया कि इस भर्ती को पूरा करने के लिए शीफू द्वारा अंतरिम वरीयता सूची पर प्राप्त परिवेदनाओं का निस्तारण किया गया एवं अन्य राज्यों से व्यावसायिक योग्यता अर्जित करने वाले चयनित अभ्यर्थियों की अंकतालिकाओं का विभिन्न राज्यों में टीमें भेजकर सत्यापन करवाया गया। इसी प्रकार अभ्यर्थियों के अनुभव प्रमाण पत्रों का पुनर्सत्यापन, आर.एन.सी. पंजीयन का प्रमाणन आदि प्रक्रियाओं को अपनाते हुए 3671 पदों हेतु यह अंतिम वरीयता सूची जारी की गई।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर ने बुधवार को महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ता के 3671 पदों पर अंतिम वरीयता सूची के लिये मंजूरी दी।

राज्यपाल ने सहकारी चुनाव सहित कई मुद्दों पर चर्चा की

ऑल इंडिया कोआपरेटिव बैंक एम्पलाईज फेडरेशन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, ऑल राजस्थान कोआपरेटिव बैंक एम्पलाईज यूनियन के प्रांतीय महासचिव , सहकारी साख समितिया एम्प्लाईज यूनियन के प्रांतीय अध्यक्ष प्रदेश के सहकार नेता सूरज भान सिंह आमेरा ने आज राज्यपाल हरिभाऊ किशनराव बागड़े से शिष्ट मंडल के साथ राजभवन में मुलाक़ात की।

विशेष लेखा परीक्षक निलंबित

जयपुर। सहकारी विभाग ने शिवकुमार पेडीवाल (सहायक रजिस्ट्रार), विशेष लेखा परीक्षक, सहकारी समितियॉ, हनुमागढ़ को निलंबित किया गया है। उनके विरूद्ध राज्य सरकार की ओर से विभागीय जांच प्रक्रियाधीन है।

शुभकामनाएं दीं

जयपुर। राज्यपाल एवं कुलाधिपति हरिभाऊ बागडे, विधानसभाध्यक्ष वासुदेव देवनानी और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने शिक्षक दिवस (5 सितम्बर) पर बधाई और शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने पूर्व राष्ट्रपति और महान शिक्षक एवं विचारक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का स्मरण किया।

केन्द्र सरकार की विशेष वित्तीय सहायता योजना में प्रदेश को मिले अधिकतम लाभ : भजनलाल शर्मा

- 'समय-सीमा का ध्यान रखते हुए योजना में निधि का उपयोग सुनिश्चित हो'

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि केन्द्र सरकार की विशेष वित्तीय सहायता योजना से होने वाले कार्यों को तय समय-सीमा के भीतर पूर्ण किया जाए, ताकि प्रदेश में बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ करने के लिए इस योजना का अधिकतम लाभ प्राप्त हो सके।

शर्मा बुधवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में केन्द्र सरकार की पूंजीगत निवेश के लिए राज्यों को विशेष सहायता योजना के संबंध में आयोजित बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने कहा कि योजना के तहत प्राप्त होने वाली निधि का उपयोग 31 मार्च, 2025 तक ही किया जा सकता है। ऐसे में समय-सीमा का ध्यान रखते हुए इस राशि का अधिकतम उपयोग सुनिश्चित किया जाए।

मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि इस योजना के अंतर्गत पीएचडी, जल संसाधन विभाग की परियोजनाओं, पुलिस कार्मिकों के लिए आवास और यूनिटी मॉल के निर्माण के लिए पहली किस्त के रूप में प्राप्त राशि का शीघ्र उपयोग सुनिश्चित किया जाए, ताकि दूसरी किस्त जल्द से जल्द जारी हो सके। उन्होंने आइकॉनिक टूरिस्ट सेंटर के चिन्हीकरण, पुराने वाहनों की स्क्रैपिंग, औद्योगिक विकास के लिए अपेक्षित नीतिगत सुधारों सहित अन्य बिंदुओं पर समीक्षा की। साथ ही, राज्य के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में भू-सुधार, बुनियादी ढांचा परियोजनाओं से संबंधित बिंदुओं के लिए निर्धारित माइलस्टोन की पूर्ति करते हुए रिपोर्ट तैयार करने के निर्देश दिए।

बैठक में मुख्य सचिव सुधांश पंत, मुख्यमंत्री के अतिरिक्त मुख्य सचिव शिखर अग्रवाल एवं प्रमुख सचिव आलोक गुप्ता सहित विभिन्न विभागों के अतिरिक्त मुख्य सचिव, प्रमुख शासन सचिव, शासन सचिव एवं वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

सुकन्या खाते खोलने के लिए जयपुर में विशेष अभियान

जयपुर, (का.सं.)। सुकन्या समृद्धि खाता योजना के नौ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भारतीय डाक विभाग जयपुर नगर मण्डल की ओर से वित्तीय वर्ष 2024-25 की अवधि को "सुकन्या समृद्धि महोत्सव" वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है।

जयपुर नगर मण्डल के प्रवर अधीक्षक मोहन सिंह मीणा ने बताया कि बालिकाओं को आर्थिक संबल प्रदान करने के उद्देश्य से हमने जयपुर शहर के सभी डाकघरों में सुकन्या समृद्धि खाता खोलने का विशेष अभियान 1 सितंबर से 30 सितंबर के मध्य चला रखा है। उन्होंने कहा कि इस योजना के तहत जयपुर शहर में अब तक 90 हजार से ज्यादा खाते हमने खोले हैं।

उन्होंने बताया कि हमने 10 वर्ष तक की प्रत्येक बालिका का सुकन्या खाता खोलने का लक्ष्य निर्धारित किया है, जिसमें विभागीय कर्मचारियों, पोस्टमैन साथियों द्वारा प्रत्येक घर, विद्यालयों एवं आंगनवाड़ी केंद्रों में संपर्क किया जा रहा है।

दुपहिया वाहन चुराने वाला गिरफ्तार

जयपुर। दुपहिया वाहन चुराने वाले एक शातिर वाहन चोर मोहम्मद ऐजाज निवासी जवाहर नगर जयपुर को बजाज नगर थाना पुलिस ने गिरफ्तार किया है। पुलिस जांच में सामने आया है कि गिरफ्तार आरोपित ने दुपहिया वाहन बुलेट चोरी कर अपने दोस्त सलमान को दे दी। जहां ट्रांसपोर्ट नगर थाना पुलिस ने अवैध मादक पदार्थ के मामले में सलमान को गिरफ्तार कर उसके पास बुलेट जब्त की है।

फर्जी दस्तावेज से जेडीए पट्टा लेकर बेचने करने वाली गैंग गिरफ्तार

जयपुर। रामनगरिया थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए फर्जी दस्तावेजों के आधार पर जेडीए पट्टा प्राप्त कर भूखंड बेचने गिरोह के दो शातिर बदमाश अजय पारीक निवासी जगतपुरा जयपुर और अनूप चौधरी उर्फ गुड्डू निवासी रामनगरिया जयपुर को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपित मामला दर्ज होने के बाद से ही पुलिस से बचने के लिए राजस्थान के बाहर फरारी काट रहे थे। इन लोगों के पास खर्चे के रुपये खत्म हो जाने पर अपने परिचितों से रुपये लेने के लिए जयपुर आए तो पुलिस को सुराग मिलते ही पकड लिया। पुलिस जानकारी में सामने आया है कि फर्जी दस्तावेज बना कर जेडीए पट्टा जारी करवाने में कई लोगों के नाम सामने आए है।

मोतीडूंगरी गणेश मंदिर में सजाई मोदकों की भव्य झांकी

मोतीडूंगरी गणेश मंदिर में मनाए जा रहे गणेश जन्मोत्सव में बुधवार को मोदकों की भव्य झांकी सजाई गई। झांकी का मुख्य आकर्षण 251-251 किलोग्राम के दो विशाल मोदक रहे।

- गणेश चतुर्थी पर मंदिर में दर्शनों के लिए बैरिकेटिंग लगाने का कार्य अंतिम चरण में

जयपुर। मोतीडूंगरी गणेश मंदिर में मनाए जा रहे गणेश जन्मोत्सव के अंतर्गत बुधवार को महंत कैलाश शर्मा के सान्निध्य में मोदकों की भव्य झांकी सजाई गई। झांकी का मुख्य आकर्षण 251-251 किलोग्राम के दो विशाल मोदक रहे। इन दोनों के अलावा 51-51 किलोग्राम के 5 मोदक, 21-21 किलोग्राम के 21 मोदक, 1.25-1.25 किलोग्राम के 1100 मोदक प्रथम पूज्य के दोनों ओर थाल में जमाकर रखे थे। हजारों की संख्या में अन्य छोटे मोदक रखे हुए थे। 2500 किलोग्राम घी, 3 हजार किलोग्राम बेसन, 9 हजार किलोग्राम शक्कर और करीब 100 किलोग्राम सूखे मेवों से तैयार मोदकों की खुशबू मंदिर के बाहर तक आ रही थी। बड़े मोदकों को विशेष पद्धित से तैयार किया गया। मोदकों की पीली आभा से मंदिर स्वर्णिम रंग से निखर उठा। मोदक झांकी के दर्शन सुबह 5 बजे से शुरू हो गए। शयन झांकी तक एक लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने विशेष झांकी के दर्शन किए। श्रद्धालुओं ने भी भक्तिभाव से मोदक का भोग लगाया। शाम को मोदक प्रसाद का निशुल्क भक्तों को वितरित किया गया। गणेशोत्सव की सुचारू दर्शन व्यवस्था के लिए बैरिकेटिंग लगाने का कार्य बुधवार को अंतिम चरण में चलता रहा। जेएलएन मार्ग से मंदिर तक बेरिकेटिंग लगाई गई है। वहीं चांदपोल गेट स्थित परकोटा गणेश मंदिर में चार दिवसीय गणेश चतुर्थी उत्सव का शुभारंभ बुधवार को गणेश जी महाराज की विशेष पूजा-अर्चना के साथ हुआ। जयकारों के साथ मंदिर शिखर पर नई ध्वजा फहराई गई। भगवान गणपति की फूल बंगला झांकी सजाकर 21000 लड्डूओं का भोग लगाया गया।

नम्बर मिलाइए 9587884433

सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

विवाद्यकों के स्थिरीकरण के लिए सम्मन
(आदेश 5 के नियम 1 और 5)
न्यायालय अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश क्रम-4 स्थान जयपुर-2 जयपुर
मो.इरफानुदीन सैफी विरूद्ध मो.युसुफ खां
वाद बाबत.....
वाद सं. CS 20/24 सन्....

बनाम मो. युसुफ खां पुत्र शब्बीर खान जाति मुसलमान, आयु 45 वर्ष, निवासी-प्लाट नं. 08/18 राणा कॉलोनी नाहरी का नाका/जयपुर/848, नाहरों का नाका राणा कॉलोनी, जयपुर 1408, राणा कॉलोनी, नाहरी का नाका, जयपुर

ने आपके विरूद्ध... के लिये वाद पंजीयत किया है। आपको इस न्यायालय में तारीख 12 माह 09 सन् 2024 को दिन में 10:30 ए.एम. बजे दावे का उत्तर देने के लिये उपसंजात (हाजिर) होने के लिये वचन दिया जाता है। आप न्यायालय में स्वयं या किसी ऐसे प्लीडर द्वारा उपसंजात हो सकते हैं जिसे सम्यक अनुदेश दिए गये हों और जो इस वाद से सम्बन्धित सभी सारवान प्रश्नों का उत्तर दे सके या जिसके साथ ऐसा कोई व्यक्ति हो जो ऐसे सब प्रश्नों का उत्तर दे सके। आपको यह निर्देश भी दिया जाता है कि आप उस दिन अपनी प्रतिरक्षा का लिखित साक्ष्य दाखिल करें और उस दिन ऐसे सब दस्तावेज जो आपके कब्जे में या शक्ति में है पेश करें जिन पर आपकी प्रतिरक्षा या दाखिल सुजराई का दावा या प्रतिदावा आधारित है। और यदि आप किसी अन्य दस्तावेज पर, चाहे वह आपके कब्जे व शक्ति में हो अपना प्रतिरक्षा या मुजराई के दावे के समर्थन में साक्ष्य के रूप में निर्भर करते हैं तो आप ऐसी दस्तावेजों को उल्लिखित समय के बाद उपाबद्ध की जाने वाली सूची में प्रविष्ट करें।

आपको सूचित किया जाता है कि यदि आप ऊपर बताई गई तारीख को इस न्यायालय में उपसंजात नहीं होंगे तो वाद की सुनवाई और उसका निपटारा आपकी अनुपस्थिति में किया जायेगा।

यह वाद ता.31 माह 8 सन् 24 को मेरे हस्ताक्षर से और न्यायालय की मुद्रा लगाकर दिया गया है।

वरिष्ठ रीडर
मोहर अदालत
अपर जिला एवं सैशन न्यायाधीश क्रम-4, जयपुर महानगर-द्वितीय जयपुर

उत्तर पश्चिम रेलवे
ई-निविदा सूचना

उप मुख्य सामग्री प्रबंधक, ऊ.प.रे., अजमेर, भारत के राष्ट्रपति के लिए एवं उनकी ओर से **ई-निविदा सं.** 42245634 **दिनांक** 03.09.24 को **जिसकी बंद होने की तारीख** 03.10.24 **को** 14.25 **बजे तक रहेगी**, आमंत्रित कर रहे हैं. निविदाकार निविदा बंद होने की तारीख एवं समय तक ही अपनी मूल/संशोधित निविदा प्रस्तुत कर पाएंगे. मैनुअल (ई-निविदा के अलावा) प्रस्ताव इस निविदा के विरुद्ध मान्य नहीं होंगे. इस तरह के मैनुअल प्रस्तावों पर ध्यान नहीं दिया जायेगा. **आपूर्ति का विवरण:** Set of PU Foam as Cushion Material (For Retrofitment of Berth and Seats) as per FST Properties conforming to EN 45545 Part-2 HL-3 and conforming to RDSO Spec.No.-MMDTS-19020 Rev.-5 dt. 01-03-2023 / Silicon Foam for Seat & Berth as per RDSO Specification No. RDSO/2013/CG-13 (Rev 1) AND Fire Properties to EN 45545 Part-2 HL-3 OR Latest for LHB Second AC (LWACCW) Coaches). Description & Quantity of one set as per Attached Annexure A **मात्रा:** 77. सेट। **निविदा प्रस्तुत करने की दिनांक एवं समय:** ई निविदा को 03.10.2024 को 14.25 बजे तक प्रस्तुत किया जा सकता है. **वैबसाईट विवरण:** www.ireps.gov.in 1021-AJ/24

हमें /NWRailways NWRailways_ पर फॉलो करें

गोपीनाथ बाल भारती प्रवेशिका संस्कृत विद्यालय
चीथवाड़ी, जयपुर, राजस्थान- 303805
(CSU नई दिल्ली द्वारा तात्कालिक रूप से अनुदानित)

आवश्यकता:
- अध्यापक- संस्कृत- 02 एवं
- आधुनिक- 01 (गणित, अंग्रेजी)

योग्यता- आयु- 25 वर्ष से अधिक, अनुभव- 1 वर्ष का
- शिक्षा शास्त्री (संस्कृत विषय)

B.Sc.B.Ed. आधुनिक विषय अंग्रेजी एवं गणित
- M.A. (आचार्य व B.Ed.)

विद्यावारिधि को प्राथमिकता दी जावेगी।
मासिक वेतन- 20,000/- प्रतिमाह।

अध्यापकों की तात्कालिक सेवाये CSU नई दिल्ली के नियमानुसार होंगी। अभ्यर्थी अपने सभी अभिलेखों एवं आधार कार्ड की स्वप्रमाणित छायाप्रति के साथ प्रार्थना- पत्र **सचिव: गोपीनाथ बाल भारती विद्यालय, चीथवाड़ी, जयपुर राजस्थान- 303805** के नाम से डाक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थित होकर देवें। अन्तिम दिनांक 17.09.2024 तक समिति कार्यालय में जमा करें। अन्तिम तिथि के पश्चात प्राप्त आवेदन- पत्रों पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पर्क सूत्र- 9887519151

सचिव: गोपीनाथ बाल भारती विद्यालय समिति, चीथवाड़ी, जयपुर- 303805

जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर
www.jda.urban.rajasthan.gov.in
क्रमाकःजविप्रा/उपा.जोन-06/2024/डी-2017 दिनांक-3/9/24

सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि श्री राजेश कुमार शर्मा पुत्र श्री रामअवतार शर्मा द्वारा रजि. विक्रय पत्र एवं अन्य दस्तोवज के आधार पर भैरव गृ0नि0समिति की योजना भगत वाटिका के आवासीय भूखण्ड सख्या- कुल क्षेत्रफल 68.25 व.ग. का नाम हस्तान्तरण जारी करने हेतु आवेदन किया है। उक्त भूखण्ड का लीजधारक की मृत्यु उपरान्त वारीसान द्वारा किये गये विक्रय पत्र के आधार पर विज्ञप्ति का प्रकाशन करवाया जाना है। अत इस संबंध में यदि किसी व्यक्ति/संस्था/ कम्पनी/ सह खातेदार व अन्य किसी को कोई आपत्ति हो तो विज्ञप्ति प्रकाशन दिनांक से 07 दिवस में अधोहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष आपत्ति प्रस्तुत करे, अन्यथा भूखण्ड संख्या 8 क्षेत्रफल 68.25 व.ग. का श्री राजेश कुमार शर्मा पुत्र श्री रामअवतार शर्मा के पक्ष में जारी करने की नियमानुसार कार्यवाही की जावेगी। मयाद पश्चात कोई आपत्ति स्वीकार नहीं होगी।

उपायुक्त जोन-06, जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर

आम सूचना सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे मुवक्किल श्री कैलाश चंद यादव पुत्र श्री रूड मल यादव, निवासी वार्ड न 09, ढाणी पदमा वाली, लिसाडिया, तहसील श्रीमाधोपुर, जिला सीकर-337212 (राज.) एक अचल सम्पत्ति आवासीय प्लाट नम्बर 110, मैट्रो सिटी, ग्राम मांग्यावास, तहसील सांगानेर, जिला जयपुर (राज.) जिसका कुल क्षेत्रफल कार्नर की गोलाई काटकर 77.75 वर्गगज है को जो कि सर्वप्रथम उक्त प्लाट नं. 110 का पट्टा विलेख जेडीए, जयपुर द्वारा श्री मनीष चौधरी पुत्र श्री महेन्द्र शास्त्री के हित में जारी किया गया तत्पश्चात् उक्त प्लाट श्री मनीष चौधरी पुत्र श्री महेन्द्र शास्त्री ने पंजीबद्ध विक्रय पत्र के माध्यम से श्री बाबु लाल पुत्र श्री ननाग राम को विक्रय कर दिया तत्पश्चात् उक्त प्लाट श्री बाबु लाल पुत्र श्री ननाग राम ने पंजीबद्ध विक्रय पत्र के माध्यम से श्री महेश कुमार सैनी पुत्र श्री तेजू राम को विक्रय कर दिया तत्पश्चात् उक्त प्लाट श्री महेश कुमार सैनी पुत्र श्री तेजू राम ने पंजीबद्ध विक्रय पत्र के माध्यम से श्री मोहन लाल यदुवंशी पुत्र श्री पतिराम एवं श्रीमती राजरानी वर्मा पत्नी श्री मोहन लाल यदुवंशी को विक्रय कर दिया उक्त विक्रय पत्र का पंजीयन कार्यालय उप पंजीयक जयपुर पंचम के यहां दिनांक 06.07.2021 को क्रम संख्या 202103019108927 पर पंजीबद्ध किया गया है तत्पश्चात् श्रीमती राजरानी वर्मा पत्नी श्री मोहन लाल यदुवंशी का स्वर्गवास दिनांक 25.06.2022 को हो गया उनके द्वारा छोडी गई उक्त निर्वसियत अचल सम्पत्ति के हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम के अनुसार उनके 1/2 अविभाजित हिस्से के श्री मोहन लाल यदुवंशी पुत्र श्री पतिराम, श्री शिवांग यदुवंशी पुत्र श्री मोहन लाल यदुवंशी एवं श्री देवांग यदुवंशी पुत्र श्री मोहन लाल यदुवंशी सयुक्त रूप से मालिक स्वामी एवं काबिज हुए तत्पश्चात् श्री शिवांग यदुवंशी एवं श्री देवांग यदुवंशी पुत्रान श्री मोहन लाल यदुवंशी ने उक्त अचल सम्पत्ति में अपनी माताजी श्रीमती राजरानी वर्मा के हिस्से से प्राप्त हुए स्वयं के अपने अपने अविभाजित हिस्से का हकत्याग पत्र दिनांकित 21.08.2024 निष्पादित करते हुए अपने पिताजी श्री मोहन लाल यदुवंशी पुत्र श्री पतिराम के पक्ष में हक त्याग कर दिया जोकि दिनांक 21.08.2024 को कार्यालय उप पंजीयक जयपुर सप्तम् के यहां क्रम संख्या 202403021118437 पर पंजीबद्ध किया गया है इस प्रकार श्री मोहन लाल यदुवंशी पुत्र श्री पतिराम, उक्त अचल सम्पत्ति सम्पूर्ण के एकमात्र मालिक, स्वामी एवं काबिज हुए, उक्त श्री मोहन लाल यदुवंशी पुत्र श्री पतिराम, निवासी प्लाट नं. ए-28, गंगोत्री नगर, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर-302018 से मेरे मेरे मुवक्किल खरीद करना चाहते हैं। उक्त सम्पत्ति को खरीद करने हेतु मेरे मुविक्कल एच.डी.एफ.सी. बैंक लिमिटेड से ऋण प्राप्त कर उक्त सम्पत्ति को बंधक रखना चाहते है। इस संबंध में किसी भी व्यक्ति अथवा बैंक इत्यादि को किसी प्रकार की कोई आपत्ति या आक्षेप हो तो मय सबूत सात दिन की अवधि में अधोहस्ताक्षरकर्ता को लिखित आपत्ति प्रस्तुत करें, अवधि समाप्ति के पश्चात् आपत्ति मान्य नहीं होगी तथा मेरी मुविक्कल के विरूद्ध शून्य व बेअसर मानी जावेगी।

(श्याम सुन्दर चावला) एडवोकेट, मोबाईल 9829218044

कार्यालय उप आवासन आयुक्त वृत-प्रथम
राजस्थान आवासन मण्डल, प्रताप नगर, जयपुर
क्रमांक:3399 जाहिर आम-सूचना दिनांक:12.08.2024

राजस्थान आवासन मण्डल की प्रताप नगर योजना में आवास/ फ्लैट संख्या 101/85 (MIG-B) का आवंटन श्री अरूणाक्ष भारद्वाज श्री सुरेन्द्र कुमार को किया गया था। जिसका आवंटन पत्र क्रमांक 5526 दिनांक 30.12.2004 को जारी किया गया था। उनके पक्ष में पंजीयन पत्रों निष्पादन दिनांक 09.10.2009 को उप पंजीयक सांगानेर-प्रथम जयपुर के यहां पंजीकृत करवाया गया। श्री अरूणाक्ष भारद्वाज द्वारा उक्त आवास को श्रीमती ललिता मथारू पत्नी श्री नरेन्द्र सिंह को विक्रय कर इनके पक्ष में विक्रय पत्र दिनांक 04.12.2015 को उप पंजीयक सांगानेर द्वितीय जयपुर में पंजीकृत करवाया गया। श्रीमती ललिता मथारू द्वारा उक्त आवास को श्रीमती अंजना शर्मा पत्नी श्री सत्यनारायण शर्मा को विक्रय कर इनके पक्ष में विक्रय पत्र दिनांक 24.02.2023 को उप पंजीयक सांगानेर प्रथम जयपुर में पंजीकृत करवाया गया। क्रेता/क्रेती श्रीमती अंजना शर्मा पत्नी श्री सत्यनारायण शर्मा द्वारा आवासन मण्डल में उक्त आवास पर अपना नाम मण्डल रिकॉर्ड में दर्ज कराने बाबत आवेदन पत्र प्रस्तुत किया है। अतः उक्त आवास के हस्तान्तरण बाबत किसी व्यक्ति/पक्षकार को कोई आपत्ती हो तो अधोहस्ताक्षर कर्ता के कार्यालय में 7 दिवस में अपनी आपत्ति प्रस्तुत करें अन्यथा यह मानते हुए की मण्डल रिकॉर्ड में नाम दर्ज करने में किसी को कोई आपत्ति नही हैं, श्रीमती अंजना शर्मा पत्नी श्री सत्यनारायण शर्मा का नाम मण्डल रिकॉर्ड में दर्ज कर दिया जावेगा। भवदीय

सम्पदा प्रबन्धक वृत्त-प्रथम, राज. आवा. मण्डल, जयपुर

खोया पाया

मेरा मकान संख्या 92/222 मानसरोवर जयपुर का मूल हस्तान्तरण आदेश पत्र क्रमांक DHC-II/2163 दिनांक 31/10/23 जो राजस्थान आवासन मण्डल द्वारा जारी किया गया था कहीं खो गया है मिलने पर सूचित करें- कुनाल आसुदानी 9414845727

मेरा म.न.129, जो रामल्यावाला सीकर रोड, जयपुर डेयरी योजना में स्थित है। उक्त प्लाट का कब्जापत्र खो गया है। मिलने पर सुचित करें। संर्पक- राजेन्द्र शर्मा पुत्र श्री मोहनलाल शर्मा, B-27, जगदम्बा कालोनी नयाखेडा, जयपुर, 9829010078

प्रपत्र संख्या 7
(देखिये नियम 21)
कार्यालय सहायक आयुक्त (प्रथम) देवस्थान विभाग, जयपुर
राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 18 (2) के अधीन नोटिस
समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को
मुकदमा नम्बर 263/2024
(नाम वर्णन तथा निवास स्थान)

चूंकि [illegible] अशोक भारद्वाज निवासी फ्लैट नम्बर एफ-4, प्लाट संख्या 15, सालासर रेजीडेन्सी, लक्ष्मण रेखा नियर वर्धमान होरिजन, नांगल पुलिया, झोटवाडा जयपुर ने राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 17 (1) के अन्तर्गत बडी मॉ फाउण्डेशन कार्यालय पता फ्लैट नम्बर एफ-4, प्लाट संख्या 15, सालासर रेजीडेन्सी, लक्ष्मण रेखा नियर वर्धमान होरिजन, नांगल पुलिया, झोटवाडा जयपुर राजस्थान प्रन्यास के सम्बन्ध में अग्रिम जांच किये जाने के लिए आवेदन-पत्र दिया है। अतएव धारा 18 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास जिसकी जांच की जा रही है, में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम व्यापक जानकारी के लिए यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से साठ दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करे।

और यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां प्रस्तुत नहीं की गई तो उक्त आवेदन-पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच ग्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा।

आज दिनांक 4.9.24 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया।
आइंदा तारीख पेशी 6.11.24

मोहर अदालत
सहायक आयुक्त (प्रथम) देवस्थान विभाग जयपुर

प्रपत्र संख्या 7
(देखिये नियम 21)
कार्यालय सहायक आयुक्त (प्रथम) देवस्थान विभाग, जयपुर
राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 18 (2) के अधीन नोटिस
समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को
मुकदमा नम्बर 264/2024
(नाम वर्णन तथा निवास स्थान)

चूंकि श्री अनिल कुमार बैरवा पुत्र श्री सीताराम बैरवा निवासी रामोला भैरूजी की ढाणी, पोस्ट बगरू जयपुर ने राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 17 (1) के अन्तर्गत श्री राजा गोपीचन्द भृतहरी ट्रस्ट, बैरवा की ढाणी, उती भैरूजी, रामोला, पोस्ट बगरू, तहसील सांगानेर जिला जयपुर राजस्थान प्रन्यास के सम्बन्ध में अग्रिम जांच किये जाने के लिए आवेदन-पत्र दिया है।

अतएव धारा 18 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास जिसकी जांच की जा रही है, में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम व्यापक जानकारी के लिए यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से साठ दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करे।

और यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां प्रस्तुत नहीं की गई तो उक्त आवेदन-पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच ग्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा।

आज दिनांक 4.9.24 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया।
आइंदा तारीख पेशी 6.11.24

मोहर अदालत
सहायक आयुक्त (प्रथम) देवस्थान विभाग जयपुर

नाम परिवर्तन

मैंने अपना नाम ILAMA KHAN से बदलकर ILMA KHAN D/o शराफत खान रख लिया है, भविष्य में मुझे ILMA KHAN निवासी वार्ड-10, मोहल्ला हाण्डीपुरा, आमेर के नाम से जाना जावें।

मैनें अपना नाम नरेन्द्र कुमार बौहरा से बदलकर नरेन्द्र बौहरा पुत्र स्व. श्री बसन्ती लाल बौहरा निवासी 2509, बौहरा भवन, मोती सिंह भौमियों का रास्ता, जौहरी बाजार जयपुर 302003 रख लिया है भविष्य में मुझे नरेन्द्र बौहरा के नाम से जाना पहचाना जावें।

मै जोगमाया दत्ता पत्नी अनिल दत्ता निवासी- 413, शंकर नगर, कागदीवाडा ने भविष्य के लिए अपना नाम जोगमाया दत्त से बदलकर जोगमाया दत्ता कर दिया है। भविष्य में मुझे जोगमाया दत्ता के नाम से जाना जाए।

मै अनिल दत्ता निवासी- 413, शंकर नगर, कागदीवाडा ने भविष्य के लिए अपना नाम अनिल कुमार दत्त से बदलकर अनिल दत्ता कर दिया है। भविष्य में मुझे अनिल दत्ता के नाम से जाना जाए।

मै अचिन्त कुमार दत्ता पुत्र अनिल दत्ता निवासी- 413, शंकर नगर, कागदीवाडा ने भविष्य के लिए अपना नाम अचिन्त दत्त से बदलकर अचिन्त कुमार दत्ता कर दिया है। भविष्य में मुझे अचिंत कुमार दत्ता के नाम से जाना जाए।

मैने मेरा नाम लुबना अशरफ से बदलकर लुबना हुसैन पत्नी शादमान हुसैन रख लिया है भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना जावे। प्लॉट नंबर 121, फ्लैट नं. 1, लाजपत नगर बस स्टेण्ड के पास जगतपुरा

मैने मेरा नाम नवीन से बदलकर नवीन जगवानी पुत्र खेमचन्द जगवानी रख लिया है भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना जावें। 80/243, सैक्टर 8, प्रताप नगर, सांगानेर, जयपुर

मैने मेरा नाम पंकज कुमार सिंधी से बदलकर पंकज कुमार पुत्र श्री गिरधारी लाल रख लिया है भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना जावे। 62/87, रजत पथ मानसरोवर

मैने मेरा नाम Akta Jain से बदलकर Ekta Jain रख लिया है अतः भविष्य में निजी या सार्वजनिक अभिलेखों में मुझे Ekta Jain के नाम से ही जाना जावे। पताः 36 बी, कस्तूरबा नगर, निर्माण नगर जयपुर

I Balaram Meghwal S/o Bhaniram Meghwal R/o 201, Gousala Ki Dhani, Dunkar, Churu, Rajasthan-331501, have changed my name to Shubham

I army no 2873656L Ex RECT RAJ RIF Umed singh S/O mohan singh R/O plot no 8 angila nagar sikar road harmada jaipur that have changed my name From UMED SINGH To UMMED SINGH TANWAR vide affidavit dated 7 aug 2024 before district notary Jaipur

ऋषभदेव में आठ इंच बारिश दर्ज, हाईवे पर पांच-पांच फीट पानी भरा

पानी जमा होने के कारण उदयपुर-अहमदाबाद हाईवे छः घंटे तक जाम रहा

उदयपुर की स्वरूपसागर के चारों गेट दो-दो फीट खोले।

- मोरवानिया पुलिया पानी के बहाव में बह गई, जिससे उभयेश्वर व अन्य गांवों का सम्पर्क टूटा
- पीछोला झील के छलकने से ओवरफ्लो हुए स्वरूपसागर पर दूसरे दिन भी चादर चल रही है

उदयपुर, (कासं)। लेकसिटी में 10 दिनों में हुई बारिश ने शहर के झीलों की सूरत ही बदलकर रख दी है। उदयपुर शहर की प्रमुख झीलें व नदी-तालाब इस बार मानसूनी चक्र के बीतते माह के बीच छलकने की राह देख रहे थे। वहीं 24 अगस्त को मौसम विभाग के अलर्ट के बीच शुरू हुई बारिश ने नदी-नालों को उफान पर ला दिया और उसके बाद दो दिन से हो रही बारिश ने इस ऊफान को 'ओवरफ्लो' कर दिया। शहर की सीसारमा नदी 10 फीट के वेग से बह रही है। वहीं शहर की फतहसागर झील भी छलकने से अब केवल ढाई फीट खाली है। मदार नहर व रानी रोड़ हवाला गांव से आ रही नहर से इसमें दो तरफा आवक हो रही है और बीते 36 घंटों में इसमें सवा दो फीट पानी की आवक हुई है।

जानकारी के अनुसार मुख्यालय से 15 किमी दूरी पर कोडियात रोड़ पर स्थित मोरवानिया पुलिया पानी के बहाव के साथ बह गई जिससे उभयेश्वर व अन्य गांवों का सम्पर्क टूट गया। वहीं ऋषभदेव में हुई 8 इंच (202 मिमी) बारिश से उदयपुर-अहमदाबाद हाईवे पर केसरियाजी के समीप हाइवे पर पांच-पांच फीट पानी जमा होने से यह छह घंटे जाम रहा। शाम तक जाम की स्थिति साफ हुई और यातायात सुचारू हुआ। इधर, शहर का सबसे बड़ा 32 फीट क्षमता वाला बड़ी तालाब छलकने के करीब है। इसमें तेजी से हो रही आवक के चलते यह देर रात छलक सकता है।

शहर में मानसून के दो माह बेरूखी के बितने के बाद 24 अगस्त से बारिश की शुरूआत हुई और इस बारिश ने बूस्टर डोज के रूप में झीलों में पानी की आवक शुरू करवाई। सीसारमा नदी के चलने के साथ पीछोला का जलस्तर लगातार बढ़ता रहा और अलर्ट की इस अनवरत बारिश ने मदार नहर को भी 28 अगस्त को चला दिया। हल्की आवक के साथ शुरू हुआ फतहसागर भरने का क्रम अब तेजी से फतह की ओर बढ़ रहा है। झील का जलस्तर शाम पांच बजे तक 11 फीट 6 इंच हो गया। इसमें बीते 36 घंटे में सवा दो फीट पानी आया है। यहीं आवक बनी रही तो यह झील शनिवार तक छलक सकती है। इधर कोडियात रोड़ स्थित मोरवानिया से बड़ी तालाब में तेजी से आवक हुई और सुबह साढ़े तीन फीट खाली बड़ी तालाब शाम तक छलकने से केवल दो इंच दूर रह गया। यह तालाब आज रात या गुरूवार सुबह तक छलक जाएगा। मोरवानिया तालाब की पुलियां टूटने से इसके आसपास के गांव उभयेश्वर आदि का सम्पर्क टूट गया।

पीछोला झील के छलकने से ओवरफ्लो हुए स्वरूपसागर पर दूसरे दिन भी चादर चल रही है। सीसारमा नदी का वेग कम होने के बाद देर रात हुई बारिश ने इसका वेग बुधवार सुबह फिर बढ़ा दिया और यह 13 फीट क्षमता से बहने लगी जो शाम तक 10 फीट तक बह रही है। इससे हो रही तेजी से आवक को स्वरूपसागर के चारों गेट को दो-दो फीट खोलकर आयड़ नदी में प्रवाहित कर उदयसागर झील में समाहित किया जा रहा है। उदयसागर के दोनो गेट 7-7 फीट खुले हुए है। प्रातः 8 बजे समाप्त बीते 24 घंटों में उदयपुर शहर में 43 मिमी, देवास स्टेज प्रथम पर सर्वाधिक 70 मिमी, मदार 47, नाई 40, वल्लभनगर में 22 व उदयसागर पर 18 मिमी बरसात रिकॉर्ड की गई।

माही डेम के गेट खोलने के बाद बेणेश्वर धाम टापू बना

सोमकमला आंबा बांध के गेट संख्या 1, 2, 12 और 13 को आधा-आधा इंच खोला, 15940 क्यूसेक पानी की निकासी जारी

संभाग का सबसे बड़ा सोमकमला आम्बा बांध के भराव क्षमता को पूर्ण होने पर गेट खोले गये।

डूंगरपुर, (निसं)। डूंगरपुर में तीन दिन से रुक-रुक कर बारिश का दौर चल रहा है। जिले के छोटे-बड़े बांध, तालाब छलकने लगे हैं। जिले के सबसे बड़े सोमकमला आंबा बांध के चार गेट खोल दिए गए हैं। बांसवाड़ा के माही डेम के गेट खोलने के बाद बेणेश्वर धाम फिर से टापू बन गया है। जिले के 10 बांधों पर पानी की चादर चल रही है।

जिले में मंगलवार रातभर रुक-रुक कर हल्की और रिमझिम बरसात का दौर चलता रहा। बुधवार सुबह के समय आसमान में बादल छाए रहे और हल्की रिमझिम बारिश हुई। वहीं बरसात के चलते जिले के सबसे बड़े सोमकमला आंबा बांध के मंगलवार शाम के समय दो गेट खोले गए थे, लेकिन डेम में पानी की आवक बढ़ने की वजह से देर रात को 2 गेट और खोल दिए गए। डेम के अभी गेट संख्या 1, 2, 12 और 13 को आधा-आधा इंच खोला गया है।

चारों गेट से 15 हजार 940 क्यूसेक पानी की निकासी हो रही है। डेम में सोम कागदर देव सोमनाथ और गोमती नदी से 10 हजार 138 क्यूसेक पानी की आवक चल रही है। जिले के मारगिया अमरपुरा, वात्रक आकरसोल का नाका, भादर सहित 10 डेम पर पानी की चादर चल रही है।

सोमकमला बांध के साथ ही बांसवाड़ा के माही डेम के भी 4 गेट खुले होने से प्रसिद्ध आस्था के केंद्र बेणेश्वर धाम टापू बन गया है। साबला, वालाई और बांसवाड़ा के तीनों पुलिया पर 3 से 5 फीट तक पानी बह रहा है। इससे धाम टापू बन गया है। पुजारी सहित कुछ व्यापारी फंसे हुए हैं, हालांकि उनके खाने पीने और ठहरने के तमाम इंतजाम धाम पर हैं। वहीं पुलिस और प्रशासन की ओर से धाम पर आने-जाने वाले लोगों को अलर्ट किया जा रहा है। बाढ़ नियंत्रण कक्ष के अनुसार बुधवार सुबह 8 बजे तक सर्वाधिक बारिश आसपुर में 2 इंच रिकॉर्ड की गई है। डूंगरपुर में 4, देवल में 6, फलोज में 6, कनबा में 10, सागवाड़ा और ओबरी में 3, गलियाकोट में 4, चिखली में 8, गणेशपुर में 33, बनकोड़ा में 2, साबला में 2, निठाउवा में 15, गामडी अहाड़ा में 8 एमएम बारिश रिकॉर्ड की गई है।

हिण्डौन में सवा चार इंच बारिश दर्ज, बाजार जलमग्न हुये

हिण्डौनसिटी में तेज बरसात से कई जगह पानी भर गया।

हिण्डौन सिटी, (निसं)। हिण्डौन शहर सहित आसपास के क्षेत्र में दो सप्ताह से अधिक समय तक चले झमाझम बारिश के दौर से जलमग्न हुए बाजारों में रौनक लौटने लगी थी, तो वहीं बुधवार शाम अचानक फिर से झमाझम बारिश का दौर शुरू हुआ। करीब एक घंटे तक चली इस बारिश से बाजार फिर से जलमग्न हो गए।

जानकारी के अनुसार डेढ़ घंटे तक हुई झमाझम बारिश में लगभग सवा चार इंच बारिश दर्ज हुई। इधर शहर के अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में भी भारी बारिश हुई, जिससे खेत लबालब हो गए। किसानों का कहना है कि गत एक महीने से चल रही इस बारिश के दौर से बाजरे की फसल पूरी तरह चौपट हो चुकी है। इस दौरान शहर के बाजारों में 4 से 5 फीट पानी भर गया। रास्ते ही नहीं सैकड़ों दुकानें भी लबालब हो गई और व्यापारियों को करोड़ों रुपए का नुकसान हुआ। 17 दिन तक कटरा बाजार, कंबलवाल गली, शीतला चौराहा, डेंप रोड, सर्राफा बाजार आदि क्षेत्र में दुकानें पूरी तरह बंद रही।

जोधपुर में मूसलाधार बारिश, कई गाड़ियां पानी में बही

जोधपुर में मूसलाधार बारिश से कई गाड़ियां पानी में बहती नजर आई।

- भारी बारिश के कारण जोधपुर रेलवे स्टेशन पर पानी भरा, जीआरपी थाने में भी पानी घुस गया

जोधपुर, (कासं)। प्रदेशभर में दक्षिण-पश्चिमी मानसून फिर से सक्रिय होने के साथ जोधपुर में जमकर बारिश हो रही है। औसत से कई ज्यादा बारिश इस बार में मानसून में हो चुकी है। अभी इसका प्रभाव सितंबर माह तक रहने के आसार है। मारवाड़ में भी इस बार मानसून काफी मेहरबान रहा है। लगातार बारिश से खेतों में पहले से भरा पानी सूखने का नाम नहीं ले रहा है। मारवाड़ के कई हिस्सों में मंगलवार की रात से ही बादल टूटकर बरस रहे है। बुधवार को जोधपुर शहर और ग्रामीण इलाकों में डेढ़ से दो घंटे तक जमकर बारिश हुई। इससे शहर की सड़कें तालाब और तलैया बन गई। सुबह के समय ड्यूटी पर जाने वाले लोग बारिश बंद होने का इंतजार करते रहे तो जो निकले वे बारिश के पानी में फंस गए।

जानकारी के अनुसार जोधपुर शहर के ड्रेनेज सिस्टम हर बार भारी बारिश में फेल हो जाता है, ऐसा ही आज भी हुआ। बनाड़ क्षेत्र के निवासी पहले से ही पानी में फंसे हुए और आज फिर जमकर हुई बारिश से वहां पर फिर पानी जमा हो गया है। शहर में आज शायद ही कोई ऐसा मार्ग बचा हो जहां पानी जमा ना हो। चहुंओर पानी ही पानी नजर आया। इस बार बाबा के दर्शनाथ आए हुए देशभर के हजारों जातरूओं को भी भारी परेशानी उठानी पड़ रही है। हालांकि जगह जगह भण्डारे होने से उन्हें थोड़ी राहत मिल रही है।

जोधपुर शहर और ग्रामीण क्षेत्रों में मंगलवार की रात्रि से हो रही कहीं-कहीं पर मूसलाधार बारिश के कारण जहां सड़कें तालाबों और बरसाती नालों का रूप ले चुकी है। शहर और ग्रामीण क्षेत्रों में कच्ची और पक्की आवासीय बस्तियों में बरसाती पानी भर गया। सुबह सालोड़ी क्षेत्र में हो रही भारी बरसात के कारण नदी नाले उफान पर हैं। निकटवर्ती चामुण्डा गांव की एक छात्रा सुबह परीक्षा के लिए बोलेरो में सवार होकर निकली मगर बोलेरो पानी में फंस गई और बहने लगी। तब आसपास के ग्रामीणों ने तुरंत बचाव और राहत कार्य कर बोलेरो में सवार युवती और उसके दो परिजनों को तो बाहर निकाल दिया लेकिन बोलेरो बहकर चली गई। वहीं हर बार की तरह आज भी बनाड़ रोड़ पर बरसाती नाले के उफान पर आ जाने से गणेश होटल से लेकर बनाड़ तक का रास्ता दरिया बन गया। पुराने शहर में नवचौकिया से लेकर जालोरी गेट और आड़ा बाजार से लेकर मेड़ती गेट और नागौरी गेट, सूरसागर, चांदणा भाखर, हाऊसिंग बोर्ड, बासनी सांगरिया और लूणी तथा झंवर क्षेत्र में भी बारिश से जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ। कई लोगों की गाड़ियां पानी में बह गई तो कईयों की गाड़ियां पानी में फंसने से बंद हो गई।

इधर भारी बारिश के कारण जोधपुर रेलवे स्टेशन पर भी पानी भरने के साथ राइकाबाग-जैसमलेर मार्ग पर तो पटरियों के नीचे से गिट्टी और मिट्टी बह जाने के कारण रेल यातायात को रोकना पड़ा जबकि सड़क यातायात भी बुरी तरह से प्रवाहित हो रखा है।

मंडल रेल प्रबंधक पंकज कुमार सिंह ने बताया कि 4 ट्रेनें रद्द की गई है व दो को आंशिक रद्द किया गया है। भारी बारिश से रेलवे ट्रैक के नीचे से मिट्टी गिट्टी हटने से ट्रेनें प्रभावित हुई हैं।

रेलवे स्टेशन पर स्थित जीआरपी थाने में भी करीब एक से डेढ फुट तक पानी भर जाने के कारण वहां रखे कम्प्यूटर और अन्य सामान भी पानी से बचाने के लिए पुलिस कर्मी जतन करते देखे गए। वहीं शहर के महात्मा गांधी, मथुरादास माथुर अस्पताल और उम्मेद अस्पताल क्षेत्र में भी पानी भर गया।

राजस्थान पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

Annual Rate Contract for Supply of Indigenous items की आपूर्ती हेतु दर संविदा
(ई -बोली आंमत्रण सूचना संख्या 01/2024-25 (क्रमांक 127 दिनांक 02.09.2024))

इस विश्वविद्यालय के अधीनस्थ ईकाइयों में Annual Rate Contract for Supply of Indigenous items की आपूर्ती हेतु दो कवर बिड (तकनीकी व वित्तीय बिड) से ऑनलाइन ई-बोली आमंत्रित की जाती है, जिसमें पंजीकृत फर्मो हेतु डी.एस.सी. के माध्यम से दिनांक 03.09.2024 से 23.09.2024 को सांय 5.00 बजे तक बोली प्रपत्र डाउनलोड कर अपलोड कर सकते है। UBN VAU2425GSRC00065 का विस्तृत विवरण स्टेट पोर्टल की वेबसाईट htttp//sppp.raj.nic.in विभाग की वेबसाईट www.rajuvas.org एवं www.eproc.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध है।

राज.संवाद/सी/24/4714 वित्त नियंत्रक

कार्यालय अधीक्षण अभियन्ता, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, नगर वृत (उत्तर), पानीपेच, जयपुर

क्रमांकः-अअ/नवृ (30)/2024-25/3076-3095 दिनांकः- 02.09.2024

निविदा सूचना

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से पंजीकृत संवेदको जो राजस्थान सरकार के नियमानुसार अधिकृत हो, से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेंट प्रक्रिया द्वारा ऑनलाइन निविदाऐं आमन्त्रित की जाती है। इच्छुक संवेदक ई-निविदा में भाग लेने हेतु अपने डिजिटल हस्ताक्षर (डीएससी) http://www.eproc.rajasthan.gov.in पर रजिस्टर्ड करवाना आवश्यक है। निविदा संबंधित विवरण निम्नलिखित वैबसाईट पर देख सकते है।
1. http://www.eproc.rajasthan.gov.in (Online) (2) http://sppp.rajasthan.gov.in

S.No.	NIT Number	UBN Code
1.	01/2024-25	PHE 2425 WSOB04266

(भवानी सिंह शेखावत)
अधीक्षण अभियंता जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग नगर वृत (उ.), जयपुर

DIPR/C/8196/2024

कार्यालय नगरपालिका नसीराबाद, जिला अजमेर (राज.)

E-mail : nasirabadnagarpalika@gmail.com PH. NO. 01491-297191

क्रमांक : न.पा.न./निर्माण/2024-25/1532 दिनांक : 02.09.2024

ई-निविदा सूचना संख्या (07/2024-25)
(NIB NUMBER - DLB2425A2238)

एतद्द्वारा यह है कि राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से निम्नलिखित कार्यों के लिए राजकीय विभाग में नियमानुसार उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में मोहरबन्द निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं। निविदा सम्बन्धित अधिक जानकारी वेबसाईट www.sppp.rajasthan.gov.in एवं www.eproc.rajasthan.gov.in पर भी उपलब्ध हैं एवं किसी भी कार्य दिवस को कार्यालय में आकर देखी जा सकती है।

निविदा के कुल कार्य - 08 (आठ)

UBN NO. :- 1. DLB2425WSRC07235, 2. DLB2425WSRC07236, 3. DLB2425WSRC07237, 4. DLB2425WSRC07239, 5. DLB2425WSRC07240, 6. DLB2425WSRC07241, 7. DLB2425WSRC07242, 8. DLB2425WSRC07244

राज.संवाद/सी/24/4681 अधिशाषी अधिकारी

राजस्थान स्टेट माईन्स एण्ड मिनरल्स लिमिटेड
(राजस्थान सरकार का उपक्रम) एसबीयू एण्ड पीसी- रॉक फॉस्फेट, झामरकोटड़ा, पी.ओ.- झामरकोटड़ा-313015, वाया एवं जिला- उदयपुर (राजस्थान), ई मेल :- krishanbihari.rsmml@rajasthan.gov.in

ई-निविदा सूचना दिनांक :- 03/09/2024

निविदा संख्या एवं दिनांक	कार्य का विवरण
Tender No. 12/24-25 दिनांक 31.08.2024 खोलने की दिनांक 25.09.2024 UBN No. MML2425SLOB00109	झामरकोटड़ा के लिए किराय पर एम्बुलेंस चालक सहित लेने हेतु अनुमानित राशि 15,00,000/- लाख, धरोहर राशि 30000/- निविदा प्रपत्र मूल्य 590/-, प्रोसेसिंग फीस 1000/- रू.

विस्तृत जानकारी के लिए हमारी वेबसाईट www.rsmm.com, www.sppp.rajasthan.gov.in अथवा (डीसीएमओ झामरकोटड़ा डिस्पेंसरी) से उपरोक्त पतें पर सम्पर्क करें।

राज.संवाद/सी/24/4708 उप महाप्रबन्धक (का.एवं प्रशा.)

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, खण्ड निवाई

क्रमांकः 1822-1831 दिनांकः 30.08.2024

अल्पकालीन निविदा सूचना संख्याः 01/2024-25 खण्ड निवाई

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से खण्ड निवाई में सडक/भवन निर्माण हेतु उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान एवं राज्य सरकार के अन्य विभागों तथा केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों / केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग / डाक एवं दूर संचार विभाग / रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के "ए" एवं "एए", "बी", "सी", "डी" श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से कार्यों हेतु ई-टेण्डरिंग के माध्यम से निर्धारित प्रपत्र में प्राप्त की जावेगी। निविदा से संबंधित विवरण बेवसाईट साईट www.dipronline.org व www.eproc.rajasthan.gov.in एवं www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।

NIB Code No.:-PWD2425A1359
UBN- 1. PWD2425WSOB04855, 2. PWD2425WSOB04857
3. PWD2425WSOB04858, 4. PWD2425WSOB04850

अधिशाषी अभियन्ता
सा.नि.वि. खण्ड निवाई

DIPR/C/8139/2024

राजस्थान सरकार
निदेशालय खान एवं भूविज्ञान विभाग, राजस्थान, उदयपुर

क्रमांक निदे/अ.ख.अ.नीलामी / निलामी (ERCC XIII)/2024/ई-07947

ई-नीलामी विज्ञिप्त संख्या-ERCC (XIII)2024)

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि राजस्थान अप्रधान खनिज रियायत नियमावली, 2017 के नियम-36 व 37 के तहत विभाग द्वारा इस विज्ञिप्त से अप्रधान खनिजों के प्रभावशील खनन पट्टों/क्वारी लाईसेसों व परमिट क्षेत्रों से निर्गमित होने वाले खनिजों पर अधिशुल्क / अधिक अधिशुल्क, परमिट शुल्क, प्रिमीयम शुल्क, डी.एम.एफ.टी. आर.एस.एम.ई.टी. एवं अन्य शुल्क संग्रहण के कुल 20 ठेके खुली ई-नीलामी के माध्यम से दिये जाने हेतु इलेक्ट्रोनिक प्लेटफार्म पर इच्छुक बोलीदाताओं से बोली आमंत्रित की जाती है। ठेकों से संबंधित विस्तृत विवरण जैसे-ठेका क्षेत्र, खनिज, अमानत राशि, बोली प्रस्तुत करने की तिथि व समय इत्यादि का विवरण व ई-ऑक्शन की प्रक्रिया एवं मुख्य शर्तें विभागीय वेबसाइट www.mines.rajasthan.gov.in एवं इलेक्ट्रोनिक प्लेटफार्म प्रदाता कंपनी MSTC की वेबसाइट www.mstcecommerce.com पर उपलब्ध है।

(भगवती प्रसाद) IAS
निदेशक

DIPR/C/8198/2024

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता
जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग, खण्ड फालना
E mail- eephedfalna@yahoo.com,ph-02938-233684

ई-निविदा सूचना 77/2024-25

राजस्थान के सरकार के राज्यपाल की ओर से निम्नलिखित कार्यों हेतु सार्वजनिक निर्माण विभाग, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग एवं अन्य मान्यता प्राप्त ठेकेदारों से मोहरबन्द निविदाऐं आमंत्रित की जाती है। निविदा दिनांक 25.09.2024 को मध्यान्ह पश्चात् 2.00 बजे तक ऑनलाईन बेची जाकर उसी दिनांक को मध्यान्ह पश चात् 2.00 बजे तक ऑनलाईन प्राप्त की जाकर उसी दिनांक को दोपहर 03:30 बजे तक उपस्थित ठेकेदारों या उनके अधिकृत प्रतिनिधियों के समक्ष ऑनलाईन खोली जाने की कार्यवाही की जायेगी। धरोहर राशि फालना में देय किसी भी बैंक के Demand Draft ई-ग्रास चालान के रूप में स्वीकार्य होगी। उक्त निविदा की नियम व शर्त http://sppp.rajasthan.gov.in एवं http.eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।
शर्त-1. निविदा को बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार निम्न हस्ताक्षरकर्ता के पास होगा।
2 निविदा बेचने एवं प्राप्ति के दिन यदि राजकीय अवकाश होगा तो निविदा दूसरे दिन बेची व प्राप्त की जायेगी।

NIT NO.	UBN NO.
77	PHE2425WSOB04200

(महेन्द्र सिंह राठौड)
अधिशाषी अभियन्ता
जन.स्वा.अभि.विभाग,खण्ड फालना

DIPR/C/8083/2024

उदयपुर विकास प्राधिकरण, राजस्थान

No. :- F-2(01)Acct/Contract/2024-25/99 - 101 Date : 03/09/2024

ई-निविदा सूचना संख्या : 27/2024-25

उदयपुर विकास प्राधिकरण, उदयपुर द्वारा निम्नलिखित कार्यो मय डिफेक्ट लाईबिलिटी अवधि के लिये जो कि निविदा प्रपत्र में अंकित है के लिये उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदको से निर्धारित प्रपत्र में ई-टेण्डरिंग के माध्यम से ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है :-

निविदा कार्यो की कुल लागत	:	रूपये 430.70 लाख (02 कार्य)
ऑनलाईन निविदा प्रपत्र डाउनलोड/अपलोड करने की अवधि	:	05.09.2024 को प्रातः 10.00 बजे से 24.09.2024 को सांयः 6.00 बजे तक
Online EMD, Tender Fee & Processing Fee जमा कराने की तिथी	:	05.09.2024 को प्रातः 10.00 बजे से 24.09.2024 को सांयः 6.00 बजे तक
ऑनलाईन निविदा खोलने की तिथी	:	25.09.2024 को प्रातः 11.00 बजे

विस्तृत विवरण वेबसाईट urban.rajasthan.gov.in/uitudaipur, www.eproc.rajasthan.gov.in व www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।
UBN No. : ITU2425WSOB00234, ITU2425WSOB00235

राज.संवाद/सी/24/4702 अधिशाषी अभियन्ता - प्रथम उदयपुर विकास प्राधिकरण

The Rajasthan Small Industries Corporation Ltd.
(A Government of Rajasthan Undertaking) Udyog Bhawan, Tilak Marg, C-Scheme, Jaipur-302 005
Phone: 0141-2227079, Fax: 0141-2227257 Website : industries.rajasthan.gov.in/rsicl
E-mail : rajsico@rajasthan.gov.in CIN- U91110RJ1961SGC001118

ई-निविदा सूचना 12/2024-25
Corrigendum

निगम द्वारा ई-पोर्टल पर राजस्थली दिल्ली, कोलकाता एवं उदयपुर के QST काउन्टरों हेतु ई-निविदा क्रमांक 12/2024-25 दिनांक 13.08.2024 प्रकाशित की गई थी। इस क्रम में समाचार पत्रों में जारी निविदा सूचना में किन्ही कारणवश राजस्थली दिल्ली के राजस्थानी पेटिंग काउन्टर का नाम प्रकाशन होने से रह गया। अतः समस्त को सूचित करते हुए पूर्व में प्रकाशित निविदा सूचना एवं निविदा सूचनाओं में आंशिक संशोधन करते हुए केवल पेटिग काउन्टर UBN RSI2425SLOB00025 की निविदा प्राप्त करने की तिथि 10.09.2024 अपरान्ह 1.00 बजे तक बढाई जाती हैं जो उसी दिन अपरान्ह 3.00 बजे खोली जावेगी। इसके नमूनों की जांच दिनांक 09.09.2024 के स्थान पर दिनांक 12.09.2024 को की जावेगी। अन्य शर्ते पूर्वानुसार रखी जावेंगी।

पूर्ण जानकारी हेतु वैबसाइट eproc.rajasthan.gov.in; sppp.rajasthan.gov.in एवं industries.rajasthan.gov.in/rsicl देखे।

राज.संवाद/सी/24/4739 प्रबन्ध निदेशक

जोधपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड
कॉरपोरेट आइडेन्टीफिकेशन नम्बर (सीन)-यू40109आरजे2000एसजीसी016483
पंजीकृत कार्यालय : न्यू पॉवर हाउस,जोधपुर-342003, फोन न. :0291-2742264 फैक्स न. : 0291-2742064
ईमेल :- seciviljdvvnl@gmail.com, वेबसाईट :- http://energy.rajasthan.gov.in/jdvvnl

ई-निविदा सख्या 07/2024-25

केन्द्र/राज्य सरकार के विभागों में 'ए' व 'एए' श्रेणी तथा जो.वि.वि.नि.लि. के उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत, अनुभवी, वस्तु एवं सेवाकर (GST) विभाग से पंजीकृत निविदाकारों से अधिशाषी अभियन्ता {सिविल} जोधपुर डिस्कॉम, जोधपुर; 9413359193/बाड़मेर; 9413359455 के अधीन विभिन्न सिविल निर्माण कार्यो के लिए ई-प्रोक्यरमेंट प्रक्रिया से ऑनलाईन निविदाएँ आमंत्रित की जाती है। कार्य का विवरण, अनुमानित लागत, निविदा शुल्क, प्रकिया शुल्क, अमानत राशि, निविदा खोलने की तिथि व सामान्य अनुबन्ध की शर्ते आदि समस्त विवरण, वेबसाईट http://energy.rajasthan.gov.in/jdvvnl एवं http://sppp.raj.gov.in व http://eproc.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध है। भविष्य में संशोधन/अवधि विस्तार, यदि कोई हो तो, उसकी सूचना http://energy.rajasthan.gov.in/jdvvnl एवं http://sppp.raj.gov.in व http://eproc.rajasthan.gov.in पर प्रकाशित की जावेगी।

UBN No. : JVV2425WSOB00539, JVV2425WSOB00538, JVV2425WSOB00541, JVV2425WSOB00542, JVV2425WSOB00537, JVV2425WSOB00540

राज.संवाद/सी/24/4737 अधीक्षण अभियंता {सिविल} जोधपुर डिस्कॉम, जोधपुर

बिजली संबंधी शिकायतों के लिए टोल फ्री नम्बर 1800 180 6045

कार्यालय अधीक्षण अभियंता,
जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, वृत-जालोर
Tel: 02973-223548, Email:secircle.jal.phed@rajasthan.gov.in/ sephedjalore@yahoo.com

क्रमांकः- वृत/जालोर / निविदा/ / 2024-25/1543 दिनांकः-29/08/2024

बिड आमंत्रण सूचना (NIB) संख्या 21-23/2024-25

राजस्थान के राज्यपाल की ओर से निम्नलिखित कार्यों हेतु लोक निर्माण और वित्तीय नियम के पार्ट-4 नियम 334 (ए) (iii) के तहत रू. 150.00 लाख तक की निविदाओं हेतु केवल जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग में पंजीकृत एवं इससे अधिक लागत की निविदाओं हेतु जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग में पंजीकृत निविदादाताओं हेतु नियमानुसार छूट के साथ एवं केन्द्र/राज्य सरकार के अधिकृत विभागों / संगठनों, केन्द्रिय लोक निर्माण विभाग, रेल, डाक, दूर संचार विभागों मे उपयुक्त समकक्ष श्रेणी में पंजीकृत संवेदको से पूर्ण धरोहर राशि के साथ ई-टेण्डरिंग प्रक्रिया द्वारा निम्न ऑनलाईन बिड आमंत्रित की जाती है:-

बिड संख्या	NIB No.PHE2425A1922	अनुमानित लागत (लाखों में)	धरोहर राशि 2 प्रतिशत	बिड शुल्क (रूपये)	ई-प्रक्रिया शुल्क	कार्य पूर्ण करने की अवधि
21/ 2024-25	UBIN No.......................... PHE2425WSRC04208	120.00	240000/-	3000/-	2000/-	12 माह
22/ 2024-25	PHE2425WSRC04209	120.00	240000/-	3000/-	2000/-	12 माह
23/ 2024-25	PHE2425WSRC04211	120.00	240000/-	3000/-	2000/-	12 माह
ऑनलाईन बिड उपलब्ध होने की तिथि				02.09.2024		
ऑनलाईन बिड डाउनलोड/अपलोड करने की अन्तिम तिथि				16.09.2024 को 6.00 पी.एम.		
ऑनलाईन बिड खोलने की तिथि				17.09.2024 को 2.00 पी.एम.		

बिड से संबंधित समस्त विवरण वेबसाईट www.dipronline.org, sppp.raj.nic.in व www.eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।

(रमेश चन्द मीना)
अधीक्षण अभियंता
जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग, वृत्त-जालोर

DIPR/C/8104/2024

चैनपुरा स्लॉटर हाऊस से हो रही जयपुर में अवैध मांस की बिक्री

विद्याधर नगर में 1070 किलो अवैध मांस से भरी गाड़ी पकड़ी तो पोल खुली

जयपुर । राजधानी जयपुर में मुर्गे, बकरे समेत अन्य पशुओं से मीट बनाने के लिए निर्धारित किए नगर निगम के चैनपुरा स्लॉटर हाउस की कार्यशैली पर सवाल खड़े हो रहे है। यहां बिना पशु चिकित्सा अधिकारी की जांच किए जानवरों की स्लॉटरिंग की जा रही है और उनके मीट को बाजार की दुकानों, होटलों में सप्लाई किया जा रहा है। बुधवार को विद्याधर नगर में पशु प्रबंधन शाखा की विजीलेंस टीम ने एक गाड़ी पकड़ी और उसमें 96 बकरों के 1070 किलोग्राम मीट को जब्त किया तो इसका खुलासा हुआ।

जयपुर ग्रेटर निगम के पशु चिकित्सक डॉ. हरेन्द्र सिंह के नेतृत्व में बनी टीम ने विद्याधर नगर में जब एक ट्रक को रोका तो उसमें 90 बकरों का कटा हुआ मांस मिला। इसकी जांच की तो उसे देखकर ऐसा लग रहा था मानो मीट 2-3 दिन पहले काटा गया हो। इस पर जब टीम ने वाहन चालक के दस्तावेजों की जांच की तो 90 बकरों की पर्ची चैनपुरा स्लाटर हाउस की मिली। जब वाहन चालकों से डॉक्टर का सर्टिफिकेट मांगा गया तो उनके पास ये उपलब्ध नहीं था। इसके बाद विद्याधर नगर जोन ऑफिस जाकर पूरे मीट का विधिवत कैमिकल से प्रोसेस करके उसे नष्ट करवाया और डंपिंग के लिए वापस चैनपुरा स्लाटर हाउस भिजवाया।

डॉक्टर चिराणा ने बताया कि स्लाटर हाउस से कोई भी मीट जब बाजार में बेचने के लिए निकाला जाता है तो उससे पहले वहां मौजूद पशु चिकित्सक उसका सर्टिफिकेट जारी करता है कि वह मीट इंसानों, जानवरों के खाने लायक है या नहीं? क्योंकि बकरों या अन्य पशुओं की स्लाटरिंग से पहले उसकी जांच वहीं डॉक्टर करता है। वह देखता है कि बकरा बीमार तो नहीं है या पहले से मरा हुआ तो नहीं है। सूत्रों के मुताबिक वर्तमान में चैनपुरा स्लाटर हाउस पर एक भी पशु चिकित्सक तैनात नहीं है। वहां एक सहायक पशुधन प्रबंधक और रेवेन्यू ऑफिसर ने ही पूरा काम संभाल रखा है। जबकि निगम प्रशासन को वहां मीट और जनवरों की जांच के लिए एक डॉक्टर की तैनाती करनी पड़ती है।

- **निगम टीम ने वाहन चालक से दस्तावेज मांगे तो 90 बकरों की पर्ची चैनपुरा स्लाटर हाउस की मिली, लेकिन डॉक्टर का सर्टिफिकेट नहीं मिला। इसके बाद पूरे मीट को कैमिकल से नष्ट कराया गया।**
- **गत 6 दिन की कार्रवाई में ग्रेटर निगम की टीम ने शहर में 1830 किलो अवैध मांस जब्त कर 6.19 लाख रु. कैरिंग चार्ज वसूला। इसके साथ ही 22 से अधिक अवैध दुकान व थड़ियों को सीज करके 16 थड़ियों को ध्वस्त किया।**

ग्रेटर निगम की टीम ने बुधवार को विद्याधर नगर क्षेत्र में कार्रवाई कर 1.71 लाख रूपये से अधिक का चालान किया। इस दौरान मांस की 5 अवैध दुकानों को सीज किया साथ ही 105 जिंदा मुर्गो, फिश 1 पेंटी, जिन्दा फिश 5 किलो जब्त की गई। अब तक लालरपुरा, गिरधारीपुरा, बजरी मण्डी 200 फीट बाईपास, जगतपुरा, झालाना, जगतपुरा कच्ची बस्ती, प्रताप नगर एनआरआई कॉलोनी, इंडिया गेट, करतारपुरा, कठपुतली नगर, दुर्गोपुरा, गोपालपुरा बजरी मण्डी, नन्दपुरी बाईस गोदाम, मांग्यावास, मानसरोवर, थड़ी मार्केट, वरूण पथ, भारत माता चौक, गजसिंहपुरा, मालवीय नगर, झालाना, ज्योति नगर, त्रिवेणी नगर पुलिया, अग्रवाल फार्म कार्यवाही की जा चुकी है।

गत 28 अगस्त से चल रहे अभियान के तहत अब तक 6 दिन में 6.19 लाख रु. कैरिंग चार्ज वसूल किया जा चुका है तथा 1830 किलो से अधिक अवैध मांस जब्त किया जा चुका है। इसके साथ ही 22 से अधिक दुकान व थड़ियों को सीज करके 16 अवैध थड़ियों को मौके पर ही ध्वस्त किया जा चुका है। इसके साथ ही 660 जिंदा मुर्गो एवं 7 बकरो को जब्त किया गया।

अवैध निर्माण चिन्हित करके कार्रवाई करें उपायुक्त : सुराणा

जयपुर (कासं)। नगर निगम हैरिटेज आयुक्त अभिषेक सुराणा ने बुधवार को अवैध निर्माण को लेकर सभी जोन अधिकारियों को सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिए है।

आयुक्त सुराणा के निर्देश के बाद बुधवार को हैरिटेज निगम के सभी जोन उपायुक्त, जोन अधिकारी, लैंड शाखा अधिकारी और सतर्कता शाखा के साथ बैठक की। बैठक में आयुक्त सुराणा ने

- **प्रत्येक बुधवार को सभी जोन में अवैध निर्माणों पर की गई कार्रवाई के बारे में ली जायेगी जानकारी**
- **बारिश से जर्जर हुए मकानों को भी ध्वस्त करने के निर्देश**

हैरिटेज निगम क्षेत्र में अवैध निर्माण को चिन्हित कर नियमानुसार कार्रवाई करने के निर्देश दिए। निगम आयुक्त अभिषेक सुराणा ने बताया कि सभी जोन में अवैध निर्माण के खिलाफ कार्रवाई के संबंध में प्रत्येक बुधवार को रिपोर्ट ली जाएगी। वहीं मुख्यालय से रोजाना अवैध निर्माण पर कार्रवाई का निरीक्षण किया जाएगा। उन्होंने बारिश से जर्जर हुए मकानों को भी ध्वस्त करने के निर्देश दिए है।

परिवहन निरीक्षक के जयपुर और सिरोही में 6 ठिकानों पर ए.सी.बी. की छापेमारी

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर। ए.सी.बी. मुख्यालय के निर्देश पर भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (ए.सी.बी.) की विभिन्न टीमों ने जयपुर में कार्यवाही करते हुये सिरोही जिला परिवहन में कार्यरत मोटर वाहन निरीक्षक सुरेन्द्र सिंह चौहान के विरूद्ध दर्ज आय से अधिक सम्पत्ति अर्जित करने का मामला दर्ज किया। ए.सी.बी. ने आरोपी के जयपुर और सिरोही स्थित 6 ठिकानों पर छापेमारी कर तलाशी अभियान चलाया।

एसीबी महानिदेशक डॉ. रवि प्रकाश मेहरड़ा ने बताया कि एसीबी मुख्यालय को गोपनीय शिकायत प्राप्त हुई थी कि सुरेन्द्र सिंह चौहान, मोटर वाहन निरीक्षक, जिला परिवहन कार्यालय, सिरोही द्वारा अपने एवं अपने परिजनों के नाम से भ्रष्टाचार के साधनों द्वारा अपनी वैध आय से अधिक सम्पत्तियाँ अर्जित की गई है, जिनकी बाजार कीमत करोड़ों रुपयों से अधिक है।

इस शिकायत का ए.सी.बी. की इन्टेजिलेन्स शाखा द्वारा शिकायत का गोपनीय सत्यापन किया जाकर आय से अधिक सम्पत्तियां अर्जित का मामला बनना पाये जाने पर प्रकरण दर्ज किया गया। एसीबी जयपुर के उप महानिरीक्षक पुलिस रणधीर सिंह के सुपरवीजन में

- **आरोपी के आवास की तलाशी के दौरान एसीबी को मालपुरा टोंक में 5 बीघा जमीन, अंबाबाड़ी शॉपिंग सेंटर में 5 मंजिला कॉम्पलेक्स, 30 किसान विकास पत्र, एफडीआर, 5.50 लाख के गहने, एक बैंक लॉकर व 9 बैंक खाते मिले हैं।**
- **ए.सी.बी ने परिवहन निरीक्षक सुरेन्द्र सिंह चौहान के खिलाफ आय से अधिक सम्पत्ति अर्जित करने का मामला दर्ज कर लिया है, अब कार्रवाई जारी है।**

ए.सी.बी. की विशेष अनुसंधान विंग (एस.आई.डब्ल्यू.) इकाई, जयपुर के उप अधीक्षक पुलिस सुरेन्द्र पंचौली, अनुसंधान अधिकारी के नेतृत्व में सक्षम न्यायालय से तलाशी वारंट प्राप्त करके बुधवार अलसुबह आरोपी के जयपुर और सिरोही स्थित 6 विभिन्न ठिकानों पर तलाशी की कार्रवाई की गई।

आरोपी सुरेन्द्र सिंह चौहान के जयपुर स्थित आवास की तलाशी में 5 आवासीय-व्यावसायिक भूखण्डों के दस्तावेज (जिनमें मालपुरा टोंक में करीब 48 लाख रुपये कीमत की 8 बीघा कृषि भूमि, अम्बाबाड़ी शॉपिंग सेंटर में पाँच मंजिला व्यावसायिक परिसर प्रमुख हैं), करीब 6 लाख रुपये मूल्य के 30 किसान विकास पत्र, एफडीआर, लगभग 5.50 लाख रुपये कीमत के सोने चांदी के आभूषण एवं वाहन मिले हैं। इसके अतिरिक्त 1 बैंक लॉकर एवं 9 बैंक खाते तथा विदेश यात्राओं से संबंधित दस्तावेजात भी मिले हैं।

एसीबी के प्राथमिक आंकलन, प्रथम सूचना रिपोर्ट और अब तक मिले दस्तावेजों के अनुसार आरोपी सुरेन्द्र सिंह चौहान द्वारा करोड़ों रुपये की बाजार कीमत की अनेक परिसम्पत्तियां अर्जित करने का अनुमान है, जो उनकी वैध आय से आनुपातिक रूप से कहीं अधिक है। एसीबी की अतिरिक्त महानिदेशक स्मिता श्रीवास्तव के निर्देशन में ए.सी.बी. की विभिन्न टीमों द्वारा आरोपी के ठिकानों पर तलाशी अभियान जारी है। मामले में ए.सी.बी द्वारा आय से अधिक सम्पत्ति अर्जित करने के प्रकरण में अग्रिम अनुसंधान किया जावेगा।

मुहाना थाने का कांस्टेबल पांच हजार रु. रिश्वत लेते गिरफ्तार

जयपुर। ए.सी.बी. मुख्यालय के निर्देश पर ए.सी.बी. की जयपुर नगर-चतुर्थ इकाई ने बुधवार देर रात कार्यवाही करते हुये मुहाना थाने के कांस्टेबल वी.पी. सिंह को परिवादी से 5 हजार रुपये रिश्वत राशि लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया है।

एसीबी महानिदेशक डॉ. रवि प्रकाश मेहरड़ा ने बताया कि ए.सी. बी. की जयपुर नगर चतुर्थ इकाई को परिवादी द्वारा शिकायत दी गई कि उसके विरूद्ध दर्ज परिवाद में समझौता कराने एवं उनके खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं करने की एवज में आरोपी वीपी सिंह कानिस्टेबल, पुलिस थाना मुहाना, जयपुर आयुक्तालय द्वारा 5 हजार रुपये रिश्वत की मांग कर परेशान किया जा रहा है। जिस पर एसीबी जयपुर के उप महानिरीक्षक पुलिस डॉ. रवि के सुपरवीजन में एसीबी की जयपुर नगर-चतुर्थ इकाई के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक बलराम मीणा के नेतृत्व में शिकायत का सत्यापन किया जाकर बुधवार को पुलिस निरीक्षक रजनी मीणा

कांस्टेबल वी.पी. सिंह

और उनकी टीम ने ट्रेप की कार्रवाई करते हुए आरोपी कांस्टेबल को 5 हजार रुपये रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया। एसीबी की अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस स्मिता श्रीवास्तव के निर्देशन में आरोपी से पूछताछ तथा कार्यवाही जारी है। एसीबी द्वारा मामले में भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के अन्तर्गत प्रकरण दर्ज कर अग्रिम अनुसंधान किया जायेगा।

सार-समाचार

हनुमान चालीसा पाठ का पोस्टर जारी

जयपुर । बदनपुर क्षेत्र धार्मिक स्थल गणेश मंदिर में 29 सितंबर को होने वाली विशाल हनुमान चालीसा के कार्यक्रम के पोस्टर का विमोचन हवा महल विधायक स्वामी बाल मुकुंदाचार्य, बदनपुर गणेश मंदिर के महंत राजा रामशरण महाराज, पंचमुखी हनुमान मंदिर के महंत राजाराम दास ने किया। विधायक बालमुकुंद आचार्य ने सभी सनातनियों से आव्हान किया कि ज्यादा से ज्यादा संख्या में पहुंचकर हनुमान चालीसा पाठ को सफल बनाएं। कार्यक्रम संयोजक राजेश गुप्ता ने बताया भक्तों की टोलियां बनाकर घर-घर जाकर पीले चावल देकर सभी को उनको पाठ में आने का आव्हान किया जाएगा। इस अवसर पर बदनपुर व्यापार मंडल के अध्यक्ष सोहनलाल प्रजापति, नितिन गुप्ता, सुभाष शर्मा, मोहन शर्मा, शिवकुमार बजाज, लक्ष्मण मीणा, चिमन, अजय जैन, गिरिराज वशिष्ठ, कमलेश, किशन दुवरिया, विजय चौधरी और राकेश खंडेलवाल मौजूद थे।

विष्णु टांक 100 दिनों में दौड़े 2537 कि.मी.

जयपुर । हर इंसान के लिए अपना स्वास्थ्य फिट रखना सबसे अहम है। अपने आप को तो फिट रखे ही, लेकिन सब को मोटिवेट करना भी अहम है। इसी उद्देश्य के साथ 100 दिन के "रन चेलेंज" को वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर विष्णु टांक ने पूरा किया। टांक ने 100 दिन का चैलेंज लेते हुए रोजाना दौड़ लगाई। वे एक दिन में 25 किलोमीटर दौड़े और कुल 100 दिन में 2537 किलोमीटर दौड़ लगाई। इस दौड़ के साथ विष्णु टांक जयपुर में प्रथम रैंक और इंडिया में 12 नंबर पर रहे। टांक इस तरह की कई मैराथन में भाग ले चुके है। टांक ने कहा कि 100 किलोमीटर रन मेरी आखरी दौड़ थी। अब वह प्रत्येक दौड़ में हिस्सा लेंगे, लेकिन चैलेंज में पार्ट नहीं करेंगे। वे लोगों को दौड़ के प्रति जागरूक करेंगे। उन्होंने कहा कि अगला लक्ष्य अब सिर्फ मैराथन पर होगा। जयपुर की भागदौड़ की लाइफ में अपने स्वास्थ्य के लिए समय निकालना बहुत बड़ी बात है।

200 से ज्यादा वरिष्ठजनों का स्वागत

जयपुर । शहर के वार्ड -78 में भाजपा खेल प्रकोष्ठ और कल्पतरु शिक्षा समिति के सहयोग से वरिष्ठ जन सम्मान समारोह आयोजित हुआ। समारोह में वार्ड में निवासरत 65 वर्ष से अधिक आयु वाले 200 वरिष्ठजनों का सम्मान माला, शॉल, गीता एवं प्रशस्ति पत्र देकर किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि अयोध्या के संत उमाशंकर महाराज रहे। कार्यक्रम संयोजक एवं भाजपा खेल प्रकोष्ठ के जिला संयोजक सुनील गौड़ ने बताया कार्यक्रम में तीन बार लगातार एशियन गेम्स में भारत का प्रतिनिधित्व कर गोल्ड मैडल जीतने वाले ओलम्पियन एवं द्रोणाचार्य अवार्डी श्रीराम सिंह शेखावत, वार्ड पार्षद रवि उपध्याय, भाजापा के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता राधेश्याम उपध्याय ने विशिष्ट अतिथि एवं वार्ड संयोजक राजकुमार सैनी, भाजपा कार्यकर्त्ता मदन कुमावत, नवीन भंडारी, सत्यप्रकाश तिवाड़ी, याजवेंद्र यादव, मनोज कुमावत ने विशेष आमंत्रित अतिथि के रूप में शिरकत की। कार्यक्रम के सफल आयोजन में महिला शक्ति का विशेष योगदान रहा। जिसमें पायल, वंदना, अंकिता, रीना, क्षिप्रा, शिवानी, मनस्वी, शिवा, कीर्ति, पूनम, संदीप, ईशा,समृद्धि, भूमी, सलोनी मुख्य भूमिका में रहीं।

"थर्टी डेज़ इन सितंबर" का मंचन कल

जयपुर । राजस्थान इंटरनेशनल सेन्टर में 6 सितम्बर को शाम 7 बजे महेश दत्तानी द्वारा लिखित "थर्टी डेज इन सितंबर" नाटक का मंचन किया जायेगा। इस नाटक में एक परिवार के भीतर प्यार और विश्वासघात के विषयों को दर्शाया गया है। इसमें बाल यौन शोषण के संवेदनशील मुद्दे और पीड़िता के जीवन और व्यक्तित्व पर होने वाले प्रभावों को प्रदर्शित किया गया है। नाटक में मुख्य किरदार में माला की दुर्दशा को विशिष्ट रूप से चित्रित किया गया है, जो चुप्पी और सामाजिक उदासीनता के माहौल से घिरी हुई है और आधुनिकता के बाहरी दिखावे के बावजूद आन्तरिक संघर्षों से जूझती रहती है। उसकी माँ शांता अपने अंतर्द्वंद्व से जूझती रहती है एवं बेटी की कुशल कामना के लिए प्रार्थना में लीन रहती है। कहानी में विनय और दीपक नाम के किरदार जिनका विरोधाभासी व्यक्तित्व है, माला को सहारा देते है। कहानी में भावनात्मक जुड़ाव और स्वार्थी उद्देश्यों के साथ "थर्टी डेज इन सितंबर" की कहानी वास्तविकता की पहचान करने के लिए आगे बढ़ती है।

कनक घाटी मंदिर में भी धूमधाम से मनाया जायेगा गणेश चतुर्थी उत्सव

जयपुर । ठिकाना मंदिर श्री गोविंद के मातहत आमेर रोड कनक घाटी स्थित मंदिर श्री गणेश जी महाराज में गणेश चतुर्थी महोत्सव सात सितंबर को धूमधाम से मनाया जाएगा। गोविंद देवजी मंदिर के सेवाधिकारी मानस गोस्वामी ने बताया कि मंदिर सुबह पांच से रात्रि नौ बजे तक दर्शनों के लिए खुला रहेगा। इस मौके पर मंदिर को फूलों और रोशनी से सजाया जाएगा। गणेश जी महाराज का पंचामृत अभिषेक कर नवीन पोशाक धारण कराई जाएगी। विशेष श्रृंगार कर मोदक का भोग लगाया जाएगा। उल्लेखनीय है कि यह मंदिर जयपुर को बसाने से पूर्व रक्षपाल गणेशजी के रूप में प्रसिद्ध है। पहले आमेर जाने का रास्ता घाटी से न होकर इस मंदिर के पास से था। आमेर से जयपुर जाने के मार्ग में यही मंदिर था। यहां गणेशजी के साथ हनुमान जी भी विराजित है। इसी मंदिर की तर्ज पर तत्कालीन जयपुर नरेश ने जयपुर के सभी प्रमुख द्वारों पर गणेश जी और हनुमान जी मूर्तियां स्थापित करवाई।

'लापता युवक को तलाशने में विशेषज्ञों की मदद लेवें'

जयपुर । शास्त्री नगर क्षेत्र से 3 दिन पहले लापता हुए युवक राहुल की तलाश के लिए ब्राह्मण समाज राजस्थान ने विशेषज्ञों की मदद लिए जाने की मांग की है। ब्राह्मण समाज राजस्थान के प्रदेश अध्यक्ष अंबिका प्रकाश पाठक ने कहा है कि पुलिस को सूचना देने के बाद भी समय पर दोनों युवको की तलाश शुरू नहीं करना पुलिस की कार्यप्रणाली पर सवालिया निशान खडे कर रहा है। ऐसे में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा इस मामले में दखल देकर आईपीएस अधिकारी को इसकी जांच दे और लापता युवक को तलाश करावें। प्रदेशाध्यक्ष अंबिका प्रकाश पाठक ने इस मामले में बुधवार को अंबाबाडी स्थित उप कार्यालय में ब्राह्मण समाज राजस्थान की बैठक को संबोधित कर रहे थे। प्रदेशाध्यक्ष पाठक ने कहा कि शास्त्री नगर थाना क्षेत्र के पर्वतिया कॉलोनी निवासी सुरेश चंद शर्मा का बडा बेटा राहुल (21) और छोटा बेटा आशीष (19) रविवार को नाहरगढ़ की पहाड़ियों में स्थित चरण मंदिर दर्शन के लिए पैदल निकले थे। इसके बाद दोपहर को दोनों भाईयों ने फोन कर परिवारजनों को रास्ता भटकने की सूचना दी और परिवारजनों ने तुरन्त पुलिस को इसकी सूचना दी। इसके बाद भी लगभग पांच घंटे तक पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की और जब ब्राह्मण समाज के लोगों ने थाना घेरा तो पुलिस हरकत में आई और सर्च अभियान शुरू किया।

नाहरगढ़ की पहाड़ियों में लापता राहुल का 4 दिन बाद भी सुराग नहीं

जयपुर । राजधानी जयपुर के शास्त्री नगर क्षेत्र से नाहरगढ़ घूमने गए दो सगे भाईयों में आशीष का शव पुलिस को मिल चुका है, जबकि दूसरे युवक राहुल का 4 दिन बाद भी अब तक कोई सुराग नहीं लग पाया है। पुलिस और

- **डी.सी.पी. नॉर्थ राशि डोगरा डूडी के नेतृत्व में एसआईटी करेगी इस मामले की विस्तृत जांच**

एस.डी.आर.एफ. की टीमें लगातार युवक को तलाश रही है।

ऐसे में अब एडिशनल पुलिस कमिश्नर कैलाश विश्नोई ने इस प्रकरण की जांच के लिए एस.आई.टी. का गठन किया है। डी.सी.पी. नॉर्थ राशि डोगरा डूडी के नेतृत्व में एस.आई.टी. इस मामले की जांच करेगी। बुधवार को पुलिस कमिश्नर बीजू जॉर्ज जोसफ भी नाहरगढ़ पहुंचे और लापता युवक की तलाश में चल रहे ऑपरेशन का जायजा लिया।

जयकारों के साथ नगर परिक्रमा

जयपुर । छोटी चौपड़ स्थित सीताराम मंदिर से बुधवार सुबह जयकारों के साथ सीताराम जी की 264 वीं नगर परिक्रमा शुरू निकाली गई। पंचरंगी ध्वज के नीचे सैंकड़ों पदयात्री सीताराम जी महाराज के जयकारों के साथ चारदीवारी के विभिन्न मंदिरों के दर्शनों के लिए रवाना हुए। मंदिर महंत नंदकिशोर शर्मा ने चन्द्रमोहन बटवाडा से ध्वज पूजन करवाया। परिक्रमा में करीब 250 श्रद्धालु शामिल हुए। लोगों ने श्रद्धालुओं पर पुष्प वर्षा की। परिक्रमा त्रिपोलिया गेट, बड़ी चौपड़, जौहरी बाजार, सांगानेरी गेट, एमआई रोड, धूलेश्वर महादेव, कांति चंद रोड, पंचमुखी हनुमान मंदिर, गढ़ गणेश, नहर के गणेशजी, बद्रीनाथ की डूंगरी, लाल डूंगरी होते हुए गलता पहुंची। इन मंदिरों में श्रद्धालुओं ने ठाकुरजी को भजनों से गुणगान किया। गलता में भक्तों ने स्नान कर विश्राम किया। उसके बाद परिक्रमा घाट के बालाजी, सिसोदिया रानी गार्डन, ट्रांसपोर्ट नगर होते हुए सांगानेरी गेट पहुंची।

हनीट्रैप में फंसाने की धमकी देकर लूटने वाली महिला की जमानत याचिका खारिज

जयपुर (कासं)। हनीट्रैप में फंसाकर लोगों से अवैध वसूली करने के मामले में गिरफ्तार महिला की जमानत याचिका अदालत ने खारिज कर दी है। न्यायालय अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट क्रम 1 के न्यायाधीश कृष्णा राकेश कांवत ने महिला के कृत्य को अपराधिक चरित्र का मामला मानते हुए जमानत देने से इनकार कर दिया।

ज्ञात रहे कि 22 अगस्त को परिवादी युवक ने आरोपी महिला त्रिशा राठौड़ उर्फ त्रिशा खान के खिलाफ मामला दर्ज कराया था। अदालत में परिवादी युवक की ओर से आरोपी महिला की जमानत याचिका का विरोध करते हुए अधिवक्ता भानु प्रकाश शर्मा, देवेन्द्र कुमार, हर्ष गोस्वामी और भावेश गोस्वामी ने पैरवी की। उन्होंने अदालत को बताया कि आरोपी महिला त्रिशा खान उर्फ त्रिशा राठौड़, "कार में लोगों से लिफ्ट लेकर लोगों को झूठे मुकदमों में फंसाने की धमकी देकर हजारों रुपये ऐंठती है। ऐसे झूठे मुकदमों से वास्तविक पीड़िताओं को भी न्याय नहीं मिल पाता।"

अधिवक्ताओं ने बताया कि आरोपी त्रिशा के खिलाफ जयपुर के विभिन्न थानों मालवीय नगर, जवाहर नगर, आदर्श नगर, अशोक नगर, सांगानेर, बनीपार्क, झोटवाड़ा, मानसरोवर, जवाहर सर्किल और वैशाली नगर में 13 अन्य मुकदमें दर्ज हैं।

जे.डी.ए. विभिन्न स्थानों पर बांट रहा आमजन को पौधे

जयपुर। जयपुर विकास प्राधिकरण द्वारा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के "एक पेड मां के नाम" एवं मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के "हरियालो राजस्थान" अभियान के तहत आमजन को पौधे वितरित किए जा रहे है। आयुक्त मंजू राजपाल ने बताया कि जेडीए द्वारा 10 फीट ऊंचाई के नीम, शीशम, करंज, अशोक, जकरण्डा, काइजेलिया पिन्नाटा, जामुन, आम, कचनार, अर्जुन, मोलश्री, बीलपत्र, सिरस, गुलमोहर के फलदार, फूलदार व छायादार पौधें आमजन को रियायती दर 50 रू. प्रति पौधा प्रति आई.डी. पर पांच पौधें सैन्ट्रल पार्क, जवाहर सर्किल, त्रिवेणी नगर सामुदायिक केन्द्र, वैशाली नर्सरी पार्क, करधनी पार्क, स्मृति वन पार्क स्थित वितरण केन्द्रों पर वितरित किये जा रहे है। आमजन में पौधे प्राप्त करने हेतु महिलायें, पुरूष व बच्चों सहित आमजन में उत्साह देखा गया। सैन्ट्रल पार्क में 238, जवाहर सर्किल पार्क में 761, त्रिवेणी नगर सामुदायिक केन्द्र में 46, वैशाली नर्सरी पार्क में 489, करधनी पार्क में 168 तथा स्मृति वन पार्क में 160 पौधें आमजन को वितरित किये गये है।

जे.डी.ए. में मुख्य ऑफिस के बाहर लगी टाइलें दो माह में 3 बार टूटी

जेडीए मुख्यालय भवन में करीब 10 करोड़ रु. की लागत से करवाये जा रहे सौंदर्यीकरण कार्यों की पोल खुलने के बावजूद भी चुप्पी साधे बैठे हैं अफसर

जयपुर (कासं)। जयपुर विकास प्राधिकरण (जे.डी.ए.) में करोड़ों रुपए की लागत से करवाये जा रहे सौन्दर्यीकरण कार्य की पोल उस समय खुल गई, जब मुख्य आफिस के बाहर पोर्च में लगी टाइलें महज 2 माह के समय में 3 बार टूट गई। टाइलें इतनी घटिया तरीके से लगाई कि फर्श पर वाहनों की आवाजाही से ही टूट गई।

सूत्रों की मानें तो जे.डी.ए. में इस समय 10 करोड़ रुपए की लागत से पूरे भवन के सौन्दर्यीकरण करने का काम चल रहा है। इस काम में सभी कमरों में एसी, दरवाजे, कुर्सियां आदि लगाने थे। इसके साथ ही जेडीए आयुक्त के ऑफिस में टाइलें लगानी थी। पोर्च के फर्श पर नई टाइलों को लगाया जाना था। भवन में रंग-रोगन और करौली स्टोन लगाया जाना है। इस काम के लिए जेडीए ने बाकायदा निविदाएं आमंत्रित की थी। सफल आवेदक को यह काम दे दिया गया।

सूत्रों के मुताबिक जेडीए आयुक्त के मुख्य भवन के बाहर पोर्च में टाइलें तो लगा दी गई थी। नई टाइल लगा कर पोर्च के फुटपाथ को चमाचम कर दिया। टाइलें इतने खराब तरीके से लगाई कि वाहनों के वजन से 15 दिन में ही टूटने लगी। इसके बाद टूटी हुई टाइलों को बदला गया। दुबारा जब टाइलों को बदल कर लगाया तो तीसरी बार फिर टूट गई। इसी तरह ऑफिस के अंदर दीवार पर भी टाइलें लगाई गई। टाइलें लगाने से पहले दीवार पर सीमेंट का प्लास्टर भी सही तरीके से नहीं किया गया, जिससे टाइलें अंदर से कई जगह पोली हो गई।

इसी तरह ऑफिस में दरवाजों और डोर क्लोजर को भी बदला जाना था, लेकिन काम का ठेके लेने वाली फर्म ने पुराने दरवाजों को उतार दिया। इन दरवाजों में माइका चिपकाकर उन्हें नया कर दिया गया है। जेडीए के सभी अधिकारियों के कमरों के दरवाजों को बदला गया है, लेकिन कुछ गले हुए दरवाजों को ही बदला गया है जबकि अधिकतर दरवाजों में पुरानी माइका हटा कर नई माइका लगा दी गई जिससे दरवाजे भी नए जैसे लग रहे हैं। कमरों की मरम्मत के समय पुराने एयर कंडीशनर (ए.सी.) को हटाया नहीं गया। इससे मरम्मत के बाद जो भी सीमेंट प्लास्टर लगाया जाता वह एसी की डक्टिंग में घुस गया है। इससे ज्यादातर एसी कमरे को ठंडा नहीं कर पाते। इनमें पानी रिसता रहता है।

ARBiT
it happens here...

International Day of Charity

Charity is vital, as it enables us to reach out to wider parts of society, assisting those who need our help the most. This is why the International Day of Charity is so important. It raises awareness about charity and why it is important to help those who are in need. International Day of Charity serves to increase and enhance social responsibility across the entire world, increasing our support for charitable causes and bringing everyone together in solidarity. This day presents you with a great opportunity to get involved in the charity events that are going on around the world.

राष्ट्रदूत
THURSDAY
05 September 2024
A-B

#TEACHER'S DAY SPECIAL

Young authors weaving their own stories

Teaching since 2009, Varnika has impacted various lives over different cities. Finding her beat in education and shaping the lives of students, teachers' day for her is one where the children, whom she has taught, have learned to imagine and create.

One book, one pen and one child can change the world. With this very intent, an English language teacher Varnika Agarwal has taught students how to weave stories. On Teacher's day, her gift to her students and herself was the stories, that they've written, come to life through the form of physical books by each of them.

Hence, Aarush ,Leisha, Ayaan, Yuvaan, Manika, Varidhi, Ishaya, Amairaa, Aarika, Aadya, Kashvi, Aaarav, Shiven and Shivang have seen their first book come into light. They've learned the process of writing, over the course of time, after several baby steps. After multiple drafts and mind maps, they weaved their stories on different settings, striking a chord with a vast audience.

Teaching since 2009, Varnika has impacted various lives over different cities. Finding her beat in education and shaping the lives of students, teachers' day for her is one where the children, whom she has taught, have learned to imagine and create. These young authors, under her guidance, have developed a surge of confidence which may enable them to write another book soon. Each student is learning to master the 3 C's of creating, communicating and consistency. Surely but slowly, more readers and young writers are leaving a little sparkle wherever they go.

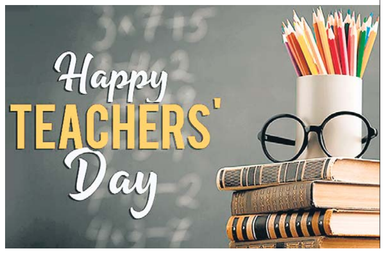

Spooked out and Laughing too!

This is what my agenda has been whenever someone watches my movie, they should always remain on the edge. They should be so involved that they don't want to miss any dialogues. So, I try to pace the movie in such a way that my audience should always be engrossed in the movie completely because I get irritated when someone is looking at their mobile in the middle of the movie.

Amar Kaushik

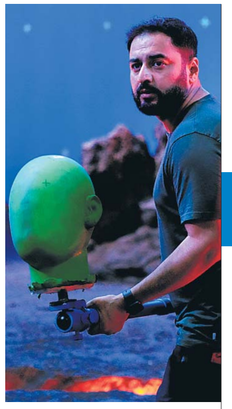

Shailaza Singh
Published Author, Poet and a YouTuber

When you first start talking to Amar Kaushik, it is difficult to imagine this soft-spoken man as the director of movies like *Stree*, *Munjya* and the current reigning blockbuster *Stree 2*. You would imagine him to direct a gentle romance rather than a horror comedy. But then, appearances can be deceptive. When he gets talking, his tales can completely captivate you, and then you realize what makes him such a great storyteller.

Some excerpts:

- **What are your earliest memories of your childhood?**

My father was a forest ranger. When he was posted in Arunachal Pradesh, we used to hire VCRs and watch films. We always had electricity outages. So, we used to finish one film in three days depending on the electricity. So, when I would watch the movie, it would stay with me for all the time. I remember watching movies like *Khoon Bhari Mang*, *Maine Pyaar Kiya*, and all those Hindi classical, 90s films.

- **So, did your time there influence the movies that you have made so far?**

Yes, my movie *Bhediya* has a lot of influence from that part because I have lived near *jungles* and watched my father. At that time, he had to battle a lot of smuggling of wood and trees. So, I did use a lot of those memories in *Bhediya*.

- **What about Stree and Munjya? Where did those movies come from?**

These movies have been inspired (a lot) from Kanpur, where I did my college. Things like friendship of friends, the small town environment, how friends keep talking for hours about the same thing, how in every group, there is a person who gives *gyan*, how every little thing is blown into a big thing.

- **Let us talk about the *Stree* movies. In the first one, the *Stree* abducts the men and in the second one, the women are being abducted. How did you come about the idea for the second one?**

This was the demand of the script. In the first one, *Stree* has left, so what was next? Niren Bhatt, the writer, and I had a lot of discussions. In the first part, we already had established the back story of why *Stree* was killed and how she comes back to exact vengeance from those who killed her. So, we decided to bring back the character who had killed her, and whom she had killed in return by chopping off his head. So, we got this character called *Sarkata*. He was someone who could not handle modern women and believes that women should be subjugated and enslaved.

So, he comes back as a ghost and starts abducting those women who were modern in their thinking. But it takes time for the townspeople to realize that someone is abducting the girls. Initially, everyone thinks that since the girls were modern, they were simply running away in pursuit of better opportunities. The irony was that in the first part, when the boys were disappearing, everyone knew that they were being abducted by *Stree*, but in the second part, when the girls were disappearing, no one thought that someone was abducting them. So, our film starts from that point where we see that *Sarkata* has captured this girl, and taken her to his realm by breaking the wall of her house in the process. It is then, everyone realizes, that the girls are not running away but they are being abducted. And that's how the story started.

We then started developing characters, integrating the old stories and tried to figure out who would rescue these women and who Shraddha Kapoor's character was. Every answer came after that.

- **The VFX in Stree 2 are even better than the first part. How did that happen?**

We used to see a lot of foreign movies with such amazing effects and often get frustrated about why can't we do it in Indian cinema. These effects demand a lot of money, and obviously, one doesn't have that much money because the collections are not that great. So, you need to be smart enough to invest your energy and money in small sequences and show parts of the entity. Sometimes, you show the head, and sometimes, you show the hand or the leg in small sequences throughout the movie, to create the mystery and so that you can spend more money on making the climax grand. Yes, it has been a gradual learning process, and now, we have an excellent VFX team. For each scene, we had a lot of discussions. For example, in the scene where Shraddha Kapoor gets into the body of Rajkummar Rao, I used the concept of *Ardnarishwar*, but I wanted to do it differently. In most movies, we see that once the ghost gets into the body, you just see the other person and not the ghost. I wanted to see both of them, even though, she entered his body. So, that was something we experimented in VFX.

- **So, how do you create balance to enhance your horror elements without overshadowing the comedy parts?**

When it comes to horror comedies, we are very clear that if this is horror, then, we should treat this as a proper horror sequence. We should not buffoon this. We should go full horror in those things. And people should feel that. And then, comedy should come very organically from that scene. It's a very difficult thing. Actually, while doing such scenes of horror, one has to be serious. And then, you also have to be aware of the kind of mood on the sets. For example, in the case of horror, no one should laugh or smile. Then, I put something in between that sequence where humour comes from. For example, let's say everyone is quiet in a scene and then someone will suddenly say 'Bhago' and his way of running will be very funny. Or maybe, they are running and someone has said something and the other person reacts to it, which can be very funny and then they realize that they are being pursued by the ghost and they start running again. So, it's these little things that strike a balance between horror and comedy. So, first, you need to get it down on paper and then handle all the sequences on a scene-by-scene basis.

- **Laughter is probably one of the most difficult things to do. While shooting, do you have a measure of how would the final scene be? Whether the intended humour will make people laugh or not.**

I go by my instinct. I keep looking at my script and monitor. And the scenes are shot quite organically. One character says something and the other one replies. So, you have to take shots with three different cameras. But then, the magic also lies in editing. How you will cut the scene, how you will edit it out, where you have to stop the punch, where you have to make the music stick, where you need silence, all those things add to that horror. If you're just standing and saying the lines, but the reaction isn't correct, or the music isn't correct, or the camera angle isn't correct, then, it doesn't work. But when everything comes together, obviously, you need the best of the actors to do comedy. The way they react to the dialogue, they have to keep on repeating every time. For example, if there are five takes or ten takes, they have to keep on repeating the same energy, the same joke in the same manner. So, you have to have very great actors to do comedy. And then, there are some other aspects like the music, how to sound, how to edit. So, when the public sees all of this, they enjoy it. That's interesting. Because you say a joke, so you have to say it once and laugh. How do you make them laugh again? How do you do this, and then, you have to ask yourself, 'yes, this will work, this won't work.' Ultimately depends on the director's instinct.

- **When you do a movie or an artwork, it's like your own child. Don't you get biased towards it? Like how do you develop an objective view?**

One understands these things. Sometimes what happens is, the actor is not comfortable while saying that line. It all depends on how that line is coming out of his mouth. So, the actor has to be very comfortable while saying that line. You need to understand every joke's germ. Why is this joke coming out? Sometimes what happens is, you've written it well, but when you say it, it doesn't work. Then you need to, as a director, you change a few things, change a few lines, and then change the mood, change the lines and the way it is to be said. Like how to say it. This isn't working, let's say this. Then, you develop by gelling up with the actors, that this isn't working, let's do something more. And then, they give you a character-related something.

- **You've had the same actors for the two movies. Have the actors also helped you by evolving their characters? For example, there's Shraddha Kapoor, or there's Rajkummar Rao. He probably knows more about Vicky because he's lived it. So, does that help the director?**

Yes, obviously. The actors know these things. With the actors, like Vicky and Jana, they know their characters. So, it is very easy for them to just come and start doing the same thing. Get into the skin of the character. And they've lived the characters for the last five years. They know that character very well. But after that, you have to stop them from overdoing anything because there is a chance of that too.

- **But you've used a lot of legends. People are bringing it up on the internet that there's a British Army officer in Lansdowne whose head was chopped off and he roams around as a headless ghost. Did you do any research on this?**

No, not at all. In the film when *Chanderi Puran* is being narrated by *Rudra Bhaiya*, it was said that *Stree* came back and chopped off the head of the person who murdered her. So, when he comes back, his whole body can't come with his head. His head will have to be shown as separated from the body.

- **Any scary incidents on your film set while filming? Did anything happen?**

Yeah, a little bit. Whenever we go for a shoot, we go to locations where there are spooky locations. Because it makes our work easier. I intentionally ask the team to look for spooky locations. So, when the actors reach there, they get to know the stories of the place and obviously, they are scared and when they shoot the scene, they look scared. So, half of the work is done!

- **You didn't get scared while making the film?**

Yeah, but that's why I made the movie. To exorcise my fear!

- **Normally, in every movie, there is a point when people see their mobile phones because the sequences get repetitive. How did you ensure that the audience remain interested?**

This is what my agenda has been whenever someone watches my movie, they should always remain on the edge. They should be so involved that they don't want to miss any dialogues. So, I try to pace the movie in such a way that my audience should always be engrossed in the movie completely because I get irritated when someone is looking at their mobile in the middle of the movie.

To be continued...

rajeshsharma1049@gmail.com

#STREE STRIKES AGAIN

Amar Kaushik with Varun Dhawan, Rajkummar Rao and Ayushmann Khurrana.

Amar Kaushik on the sets of Stree 2.

Rajkummar Rao, Shraddha Kapoor and Amar Kaushik.

#READING

Chanda Mama

Here are some of the best books about the moon for those interested in all aspects of our nearest neighbour

The moon has always played a central role in human history and culture, unsurprisingly so. The orbit of the moon impacts the tides, and the changing phases of the moon have been used to mark time since the earliest days of human history, providing us with a natural calendar before we had the ability to calculate time ourselves.

Scientists and astronomers from various cultures have focused on the moon, calculating its age and trajectory, and positing theories and writing books about the moon and where it might have come from, long before the space race allowed us to reach the surface of the moon itself.

The beauty of the moon has also made it a frequently-referenced figure in legends, literature and songs. A huge number of cultures have made the moon a religious focus, developing stories of moon gods or creating legends around this celestial object.

Hundreds of songs include the moon in their lyrics, and poets and novelists often create moon-based metaphors in their work.

Our fascination with the moon has continued into the present day, with stargazers often turning their telescopes on its surface, and people returning to the lunar calendar as a way to reconnect with nature. Here, are some of the best books about the moon for those interested in all aspects of our nearest neighbour.

Daughter of the Moon Goddess

By: Sue Lynn Tan

Many cultures have a moon goddess, as the moon was so central to historic human life, often providing the most reliable calendar. Daughter of the Moon Goddess draws on the Chinese myth of the moon goddess *Chang'e*, following her daughter *Xingyin*, as she infiltrates the Celestial Kingdom in order to find her exiled mother.

The Book of the Moon

By: Maggie Aderin-Pocock

Dr. Aderin-Pocock, renowned astronomer and presenter of the BBC's famous show *The Sky at Night*, has always loved studying the moon. In *The Book of the Moon*, she introduces readers to many different aspects of moon study, which will appeal to amateur and seasoned sky-watchers alike. The Book of the Moon looks at the history of humanity's relationship with the moon, the moon's topography, and the potential future of space exploration.

The Moon: A Celebration of our Celestial Neighbour

By: Royal Observatory Greenwich and Collins Astronomy

An excellent overview of the moon for people interested in the science and social impact of our orbiting neighbour, *The Moon* was produced by Royal Observatory Greenwich to mark the 50th anniversary of the Moon Landing. It touches on the way that astronomers have observed the moon over the centuries, and the events that led to the first expedition to the moon.

The Moon

By: Hannah Pang

A beautifully-illustrated book about our history and cultural relationship with the moon, Hannah Pang's *The Moon* is a perfect guide to lunar studies for beginners, although, seasoned moon-watchers will also undoubtedly find new information and trivia in its pages. It looks at myth, fiction, and the impact of the moon on our everyday lives, as well as the science behind our history with the moon.

Beneath the Moon: Fairy Tales, Myths, and Divine Stories from Around the World

By: Yoshi Yoshitani

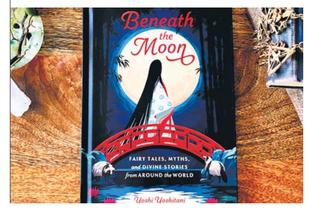

The moon has played such an important role in human history and culture that it's unsurprising that it has been featured in so many legends and stories from across the globe, including stories about moon gods or tales that focus on the moon.

Eight Years to the Moon: The History of the Apollo Missions

By: Nancy Atkinson

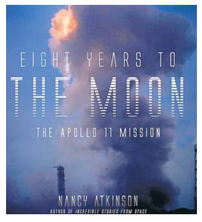

Nearly everyone knows a little of the story of the 1969 Moon Landing, but while the names of the astronauts and the first words spoken on the moon are common knowledge, the long journey to get there is less well-known. *Eight Years to the Moon* contains stories from many of the background figures, such as engineers and other scientists who worked on getting the Apollo astronauts safely to their destination.

The Quiet Moon

By: Kevin Parr

Humanity's relationship with the moon doesn't always mean venturing into space. The moon has also had a huge impact on our earth-bound lives. In *The Quiet Moon*, Kevin Parr uses a focus on the moon as a framework for exploring a year of engaging with nature, working from a lunar calendar and drawing on Celtic history.

THE WALL

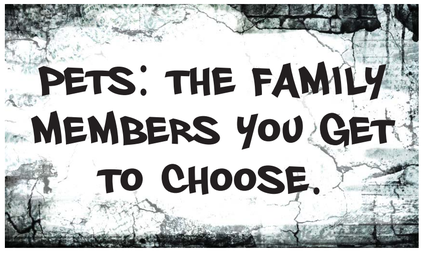

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

बीकानेर में लॉरेन्स गैंग के शूटर समेत पांच बदमाश गिरफ्तार

पेट्रोल पंप को लूटने की योजना बना रहे थे पांचों बदमाश

बीकानेर, (निसं)। डकैती की योजना बना रहे पांच हार्डकोर अपराधियों को सदर थाना पुलिस व डीएसटी टीम ने धर दबोचा। श्रीगंगानगर पुलिस की सूचना पर हुई इस कार्रवाई में पकड़े गये आरोपियों से अवैध देशी पिस्टल व सात जिन्दा कारतूस भी बरामद किये है।

एसपी तेजस्वनी गौतम ने बताया कि श्रीगंगानगर में वांछित एक बदमाश के राजपूत छात्रावास के पास होने की खबर पुलिस को मिली थी। इस बदमाश के पास कार थी, जो राजपूत छात्रावास के पास पुलिस को नजर आ गई। मौके पर पहुंचकर धरपकड़ की गई तो बदमाशों के पास हथियार भी मिले। ये लोग बीकानेर शहर के किसी पेट्रोल पंप को लूटने की योजना बना रहे थे। जब पुलिस मौके पर पहुंची तो राजपूत छात्रावास के पास गली के अन्दर कार खड़ी थी। दो-तीन लड़के कार के बाहर थे। एक-दो लड़के कार के अन्दर बैठे दिखाई दिए जो आपस में बातें कर रहे थे। पुलिस ने यहां से पांच बदमाशों को पकड़ा जो पूछताछ में हार्डकोर अपराधी निकले। इनके कब्जे से एक देशी पिस्टल, 7 जिन्दा कारतूस, एक धारदार चाकू, मिर्ची पाउडर तथा एक कार जब्त की गई।

पुलिस ने लॉरेन्स गैंग के शूटर समेत पांच बदमाशों को गिरफ्तार किया।

- आरोपियों के कब्जे से अवैध देशी पिस्टल व सात जिन्दा कारतूस बरामद
- बदमाशों में कार्तिक जाखड़ लॉरेन्स गैंग का शूटर है, जिसके खिलाफ पांच मामले दर्ज हैं

पुलिस ने जिन हार्डकोर अपराधियों को पकड़ा है उनमें कार्ति जाखड़ (28) पुत्र राजेन्द्र जाखड़ निवासी 2 केएलएम रावला मंडी, लक्ष्मण चौधरी (20) पुत्र सुखदेव जाट निवासी सूर्य नगर गली नम्बर 4 जंटासिंह की कोठी के पास हनुमानगढ़ टाउन, निशान्त कुमार (24) पुत्र रामेश्वर लाल जाट निवासी 36 एच नगी श्रीकरणपुर, मनीष (28) पुत्र दलीप कुमार बिश्नोई निवासी 5 केडी रावला पुलिस थाना रावला, अमन सांई (28) पुत्र प्रेमराज सांई निवासी 1070 एलआईसी कॉलोनी यूआईटी के पास गंगानगर को गिरफ्तार किया है।

एसपी ने बताया कि इनमें से पकड़ा गया कार्तिक जाखड़ लॉरेन्स गैंग का शूटर है। जिसके खिलाफ आर्म्स एक्ट, धोखाधड़ी, हत्या, हमले के अलग-अलग थानों में पांच मामले दर्ज हैं, जिसमें नीम का थाना, रायसिंहनगर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ व गजसिंहनगर में दर्ज है। इसके अलावा निशांत कुमार के खिलाफ केसरीसिंहपुर, अमन सांई के खिलाफ श्रीगंगानगर तथा मनीष कुमार के खिलाफ रावला में मामला दर्ज हैं। बदमाशों पर आर्म्स एक्ट व बीएनएस 2023 की नई धाराओ में प्रकरण दर्ज कर पूछताछ की जा रही है। युवकों पर पूर्व में अवैध मादक पदार्थ, आर्म्स एक्ट के मामले दर्ज हैं। सबसे ज्यादा मामले निशांत के खिलाफ दर्ज हैं, जो राज्यभर के थानों में अलग-अलग दर्ज हो चुके हैं।

इनको पकड़ने वाली टीम में उपनिरीक्षक जीतराम, हेड कांनि. मुकेश, कांनि. राकेश कुमार, रवि कुमार, अभिषेक, सुरेश, जगदीश, कमलेश व श्रीगंगानगर जवाहर नगर थाना के उपनिरीक्षक नरेश मीणा तथा डीएसटी बीकानेर की टीम सदस्य शामिल रहे।

गोविंदगढ़ में तीन लैब सीज की

गोविंदगढ़/अलवर, (निसं)। गोविन्दगढ़ कस्बे में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के सामने तीन लैब संचालकों पर कार्यवाही करते हुए लैब संचालकों की तीन दुकानों को बंद करने के मौखिक निर्देश दिए। जांच के दौरान अलवर पैथ लेब, कविता लैब, रितिका लैब जो कि बिना डिग्रीधारी द्वारा संचालित की जा रही है और साथ ही बायो वैस्ट का निस्तारण भी अवैधानिक तरीके से किया जा रहा है। इधर लैब संचालकों पर कार्यवाही होते देख कस्बे के झोलाछाप डॉक्टर दुकानें बंद कर फरार हो गए। टीम के द्वारा सीएचसी गोविंदगढ़ का भी निरीक्षण किया गया जिसमें डॉक्टर नसीब खान की टेबल पर कविता लेब की जांच रिपोर्ट मिली, जिसका उनके द्वारा संतोषपूर्वक जवाब नहीं मिल पाया। इसके अतिरिक्त जनरल वार्ड में मरीज के हाथों में अलवर पैथ लैब की रिपोर्ट मिली जिस पर मरीज ने बताया कि उसे डॉक्टर ने वहां जांच के लिए भेजा था।

सीएमएचओ डॉ. योगेन्द्र शर्मा ने बताया कि आज हमने गोविन्दगढ़ सीएचसी के सामने संचालित लैबों की जांच की और पाया कि बिना डिग्रीधारी लोगों द्वारा लैब संचालित की जा रही है। निरीक्षण के दौरान एक तो उनमें डॉक्टर नहीं पाया गया। मुख्यतया: वह बिना डॉक्टर की जांच कर रहे थे और अधिकतर लैब में लैब टेक्नीशियन भी प्रशिक्षित नहीं था और ना ही एक्स-रे टेक्नीशियन पाया गया। इन तीन लैबों को हमने सीज करवा दिया है। इसके अलावा इन लैब के बायोवेस्ट का संधारण भी पूरी तरह से सही नहीं था। इसके अलावा लैब में जो जांचें हो रही हैं वह अस्पताल के अंदर बैठे डॉक्टर के द्वारा लिखी पाई गई है इनके रजिस्टरों में इसको भी देखना पड़ेगा कि मरीजों को डॉक्टर बाहर जांच के लिए भेज रहे हैं या फिर मरीज अपनी मर्जी से यहां जांच करवा रहे हैं। इन सभी लैब संचालकों के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने के लिए प्रभारी को निर्देशित कर दिया गया है।

जहरीला पदार्थ खाने से एक की मौत

रतनगढ़, (निसं)। तहसील के गांव टीडियासर निवासी 27 वर्षीय युवक ने 26 अगस्त को भूलवश भोजन के साथ जहरीला पदार्थ खा लिया था, जिससे उसकी तबियत बिगड़ गई तथा उसे जिला अस्पताल लेकर आए, जहां से उसे बीकानेर रैफर कर दिया। उपचार के दौरान मंगलवार की शाम उसकी मौत हो गई। पुलिस ने मृतक के रिश्ते में भाई लालचंद पुत्र बिगताराम ढोली निवासी कितासर तहसील श्रीडूंगरगढ़ की रिपोर्ट पर मर्ग दर्ज कर लाश का बुधवार को बीकानेर में पोस्टमार्टम करवाकर परिजनों के सुपुर्द कर दी है। एएसआई गिरधारीसिंह ने बताया कि लालचंद ने रिपोर्ट में लिखा कि उसका चाचा सुरजाराम लगभग 30 साल से टीडियासर रहता है। सूरजाराम का 27 वर्षीय पुत्र राकेश मानसिक रूप से परेशान था। 26 अगस्त की शाम भोजन के साथ भूलवश जहरीले पदार्थ का सेवन कर लिया, जिससे उसकी तबियत बिगड़ गई। परिजन उसे जिला अस्पताल लेकर आए, जहां से उसे बीकानेर रैफर कर दिया। बीकानेर में उसकी मौत हो गई।

दुष्कर्म के आरोपी को 20 साल की सजा

- कोर्ट ने 40 हजार रुपये के जुर्माने से दंडित किया

भीलवाड़ा, (निसं)। विशिष्ट न्यायाधीश (पोक्सो एक) देवेंद्रसिंह नागर ने 14 साल की एक नाबालिग लड़की को बहला-फुसलाकर ले जाने व उसके साथ रेप करने के आरोपी को 20 साल की सजा और 40 हजार रुपये के जुर्माने से दंडित किया है।

प्रकरण के अनुसार एक महिला ने 14 जून 2022 को जिला पुलिस अधीक्षक को शिकायत महावीर पुत्र कालूलाल भील के खिलाफ दी। इसमें बताया गया कि परिवादिया की सातवीं कक्षा में पढ़ने वाली 14 साल की बेटी को आरोपी महावीर की पत्नी अपने साथ ले जाती थी और घर का काम करवाती थी। वह नाबालिग को अपने घर छोड़कर चली जाती थी। इस महिला का पति महावीर घर पर ही रहता था जो नाबालिग लड़की के साथ गलत व्यवहार करने लगा। वह इस नाबालिग के साथ रेप करता। परिवादिया ने शिकायत में बताया कि पांच दिन पहले उसकी पुत्री को उक्त आरोपी भगाकर कहीं ले गया, जो उसी के कब्जे में है।

पुलिस अधीक्षक के आदेश से सदर थाना पुलिस ने केस दर्ज कर अनुसंधान किया। नाबालिग को दस्तयाब कर आरोपी महावीर को गिरफ्तार कर जांच की। इसके बाद आरोपी के खिलाफ न्यायालय में चार्जशीट पेश की। न्यायालय में सुनवाई के दौरान अभियोजन पक्ष की ओर से विशिष्ट लोक अभियोजक हर्ष रांका ने 16 गवाहों के बयान कलमबद्ध करवाते हुये 32 दस्तावेज पेश कर महावीर पर लगे आरोप सिद्ध करवाये। सुनवाई पूरी होने पर विशिष्ट न्यायाधीश ने आरोपित महावीर को 20 साल की सजा और 40 हजार रुपये के जुर्माने से दंडित किया।

रेलवे अंडरपास का पानी खेतों में छोड़ने से किसानों की फसल की बर्बादी

अजमेर, (कासं)। रेलवे के अधिकारियों द्वारा जबरन अण्डरपास का बरसाती पानी किसानों के खेतों में डालने के मामले को लेकर जिला परिषद सदस्य श्रवणसिंह रावत व पूर्व सरपंच घनश्याम जांगिड़ के नेतृत्व में लोगों ने जिला कलेक्टर डॉ. भारती दीक्षित को ज्ञापन सौंपा।

उन्होंने जिला कलेक्टर को दिए ज्ञापन में कहा कि अजमेर खण्डया रेलवे लाईन पर स्थित अण्डरपास सं. 05 जो कि पुराना बड़गांव व नया बड़गांव के सम्पर्क के लिये रेलवे द्वारा लगभग 10 वर्ष पूर्व बनाया गया था, जो कि ग्रामीणों के लिये मुसीबत का सबब बना हुआ है। अण्डरपास के चारों और किसानों की खेती की जमीनें है तथा जिसमें काश्तकार खेती करते हैं। बारिश की अधिकता के कारण खेतों में वैसे ही पानी लबालब भरा हुआ है, उसके बावजूद रेलवे द्वारा अण्डरपास का पानी भी जबरन खेतों में छोड़ा जा रहा है, जिससे और अधिक मुसीबत का सामना करना पड़ रहा है। रेलवे का कोई अधिकारी किसी की बात मानने को तैयार नहीं है। ग्रामीणों ने जब इस बात का विरोध किया तो जी.आर.पी. पुलिस की गाड़ियां मंगवाकर गरीब काश्तकारों को डरा-धमका कर जबरन पम्प बुलाकर खेतों में पानी डालना प्रारम्भ कर दिया, जो अनवरत अभी तक चालू हैं तथा खेतों में लबालब पानी भर रहा है, जिससे फसलें खराब होने की पूरी आशंका है। पूर्व सरपंच घनश्याम जांगिड़ ने जब एलओडब्ल्यु अजय जैन से इस संबंध में फोन पर बात की तो अजय जैन ने बताया कि उच्च अधिकारियों से बात करो फिर उच्च अधिकारी वरिष्ठ अभियंता डी ई एन शेरसिंह से बात की तो उन्होंने कहा कि अण्डरपास का पानी खाली करना है, चाहे आपकी फसलें खराब हो या और कुछ हो, चाहो तो मेरी शिकायत कर दो।

इस पर उन्हें बताया गया कि इस समस्या का समाधान टैंकर की व्यवस्था कर टेंकरो से खाली किया जा सकता है, लेकिन उच्च अधिकारी कोई बात सुनने को तैयार नहीं है। उन्होंने कहा कि काश्कारों ने महंगे गुलाब की खेती की हुई है, जो लगभग एक बीघा में चार से पांच लाख की पौधे आते हैं तथा लगभग 7-8 बीघा में गुलाब की खेती है जो पूरी तरह से नष्ट होने की स्थिति में है। वहीं रेलवे के अधिकारी किसी की बात सुनने को तैयार नहीं है। 10 वर्ष पूर्व जब आरयूबी का निर्माण किया था तब उच्चतम न्यायालय के निर्देशानुसार आर यू बी के दोनों और दो गहरे कुएं खोदे गए तथा अण्डरपास के तल में चैम्बर के जरिये पाइप लाइन के कुचों के छोड़ा गया था। दो-तीन वर्ष तक तो कोई परेशानी नहीं हुई, जितना पानी भरता था वो कुओं में चला जाता था, लेकिन रेलवे वालों की लापरवाही के कारण चैम्बर व पाइप लाइन मिट्टी जाने से बन्द (चौक) हो गई, जिससे कुओं में पानी जाना बन्द हो गया। ऐसे में रेलवे के अधिकारियों की लापरवाही से इसका खामियाजा भुगतना पड़ रहा है। ग्राम पुराने बड़गांव से नए बड़गांव स्थित सरकारी विद्यालय में जाने वाले बसों को भी बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। बच्चे अण्डर पास की दीवार के उपर चलकर स्कूल जाते हैं, जिससे कोई भी हादसा होने की संभावना बनी रहती है।

चैक अनादरण के आरोपी को सजा

मदनगंज-किशनगढ़, (निसं)। अदालत ने चैक अनादरण के आरोपी को 6 माह का कारावास एवं जुर्माना की सजा से दंडित किया है। सरगांव निवासी हसन मोहम्मद पुत्र नेहरू शाह ने लक्ष्मीनारायण शर्मा से एक लाख 41 हजार रूपये बतौर उधार लेकर भुगतान के लिये चैक दिया था, किंतु बैंक खाते में पर्याप्त राशि नहीं होने पर चैक रिटर्न हो गया। कई बार तकाजा किया, पर टालमटोल रवैया अपनाकर भुगतान नहीं किया। परिवादी लक्ष्मीनारायण ने एडवोकेट प्रमोद शर्मा के जरिये अदालत परिवाद पेश कर न्याय की गुहार लगाई। न्यायाधीश सुनील गोस्वामी ने एडवोकेट शर्मा द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य व तर्कों से सहमत होते हुए आरोपी हसन मोहम्मद को 6 माह का कारावास व जुर्माने से दंडित किया।

मार्बल फैक्ट्री में श्रमिक की मौत

मदनगंज-किशनगढ़, (निसं)। गांधीनगर थाना अंतर्गत मार्बल एरिया स्थित श्रीनिवास मार्बल फैक्ट्री में पत्थर के निचे दबने से एक श्रमिक की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। गांव रलावता निवासी सरदार गुर्जर (43) पर अकस्मात मार्बल ब्लॉक गिर पड़ा, जिससे निचे दबने से इसकी मौत हो गई। मृतक के परिजनों ने फैक्ट्री में शव के पास बैठकर मौत के लिये फैक्ट्री मालिक को जिम्मेदार ठहराते हुए मुआवजा देने की मांग की। दोनों पक्षों के बीच समझाइश के जरिये सुलह हो जाने पर पोस्टमार्टम की कार्यवाही के बाद शव परिजनों के सुपुर्द कर दिया।

पहाड़ी क्षेत्र में मिले दो नर कंकालों की नहीं हुई शिनाख्त

मौके पर नर कंकाल, टूटा हुआ मोबाइल एवं कपड़े सहित कई साक्ष्य मिले

टोडारायसिंह पहाड़ी क्षेत्र में मिले दो नर कंकाल।

मालपुरा, (निसं)। टोडारायसिंह से बिसलपुर पहाड़ी क्षेत्र में मंगलवार की शाम मिले दो नर कंकाल से क्षेत्र में फैली सनसनी के बाद दोनों नर कंकाल को पुलिस ने सुरक्षा घेरे में लेकर बुधवार को अजमेर से पहुंची फोरेन्सिक व एफएसएल टीम को सुपुर्द किया गया।

- अजमेर से पहुंची एफएसएल व फोरेन्सिक टीमें जांच में जुटी

मामले के अनुसार मंगलवार की देर शाम को पहाड़ी क्षेत्र में चरवाहों ने एक पेड़ के नीचे दो नर कंकाल देखे तो तत्काल थाना पुलिस को सूचना दी। सूचना पर पहुंची पुलिस टीम ने मौके पर पहुंच दोनों नर कंकाल को पुलिस सुरक्षा में ले टोडारायसिंह अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया। नर कंकाल मिलने की सूचना पर मामले को गंभीरता से लेते हुये केकडी पुलिस अधीक्षक विनित बंसल, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रामचन्द्र चौधरी, पुलिस उपाधीक्षक हर्षित शर्मा, एसडीएम शिवराज मीणा ने टोडारायसिंह पहुंच पहाड़ी क्षैत्र में घटनास्थल का निरीक्षण कर अस्पताल में रखे नर कंकाल का भी बारीकी से जायजा लिया।

पुलिस जांच टीम को मौके पर नर कंकाल से बंधी पेड़ पर लटकी दो रस्सियां व टूटा हुआ मोबाईल एवं कपड़े सहित कई साक्ष्य मिले। बुधवार की दोपहर तक शिनाख्त नही होने पर अजमेर से आई फोरेन्सिक व एफएसएल टीम को दोनो नर कंकाल जांच के लिये सौंपे गये। शहर मे चर्चा के अनुसार 23 जुलाई को टोडारायसिंह थाने में एक युवक व युवती की गुमशुदगी का भी मामला दर्ज करवाया गया था जिनका आज तक कोई सुराग नहीं मिला। घटनास्थल के आसपास बीते दिनों एक लावारिस मोटरसाइकिल भी पुलिस ने जप्त की थी। ऐसे में यह दोनों नर कंकाल इसी मामले से जुड़े होने की भी चर्चाएं सुर्खियों में रही हालांकि पुलिस ने इसको लेकर कोई बयान जारी नहीं किया।

न्यायालय भवन के सामने से अतिक्रमण हटाने के लिए प्रशासन का पीला पंजा चला

कच्चे-पक्के बनाए गए मकानों को हटाकर सरकारी भूमि को मुक्त करवाया

सादुलपुर, (निसं)। न्यायालय भवन राजगढ़ के सामने सरकारी भूमि से बुधवार को दिन भर अतिक्रमण हटाकर सरकारी भूमि को मुक्त करवाने की कार्रवाई की गई। झुग्गी बस्ती के लोगों और उनके सामान को नगर पालिका प्रशासन राजगढ़ के ट्रैक्टरों में डालकर पहुंचाने की भी कार्रवाई की गई। लेकिन सामान इतना ज्यादा हो गया कि साधन कम पड़ गए।

- पुलिस प्रशासन सहित एडीएम, एसडीएम, तहसीलदार, एएसपी व सीआई मौके पर रहे
- पुनर्वास के लिए प्रशासन ने भामाशाह से जमीन उपलब्ध करवाई

प्रशासन की ओर से चिन्हित कुल 52 परिवारों के अतिक्रमण को हटाने की कार्रवाई की गई है। वहीं दोपहर 11 बजे लगभग अतिक्रमण को हटाने की कार्रवाई शुरू की गई थी। जो शाम 6 बजे तक की जा रही थी। दोपहर साढे बारह बजे चेतावनी के बाद जेसीबी मशीन का पीला पंजा चलना शुरू हो गया तथा देखते ही देखते न्यायालय भवन राजगढ की भूमि पर बनाए गए कच्चे पक्के मकानों को हटाना शुरू कर किया गया।

जिला कलेक्टर की आदेशों की पालना में अतिक्रमण को हटाने के लिए लगभग दो सौ से अधिक पुलिस के जवान तथा अतिकर्मियों की संख्या से अधिक महिला कांस्टेबल को तैनात किया गया था। झुग्गी बस्ती के लोगों का घरेलू सामान इतना ज्यादा था। साधन कम पड गए।

जिसके कारण प्रशासन ने अन्य लोगों की सहायता से ट्रैक्टर और पिकअप जीप तथा दो बडे ट्रकों की व्यवस्था की। इसके बाद झुग्गी बस्ती के लोगों के सामान को उपलब्ध करवाई गई जगह पर पहुंचाया गया। लेकिन शाम 6 बजे तक बस्ती के लोगों का सामना ले जाया जा रहा था। इसके अलावा तीन जेसीबी मशीन सहित नगर पालिका राजगढ के सैंकड़ों सफाई कार्मिकों ने अतिक्रमण को हटाया। देर शाम को न्यायालय भवन राजगढ की उत्तरी दिशा की दीवार के पास खडे झाड झांझड को भी हटाकर भूमि का समतलीकरण कर सफाई की। लगभग सात घण्टे तक चली कार्रवाई शाम 6 बजे तक भी पूरी नहीं हो सकी।

हादसे में छह ऊंटों की मौत

उदयपुर, (कासं)। रात के समय पैंथर को देख कर भागे छह ऊंट वाहनों की चपेट में आने से मौत हो गई। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार भेसड़ा खुर्द डेडरों की ढाणी प्रतापनगर निवासी गणेशलाल पुत्र हाद्वन रेबारी दो अगस्त को तीस से पैतीस ऊटों के चरने के लिए देबारी क्षैत्र में ले गया था, जहां रात के समय में पैंथर को देख जान बचाकर ऊंट वहां से भागे। इस दौरान वाहनों के चपेट में आने से छह ऊंटों की मौत हो गई। दूसरे दिन ऊंटों के लापता होने पर तलाश में निकले गणेशलाल को ऊंट मृत हालत में मिले।

युवक की मौत

उदयपुर, (कासं)। शहर के बडगांव थाना क्षैत्र में युवक की अकाल मौत हो गई। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार गायत्री नगर बड़गांव निवासी करणसिंह पुत्र देवीसिंह की मौत हो गई। करणसिंह पाउडर फेक्ट्री में नौकरी करता था। रात में वह खाना खाने के बाद सोया था। इस दौरान अचानक तबीयत खराब होने पर परिजन उसे उपचार के लिए एमबी चिकित्सालय ले गए, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

भीलवाड़ा कलेक्टर व पुलिस अधीक्षक ने गोवटा व जैतपुरा बांध का निरीक्षण किया

वर्षा जनित घटनाओं की रोकथाम हेतु स्थानीय प्रशासन अलर्ट मोड पर रहे : कलेक्टर

मांडलगढ़, (निसं)। भीलवाड़ा कलेक्टर नमित मेहता व पुलिस अधीक्षक राजन दुष्यंत ने बुधवार को मांडलगढ़ उपखंड में गोवटा और जैतपुरा बांध का निरीक्षण किया और अधिकारियों को सुरक्षा व्यवस्था पर नजर रखने के निर्देश दिए।

जिला कलेक्टर ने गोवटा बांध पर चल रही चादर का निरीक्षण कर अधिकारियों को निर्देश दिये कि संयुक्त निगरानी रखकर किसी भी अप्रिय घटना व जनहानि की रोकथाम हेतु बांध पर लोगों की आवाजाही को रोका जावे। स्थानीय प्रशासन पूरी तरह मुस्तैद रहे। उन्होंने निर्देश दिये कि बांध क्षेत्र में मिट्टी कटाव व बांध में रिसाव जैसी स्थिति पाए जाने पर तुरन्त रोकथाम के उपाय करें। उन्होंने उपखंड अधिकारी अजीत सिंह से बांध पर किसी भी अप्रिय घटना की रोकथाम के लिए सुरक्षा व्यवस्था के मद्देनजर नियुक्त कार्मिकों की जानकारी ली। उन्होंने सिंचाई विभाग के सहायक अभियंता धर्मेंद्र पूनिया से बांध की भराव क्षमता सहित अन्य जानकारियां ली। जलजनित अप्रिय घटनाओं की रोकथाम हेतु आसपास के लोगों सहित आमजन को जागरूक करने के निर्देश दिए। उन्होंने बांध के आसपास सफाई व्यवस्था भी दुरुस्त करने के निर्देश दिए। उन्होंने निर्देश दिये कि जिले में अच्छी बारिश हो रही है। वर्षा जनित घटनाओं की रोकथाम हेतु स्थानीय प्रशासन अलर्ट मोड पर रहे। उन्होंने कहा कि किसी प्रकार की दुर्घटना की सूचना तुरन्त दी जावे। उन्होंने जैतपुरा बांध का भी निरीक्षण किया। जल वितरण कमेटी की बैठक संबंधी जानकारी ली तथा एईएन को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। इस दौरान मांडलगढ़ तहसीलदार ललित डीडवानिया सहित संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

जेतपुरा और गोवटा बांध का भीलवाड़ा कलेक्टर व पुलिस अधीक्षक ने निरीक्षण किया।

- जल वितरण कमेटी की बैठक की जानकारी लेकर एईएन को दिशा निर्देश दिए

बरसाती नाले में डूबने से दो युवकों की मौत

मांडलगढ़, (निसं)। मांडलगढ़ के बिलिया गांव में एक दुखद घटना में दो युवकों की नाले में डूबने से मौत हो गई। घटना उस समय हुई जब दोनों युवक गांव के पास स्थित नाले में नहाने गए थे। इस दौरान अचानक एक युवक का संतुलन बिगड़ा और नाले के गहरे पानी में चला गया और डूबने लगा तो साथी युवक उसे बचाने के लिए पानी में कूद गया। दोनों युवकों की डूबने से मौत हो गई।

- अचानक एक युवक का संतुलन बिगड़ा और नाले के गहरे पानी में चला गया
- युवक डूबने लगा तो साथी युवक उसे बचाने के लिए पानी में कूद गया

ग्रामीणों के अनुसार बिलिया गांव के पास स्थित बरसाती नाले में थलकलां निवासी कमलेश बैरवा और शिवलाल सालवी नहाने के लिए गए थे। इस दौरान नाला बरसात के कारण उफान पर था, जिससे पानी का बहाव तेज हो गया था। जैसे ही युवकों के डूबने की खबर गांव वालों में फैली, ठामीणों ने तुरंत मौके पर पहुंचकर उन्हें बचाने की कोशिश की। हालांकि, पानी के तेज बहाव के कारण वे दोनों को बाहर निकालने में असफल रहे। घटना की सूचना मिलने पर बीगोद थाना पुलिस टीम मौके पर पहुंची। काफी मशक्कत के बाद युवकों के शवों को नाले से बाहर निकाला गया।

मृतकों की पहचान थलकलां गांव के निवासी के रूप में हुई है। बताया जा रहा हैं कि नाले में रोज कई युवक मछलियां पकड़ने आते है। इस हादसे से पूरे थलकलां गांव में शोक की लहर दौड़ गई है। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। पुलिस ने दोनो मृतकों के शवों को पोस्टमार्टम के लिए मांडलगढ़ अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया हैं। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

संक्षिप्त

पुलिस ने फ्लैग मार्च किया

फुलेरा । स्थानीय थाना क्षेत्र में आगामी त्यौहारों और मेला महोत्सव को लेकर सुरक्षा एवं शांति व्यवस्था कायम कायम रखने के लिए बुधवार को प्रातः 9 बजे रेपिड एक्शन फोर्स (आर.ए.एफ.) केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की ए/83 बटालियन के एक प्लाटून ने फुलेरा पुलिस के साथ मिलकर फ्लैग मार्च किया। गौरतलब है कि उक्त फ्लैग मार्च जयपुर में तैनात रेपिड एक्शन फोर्स (आर.ए.एफ.) केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 83 बटालियन के कमाण्डेंट कुलदीप कुमार जैन के निर्देशन एवं सहायक कमाण्डेंट अक्षय कुमार के नेतृत्व में ए/83 बटालियन का एक प्लाटून 2 सितम्बर से 8 सितम्बर तक जयपुर जिले के लगभग सभी पुलिस थानों का परिचितिकरण अभ्यास करेगी। इसके चलते बुधवार को फुलेरा थाना क्षेत्र में भी थानाधिकारी बाबूलाल मीणा के साथ पुलिस बल एवं रैपिड एक्शन फोर्स के जवानों द्वारा हाथों में हथियार लेकर फ्लैग मार्च किया गया।

चिकित्सा मंत्री को लिखा पत्र

शाहपुरा । शाहपुरा से कांग्रेस विधायक मनीष यादव ने प्रदेश में बरसात के मौसम में बढ़ रही मौसमी बीमारियों को लेकर चिकित्सा मंत्री को कराया अवगत। विधायक यादव ने कहा कि प्रदेश में वर्षा का मौसम चल रहा है। वर्षा के मौसम में कई तरह की बीमारियां बढ़ जाती है जिनमें सर्दी, जुकाम, उल्टी-दस्त, पेट दर्द स्कीन व बुखार सामान्य है, परन्तु मानसून में कीचड़ और गड्ढों में वर्षा भर जानें से सामान्य व डेंगू के मच्छर बढ़ जाते है, जिसके कारण डेंगू, मलेरिया व चिकनगुनिया की सहजातीय बीमारियों के मरीज बढ़ते जा रहे है साथ ही स्कब टाइफस के मरीज भी बढ रहे है। विधायक ने कहां कि मेरे विधानसभा क्षेत्र शाहपुरा के भी 6 मरीजों में डेंगू व 6 मरीजों में स्कब टाइफस के लक्षण पाये गये है।

कारागृह का निरीक्षण किया

टोंक। अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव दिनेश कुमार जलुथरिया ने जिला कारागृह का बुधवार को निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। न्यायाधीश द्वारा निरीक्षण के दौरान बंदियों को कारागृह में मिलने वाली मूलभूत सुविधाओं व बंदियों से उनके मुकदमों की स्थिति एवं अधिवक्ता के संबंध में जानकारी प्राप्त की तथा अधिवक्ता न कर पाने की स्थिति में निःशुल्क विधिक सहायता के तहत प्राधिकरण द्वारा अधिवक्ता उपलब्ध करवाने के संबंध में जानकारी प्रदान की। निरीक्षण के दौरान जमानत होने के बावजूद कारागृह में निरुद्ध विचाराधीन बंदियों को जमानत शर्तो के मुताबिक जमानत मुचलके पेश करने एवं आवश्यक विधिक सहायता प्राप्त करने के निर्देश दिए गए।

बैठक 9 को

टोंक। राजस्थान मुद्रांक नियम 2004 के नियम 2 के उपनियम 1 वी के तहत अचल सम्पत्ति जमीन, जायदादों की बाजार दर तय करने के लिए जिला स्तरीय समिति का गठन किया गया है। टोंक जिले के उप पंजीयकों के क्षेत्र से संबंधित अचल सम्पत्ति की दरें तय करने के लिए सोमवार, 9 सितंबर को सुबह 11 बजे जिला पंजीयक की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में बैठक का आयोजन किया जाएगा।

गणेश ध्वजा रैली निकाली

राजगढ़ । कस्बे के गणेश पोल स्थित रिद्धि सिद्धि विनायक गणेश जी महाराज ट्रस्ट की ओर से गणेश महोत्सव एवं मेल को लेकर बुधवार को गणेश ध्वजा रैली निकाली। इससे पूर्व विधि विधान के साथ ध्वज की पूजा अर्चना की गई। महंत त्रिलोक शर्मा एवं अन्य ने पूजा अर्चना कराई। ध्वजा रैली में जेडी स्कूल, सुबोध पब्लिक स्कूल, एवं अन्य, स्कूलों के सैकड़ों छात्र-छात्राओं ने हाथों में ध्वज लेकर गणपति बप्पा मोरया एवं जय गणपति के उद्घोष से समूचा माहौल गणेशमय कर दिया।

पदयात्राओं का महासंगम हुआ

दौसा। दौसा में देवधाम जोधपुरिया की पदयात्राओं का बुधवार को भव्य संगम हुआ। जिले के सैकडों गांवों और कस्बों से आई पदयात्राएं दौसा के देवनारायण मंदिर में एकत्रित हुईं। इस मौके पर गुर्जर समाज ने पदयात्रियों का स्वागत बडे धूमधाम से किया। सुबह से ही पदयात्री मंदिर परिसर में आकर एकत्रित होने लगे। डीजे की धुन पर नाचते गाते पुरुष और महिलाएं भरपूर उत्साह के साथ मौजूद थे।

भाजपा सदस्यता अभियान को लेकर पूर्व विधायक ने पदाधिकारियों की बैठक ली

किशनगढ बास। सदस्यता अभियान 2024 को लेकर आज पूर्व विधायक रामहेत सिंह यादव ने किशनगढ बास में भाजपा पदाधिकारी की बैठक ली। पूर्व विधायक रामहेत सिंह यादव ने बताया कि 2 सितंबर से भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री आदरणीय नरेंद्र मोदी द्वारा भाजपा सदस्यता अभियान का शुभारंभ किया गया है। जिसके चलते 3 सितंबर को प्रदेश के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने और अलवर लोकसभा सांसद केंद्रीय मंत्री भारत सरकार भूपेंद्र यादव ने 3 सितंबर को सदस्यता अभियान का शुभारंभ किया।

यादव ने बताया कि इसी कड़ी में आज 4 सितंबर को पूर्व कैबिनेट मंत्री और सदस्यता अभियान के प्रदेश संयोजक अरुण चतुर्वेदी द्वारा अलवर में सदस्यता अभियान का आरंभ किया गया है।अभियान के अंतर्गत सभी मंडल अध्यक्षों महामंत्रियों सदस्यता अभियान संयोजकों जिला पदाधिकारी सभापति

पूर्व विधायक रामहेत सिंह यादव ने किशनगढ़ बास में भाजपा पदाधिकारियों की बैठक ली।

उपसभापति चेयरमैन वाइस चेयरमैन को निर्देश दिया कि प्रत्येक बूथ पर टीम बनाकर 200 सदस्य बनाएं जाएं।

जिला उपाध्यक्ष राजेश बटवाड़ा ने सभी को सदस्य बनाने के लिए दो दिन में बूथ वाइज संयोजक सह संयोजक की सूची बनाने के लिए कहा। इस मौके पर जिला उपाध्यक्ष राजेश बटवाडा किशनगढ़ बास चेयरमैन सतीश सिंघल कोटकासिम चैयरमैन ओमप्रकाश सैनी मंडल अध्यक्ष किशनगढ़ बास उमेशकांत वशिष्ठ, खैरथल मंडल

■ 2 सितंबर से भारत के प्रधानमंत्री आदरणीय नरेंद्र मोदी द्वारा भाजपा सदस्यता अभियान का शुभारंभ किया

अध्यक्ष प्रमिल जसोरिया, कोटकासिम मंडल अध्यक्ष रामनिवास यादव,हरसोली अध्यक्ष पूरन झाबुला,जिला मंत्री ओमेश चौधरी मोठुका पूर्व अध्यक्ष छोटेलाल यादव महामंत्री मनोज मित्तल,मिडिया संयोजक एवम महामंत्री मनीष शर्मा, प्रकाश यादव, यशपाल शर्मा, कृष्ण यादव जय सिंह सरदार रामहेर चौधरी सुरेंद्र जांगिड़ नरेश ठेकेदार सदस्यता संयोजक जेपी यादव तेजसिंह सैनी कप्तान सिंह रोशन यादव सरपंच मौजूद रहे।

मारपीट में आधा दर्जन लोग घायल

पावटा। विराटनगर थाना क्षेत्र के एक गांव में दो पक्षों के बीच मारपीट हो गई। दोनों ही पक्षों के आधा दर्जन लोग घायल हो गए। वही दोनों पक्षों ने एक दूसरे पर आरोप लगाते हुए पुलिस को शिकायत दी है। मारपीट की घटना 2 सितबर सोमवार रात्रि की है और पुलिस ने मामला दर्ज किया है। घायलो को मैड के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर भर्ती करवाया गया। जहाँ हालत गंभीर होने पर घायलो को अन्यत्र रेफर किया गया है। वही विराटनगर थाना पुलिस ने मामले मे छ्- लोगों को गिरतार किया है। विराटनगर थाना पुलिस ने बताया कि छोटूराम पुत्र रामपाल गुर्जर निवासी पायला की ढाणी तालवा ने मारपीट व लाख लूट का मामला दर्ज करवाया है। वही लीलाराम पुत्र छितरमल निवासी पायला की ढाणी तालवा ने जमीनी विवाद को लेकर गाली गलौच व मारपीट का मामला दर्ज करवाया।

गुरु वंदन, छात्र अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित

कोटपूतली। भारत विकास परिषद् शाखा कोटपूतली द्वारा बुधवार को ग्राम नारेहड़ा स्थित विवेकानन्द सीनियर सैकण्डरी स्कूल में गुरु वंदन छात्र अभिनंदन कार्यक्रम परिषद के उपाध्यक्ष अशोक सुरेलिया की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

इस मौके पर भारत माता के चित्र के समक्ष द्वीप प्रज्जवलित कर वन्दे् मातरम् गायन के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। संस्था प्रधान रतन लाल सैनी ने परिषद् के आगंतुक सदस्यों का दुपट्टा पहनाकर एवं भेंट प्रदान कर स्वागत किया। कार्यक्रम में नारेहड़ा सहित आसपास के सरकारी व निजी विद्यालयों के कक्षा 10 व 12 में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को तथा प्रत्येक विद्यालय के सर्वश्रेष्ठ अध्यापक को तिलक लगाकर, श्रीफल, प्रतीक चिन्ह व धार्मिक

कोटपूतली अध्यापकों का सम्मान किया।

पुस्तक गीता देकर तथा दुपट्टा पहनाकर सम्मानित किया गया। परिषद् सचिव अरविंद शरण बंसल ने परिषद् का परिचय कराया तथा पाँच उद्श्यों सम्पर्क, सहयोग, संस्कार, सेवा एवं समर्पण पर प्रकाश डाला। परिषद् के जिला पदाधिकारी पूर्व प्राचार्य वासुदेव गुप्ता ने गुरु वंदन छात्र अभिनंदन कार्यक्रम की आवश्यकता एवं महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रम होते रहने से एक अध्यापक का मान सम्मान बना रहता है। उपाध्यक्ष अशोक सुरेलिया ने छात्र-छात्राओं को और अच्छा परिणाम देकर क्षेत्र, विद्यालय एवं माता-पिता का नाम

■ सरकारी व निजी विद्यालयों के कक्षा 10 व 12 में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को किया सम्मानित

रोशन करते हुए अपना भविष्य उज्जवल बनाने का आह्वान किया। उन्होंने अध्यापकों से कहा कि जैसे दीपक स्वयं जलकर अंधेरा दूर करता है वैसे ही अपने आचरण से अध्यापक भी भारत के भविष्य का निर्माण करता है। अन्त में राष्ट्रगान गायन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। इस दौरान डॉ. वासुदेव गुप्ता, अरविन्द शरण बंसल, अनिल गुप्ता सहित छात्र-छात्रायें, अध्यापक गण आदि मौजूद रहे।

राष्ट्रीय लोक अदालत 28 को

राजगढ़। कस्बा राजगढ़ में 28 सितंबर को प्रस्तावित राष्ट्रीय लोक अदालत की सफलता एवं क्रियान्वयन को लेकर बुधवार को अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश पंकज बंसल की अध्यक्षता में अधिकारियों की बैठक हुई।

इस बैठक में राष्ट्रीय लोक अदालत के सफल आयोजन को लेकर विस्तार से विचार विमर्श हुआ।तालुका विधिक सेवा समिति सचिव ने बताया कि राजस्थान विधिक सेवा प्राधिकरण के निर्देशन में 28 सितंबर को राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन होग़ा। राष्ट्रीय लोक अदालत के सफल क्रियान्वयन एवं अधिक से अधिक मामलों का निस्तारण को लेकर अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश पंकज बंसल ने बैठक ली। इस बैठक में उपखंड अधिकारी सुश्री सीमा खेतान, रेणी उपखंड अधिकारी नवनीतकुमार, पुलिस उप अधीक्षक मनीषा मीणा, तहसीलदार विनोद कुमार शर्मा, रेणी तहसीलदार कैलाश चंद मेहरा एवं टहला तहसीलदार दुष्यंत कुमार शर्मा एवं अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

सफाई व्यवस्था के नाम पर करोड़ों खर्च के बाद भी कोटपूतली में हाल बेहाल

■ मुख्य ठेकेदार का टेंडर निरस्त कर स्थानीय वाल्मीकी समाज को सफाई कार्य देने की मांग

कोटपूतली। स्थानीय नगर परिषद प्रशासन की अनदेखी व लापरवाही के चलते शहर में सफाई व्यवस्था गड़बड़ाई हुई है। इन दिनों शहर के अधिकांश वार्डो में सफाई के हालात बद से बदतर हो चले है। जगह-जगह कचरे के ढेर लग रहे हैं।

मुख्य चौराहे से लेकर मुख्य मार्गो, गलियों एवं आम रास्तों पर चारों ओर गंदगी और कचरे के ढ़ेर दिखाई देते है। बारिश के चलते कचरा गीला होने व इससे उठने वाली दुर्गन्ध से लोगों को परेशानी हो रही है। हालात यह हैं कि कचरे से बजबजाती नालियां व खचरों के ढेरों मे मुंह मारते पशु स्थानीय नगर परिषद् के जिम्मेदार अधिकारियों की नाकामी को दर्शा रहे है। ऐसा लगता है मानों यहां सफाई व्यवस्था के नाम पर प्रतिवर्ष करोड़ों खर्च के बाद भी हाल बेहाल है। शहर में गंदगी का आलम इतना हो चुका है कि संक्रमण फैलने का खतरा बना रहता है। इतना ही नहीं यहां सफाई व्यवस्था के नाम पर प्रतिवर्ष करोड़ों रूपये उठाने वाले ठेकेदार ने हालात यहां तक कर दिये है कि पार्षद सफाई व्यवस्था दुरूस्त करवाने के लिए लगातार गुहार लगा रहे है। किन्तु कोई सुनवाई नहीं हो रही। बुधवार को भी एक दर्जन वार्ड पार्षदों ने शहर की समस्याओं से अवगत कराने नगर परिषद आयुक्त कार्यालय पहुंचे। जहां पार्षदों ने आयुक्त धर्मपाल जाट से मुलाकात कर उन्हें शहर की बिगड़ी हुई सफाई व्यवस्था के बारे में बताया। पार्षदों ने बताया कि शहर के हालात बद से बदतर होते जा रहे हैं, चारों तरफ सडकें टूटी पड़ी है, सडक में गहरे गड्ढों में पानी भरा हुआ है एवं नालियाँ गंदगी से भरी पड़ी है। जगह-जगह लगे कचरे के ढ़ेर से आम नागरिक परेशान है। इस बारे में जब सफाई ठेकेदारों से बात करते है तो सफाई ठेकेदार पार्षदों की नहीं सुनते, वहीं परिषद के जिम्मेदार सफाई इंस्पेक्टर को समस्या से अवगत कराने पर जल्दी व्यवस्था सुधाने की बात कहते है परन्तु कोई कार्यवाही आगे नहीं बढ़ती है और समस्या जस की तस रहती है। इन दिनो वार्डो में घर घर कचरा संग्रहण करने वाले टिपर नहीं पहुंच रहे हैं। पार्षदों ने आयुक्त को सफाई व्यवस्था ठीक करने को लेकर ज्ञापन सौंपकर मुख्य ठेकेदार का टैंडर निरस्त कर, स्थानीय वाल्मीकी सामाज को सफाई कार्य देने, सीवरेज लाईन का कार्य शीघ्र पूरा करने, जहां कार्य पूरा हो चुका वहां रोड़ बनवाने की मांग करते हुये सोमवार तक सफाई व्यवस्था ठीक कराने की बात कही। अन्यथा नगर परिषद कार्यालय पर धरना दिया जायेगा। पार्षद मनोज गौड़ ने बताया की शहर में 40 वार्ड है। जिनको सफाई व्यवस्था के लिहाज से 08 जोनों में बांटा गया है। इसके अलावा बानसूर रोड़, दिल्ली जयपुर हाईवे की सर्विस लाईन व पूतली रोड़ को दो जोनों में बांटा गया है। शहर की सफाई व्यवस्था पर पूर्व में 14 से 15 लाख रूपये खर्च होते थे। किन्तु नगरपालिका से नगरपरिषद में क्रमोन्नत होने के साथ ही सफाई के ठेकों की शर्ते भी बदल गई। नगर परिषद प्रशासन ने सफाई के टेंडर लेने के लिए मांगे गये आवेदन में ठेकेदार कम्पनी के खाते में 03 करोड के टर्न ओवर की शर्त रख दी। टेडंर की शर्तो के मुताबिक शहर की सफाई का टेण्डर हरियाणा की एक कम्पनी को दिया गया।

'भाजपा सरकार ने प्रदेश को अपराध मुक्त बनाने का वायदा किया'

किशनगढ़ बास। गांव में रोजाना चोरी हो रही है, चोर किसानों की भैंस खोल कर ले जा रहे हैं किसानों के खेतों से पाइप मोटर निकाल कर ले जा रहे हैं यहां तक की मंदिर मस्जिद तक में से नगदी व सामान चोरी कर ले जा रहे हैं आपकी पुलिस और आप क्या कर रहे हो यह भजनलाल सरकार में चलने वाला नहीं है हमारी सरकार का वायदा

■ किशनगढ़ बास क्षेत्र के गांव लंगडबास में बढ़ती चोरी की घटना से नाराज ग्रामीणों की शिकायत पर पूर्व विधायक ने थाना अधिकारी को जाहिर की नाराजगी

है अपराध मुक्त प्रदेश जो हमें भूलना नहीं चाहिए।

यह बात पूर्व विधायक रामहेत यादव ने गांव लगडबास में बढती चोरी की वारदात की शिकायत लेकर बुधवार को निवास पर पहुंचे लोगों की नाराजगी पर थाना अधिकारी जितेंद्र सिंह शेखावत को जाहिर की और कहा गांव में चोरों के इतने हौसले बुलंद हो चुके हैं की किसानों के घरों से भैंसों को खोल कर ले जा रहे हैं यहां तक की मंदिर मस्जिद से नगदी और सामान ले जा रहे हैं अगर

किशनगढ़ बास में पूर्व विधायक के निवास पर लंगडबास से पहुंचे लोग पूर्व विधायक और थाना अधिकारी से बढ़ती चोरी की वारदातों को लेकर शिकायत की।

ऐसे ही चलेगा तो अपराधियों में भय और आमजन को सुरक्षा हम कैसे दे पाएंगे। सरकार ने अपराध मुक्त प्रदेश देने का वायदा किया है इस बात का भी पुलिस को ध्यान रखना होगा।

ग्रामीणों ने पूर्व विधायक रामहेत यादव के निवास पर थाना अधिकारी जितेंद्र सिंह को बताया की गांव में किसान के यहां से बीती रात्रि को दो भैंस और एक पाडी को चोर खोल कर ले गए। इससे करीब 6 माह पहले भी एक किसान के खेत से चोर भैंस खोल कर ले गए जो आज तक नहीं पकड़े गए। गांव में किसानों के खेतों से पाइप और मोटर चोरी होने की तो आम बात है। गांव के मंदिर मस्जिद में से चोर गले तोड़कर कर नगदी चुराकर ले गए। मस्जिद से सामान चुरा कर ले गए लेकिन पकड़े नहीं जा रहे हैं।

थाना अधिकारी जितेंद्र सिंह शेखावत ने पूर्व विधायक व ग्रामीणों को जल्द ही चोरों को पकड़ने का आश्वासन दिया है। पूर्व विधायक यादव ने बताया कि सड़क दुर्घटना में पांव फैक्चर होने के कारण वह दो महीने से क्षेत्र में नहीं आ सके अलवर घर पर थें। ठीक से क्षेत्र के लोगों से मिल भी नहीं पा रहे थे। अब वह किशनगढ़ बास चामरोदा स्थित निवास पर सुबह से शाम तक रहकर लोगों की सुनवाई कर रहे हैं। यादव ने कहा पांव में फैक्चर होने की वजह से क्षेत्र में नहीं जा पा रहे हैं लेकिन कौन अधिकारी सरकार की मंशा के अनुरूप आमजन के लिए कार्य कर रहा है यह सब जानकारी में है।

दिव्यांग गर्भवती महिलाओं को 10 हजार रू. की मदद

कोटपूतली। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने अभिनव पहल करते हुए परिवर्तित बजट वर्ष 2024-25 में प्रधानमंत्री मातृ वन्दना योजना (पीएमएमवीवाई) के अन्तर्गत दिव्यांग गर्भवती महिलाओं को प्रथम सन्तान के लिए वर्तमान में दी जा रही राशि 6500 रूपये को 01 सितंबर से बढ़ाकर 10 हजार रूपये करने का सराहनीय कदम उठाया है।

इस राशि को राज्य निधि से 100 प्रतिशत डीबीटी के माध्यम से दिए जाने की प्रशासनिक स्वीकृति प्रदान की है। भारत में अधिकांश महिलाओं को आज भी अल्पपोषण प्रतिकूल रूप से प्रभावित करता है। भारत में हर तीसरी महिला अल्पपोषित है तथा हर दूसरी महिला रक्ताल्पता से पीड़ित है। अल्पपोषित माता अधिकांशतः कम वजन वाले शिशुओं को ही जन्म देती है। जब कुपोषण गर्भाशय में ही शुरू हो जाता है तो यह पूरे जीवन चक्र में चलता रहता है और ज्यादातर अपरिवर्तनीय होते है। आर्थिक एवं सामाजिक तंगी के कारण कई महिलाएं अपनी गर्भावस्था के आखिरी दिनों तक अपने परिवार के लिए जीविका अर्जित करना जारी रखती है।

इसके अलावा वे बच्चे को जन्म देने के बाद समय से पहले काम करना शुरू कर देती है, जबकि उनका शरीर इसके लिए तैयार नहीं होता। इस प्रकार वे एक तरफ अपने शरीर को पूरी तरह स्वस्थ्य होने से रोकती है और पहले छह माह में अपने नौनिहालों को स्तनपान कराने की अपनी सामर्थ्य में भी बाधा पहुंचाती है।

सार-समाचार

राष्ट्रीय लोक अदालत के लिए बैठक

सांभरझील, (निसं)। न्यायिक अधिकारी अरविन्द कुमार जांगिड आगामी राष्ट्रीय लोक अदालत को सफल बनाने के लिए मीटिंग आयोजित की, जिसमें विभिन्न बैंक व वित्तीय संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। मिटिंग में धन वसूली के लम्बित मामलों से संबंधित चर्चा की गई, साथ ही विभिन्न विभागों सार्वजनिक निर्माण विभाग, पी.एच.ई.डी., विद्युत निगम, पालिका के प्रतिनिधि व अधिवक्ताओं से चर्चा की गई तथा प्री काउंसिलग के माध्यम से प्रकरणों के निस्तारण के बाबत अधिकाधिक राजीनामा योग्य प्रकरणों का राष्ट्रीय लोक अदालत में निस्तारण हेतु लाने को कहा। बैठक में बैंक व वित्तीय संस्थाओं के प्रतिनिधि राजकुमार, जितेंद्र सिंह तंवर, अर्जुन लाल वर्मा, लोकेश कुमार, चिरंजी लाल रैगर, अभिषेक चन्द्र गुप्ता, राजूराम जाट, प्रकाश कुमार प्रजापत, सुनील कुमार, अंकिता अठावाल, विजय अठावाल, बाबू लाल गुर्जर, राजेश कुमार मीणा, रोहित गोयल, हितेश कुमार चंदानी, पैनल अधिवक्ता निशांत शर्मा, लोकेश गहरवार, तेजपाल प्रजापत, शौहरत अली, लक्ष्मीनारायण कलवानियां, ओमप्रकाश कुमावत, फूलचन्द मुण्डोतिया, जी.एल. जाट, पीयूष शर्मा, विनोद पारीक, श्रीराम मीणा, हरिश बांशिया की मौजूदगी रही।

क्विज प्रतियोगिता 17 तक

पावटा। भारतीय रिजर्व बैंक क्विज 90० प्रतियोगिता एवं वित्तीय साक्षरता अभियान का आयोजन एसएचएम महा विद्यालय में किया गया। इस दौरान फाइनेंशियल काउंसलर अमित यादव ने बताया कि भारतीय रिजर्व बैंक के 9०वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसकी अंतिम तिथि 17 सितंबर 2०24 है। इस प्रतियोगिता में भारत के सरकारी एवं प्राइवेट कॉलेजों के अंडरग्रैजुएट विद्यार्थी भाग ले सकते हैं। इस प्रतियोगिता में ऑनलाइन मोबाइल या लैपटॉप से निशुल्क रजिस्ट्रेशन करके भाग ले सकते हैं। इस प्रतियोगिता में जीतने वाले विद्यार्थियों के लिए नेशनल विजेता को पहला ईनाम 1० लाख रुपए दूसरा ईनाम 8 लाख रुपए एवं तीसरा ईनाम 6 लख रुपए दिए जाएंगे। दो सदस्य की टीम बनाकर ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन कर सकते हैं।

पदयात्रा आज होगी रवाना

निवाई/गुंसी । ग्राम पंचायत गुंसी से बिजाष्ण माता इंद्रगढ़ के लिए 23 वीं पदयात्रा 5 सितंबर को रवाना होगी। पदयात्रा संचालक ग्यारसीलाल प्रजापत ने बताया कि गुरूवार को गांव के बीजाष्ण माता मंदिर से ध्वज पूजन के बाद सुबह 9:15 बजे पदयात्रा गाजे बाजे के साथ रवाना होगी। उन्होंने बताया कि पदयात्रा गांव के मुख्य मार्गो से होते हुए गुजरेगी। उन्होंने बताया कि यात्रा का पहला रात्रि विश्राम बरथल चौराहा निवाई बायपास पर होगा। 9 सितंबर की शाम पदयात्रा इंद्रगढ़ पहुंचेगी। 10 सितंबर को ध्वज अर्पण करने के बाद महाप्रसादी का आयोजन होगा।

COLLEGE OF AGRICULTURE
(S.K.N. AGRICULTURE UNIVERSITY)
Kumher, Distt. - Deeg, PIN- 321201
Mobile No.: 9414042027 Email: dean.coabharatpur@sknau.ac.in
No. F. /Estt./COA-K/2024/2561 Dated: 02.09.2024

NOTICE INVITING BID

Bid for open tender regarding Share Farming are invited from interested bidders upto 11.00 AM of 12.09.2024 and open on 12.09.2024 at 1 PM. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (http://sppp.raj.nic.in) of the Rajasthan state; and www.sknau.ac.in University Website.
NIB Code: SKN2425A0133 and UBN is: SKN2425WSOB00136
Raj.Samwad/C/24/4713 DEAN

कार्यालय नगर निगम ग्रेटर जयपुर
(पण्डित दीनदयाल उपाध्याय भवन, लालकोठी, टोंक रोड, जयपुर)
क्रमांक :- ज.स.अ./2024/118 दिनांक :- 03/09/2024
निविदा सूचना
ई-निविदा सूचना-N.I.B No.02 /D.C. (A.M.)NNJG/2024-25
नगर निगम जयपुर ग्रेटर द्वारा जयपुर शहर से आश्रयहीन/बेसहारा पशुओं को पकडवाना, अनाधिकृत रूप से संचालित अवैध पशु डेयरियों को हटवाना व पकडे गये पशुओं को गौ पुनर्वास केन्द्र हिंगोनिया गौशाला में जमा करवाने का कार्य (संसाधन एवं श्रमिक सहित) की एक वर्ष के लिए ई-निविदा सं0 02/D.C.(A.M.)NNJG/2024-25 आमंत्रित की जाती है। निविदा की अनुमानित लागत 2.80 करोड रूपयें की है। निविदा से संबंधित शर्ते व अन्य जानकारी नगर निगम, जयपुर ग्रेटर की वेबसाईट www.jaipurmc.org एवं sppp.rajsthan.gov.in एवं eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है। निविदा का UBN No. JMC2425WSOB00562 है।
उपायुक्त (पशु प्रबंधन)
राज.संवाद/सी/24/4705 नगर निगम जयपुर (ग्रेटर)

कार्यालय नगर निगम ग्रेटर जयपुर
(पण्डित दीनदयाल उपाध्याय भवन, लालकोठी, टोंक रोड, जयपुर)
क्रमांक :- ज.स.अ./2024/120 दिनांक :- 03/09/2024
ई-निविदा सूचना सं. अधि0 अभि0 (मु0) 33 से 34/2024-25
केन्द्र एवं राज्य सरकार के सभी विभागों में पंजीकृत उपयुक्त श्रेणी के ठेकेदारों एवं नगर निगम के पंजीकृत निविदादाताओं से बिड अधि0 अभि0 (मु0) से सम्बन्धित ई-निविदा आमंत्रित की जाती है। कार्यो की अनुमानित लागत, टेण्डर बेचे जाने तथा प्राप्त करने की तारीख, टेण्डर शर्त आदि सम्पूर्ण विवरण नगर निगम ग्रेटर जयपुर की वेबसाईट www.jaipurmc.org.com, eproc.rajasthan.gov.in एवं State Public Procurement Portal Government of Rajasthan की वेबसाईट http;//sppp.rajasthan.gov.in के UBN No :- JMC2425WSOB00563 एवं JMC2425WSOB00564 पर देखी जा सकती है।
अधिशाषी अभियन्ता (मु0)
राज.संवाद/सी/24/4704 नगर निगम जयपुर (ग्रेटर)

कार्यालय प्राधिकृत अधिकारी जोन-11 जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर
कमांक: LU2012/JDA/2024-25/103622 लोक सूचना दिनांक : 03/09/2024
केडिया एलिट बिल्डर्स प्रा. लि. जरिये निदेशक श्री सौरभ केडिया पंजीकृत कार्यालय फर्स्ट फ्लोर ए-08, श्याम नगर, नाडी का फाटक, बैनाड रोड, झोटवाडा, जयपुर। ने इस कार्यालय में नीचे उल्लेखित भूमि का आवासीय प्रयोजन के उपयोग हेतु ऐसी भूमि के अपने अभिधृति अधिकारों के निर्वापन के लिए आवेदन प्रस्तुत किया है, अर्थात:-

क्र. सं.	ग्राम तहसील व जिले का नाम	खातेदार का नाम	खसरा सं.	क्षेत्रफल (वर्गमीटर)	क्षेत्रफल (हेक्टे.)
1.	बगरूखुर्द, सांगानेर (जयपुर)	केडिया एलिट बिल्डर्स प्रा. लि. पंजीकृत कार्यालय फर्स्ट फ्लोर ए-08, श्याम नगर, नाडी का फाटक, बैनाड रोड, झोटवाड़ा जयपुर।	542/1	9600	0.96
			543/1	400	0.04
				कुल	1.00

इसलिए, इसके द्वारा समस्त संबंधित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम, 1956 की धारा 90-क और राजस्थान अभिधृति अधिनियम, 1955 की धारा 63 के अधीन पूर्वोक्त प्रयाजनों के लिए भूमि के उपयोग हेतु अनुज्ञा प्रदान करने और अभिधृति अधिकारों के निर्वापन पर कोई आक्षेप है तो वह इस नोटिस के प्रकाशन के 7 दिन के भीतर-भीतर अपनी एसएसओ आईडी से लॉन इन कर 90-A For Development Authority (UDH) आईकॉन पर जाकर समर्थक दस्तावेज को अपलोड कर अपना आक्षेप दर्ज कर सकते है। उपर्युक्त नियम समय के भीतर-भीतर किसी आक्षेप के अभाव में यह समझा जायेगा कि किसी को आक्षेप नही है और तदनुसार मामले का निपटारा किया जावेगा। यह सूचना मेरे हस्ताक्षर और मुहर के अधीन आज दिनांक 03-09-2024 को जारी की गयी। प्राधिकृत अधिकारी (जोन-11) जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर

कार्यालय नगर निगम, भरतपुर
क्रमांक/एफ.( )न.नि.भ./राजस्व/2024-25/8088-8093 दिनांक : 02.09.2024
ई-ऑक्शन के माध्यम से भूखण्ड खरीदने का सुनहरा अवसर
विज्ञप्ति संख्या ....
नगर निगम, भरतपुर में रिहाईशी भूखण्ड 99 वर्ष की लीज होल्ड पर विक्रय किये जाने हेतु ई-ऑक्शन पोर्टल lsgeauction.rajasthan.gov.in के माध्यम से आमंत्रित किये जाते हैं। शर्ते www.sppp.rajasthan.gov.in पर भी देखी जा सकती है।

क्र. स.	योजना का नाम	भू-उपयोग	क्षेत्रफल	E.M.D राशि (रूपये)	ई-ऑक्शन प्रारम्भ करने की दर (रूपये) प्रति वर्गगज में
1	राजेन्द्र नगर भू0स0 ए-1	रिहाईशी	1076.98 वर्गगज	538490/-	25000/-
2	दीनदयाल नगर भू0स0 83-ए	रिहाईशी	178.33 वर्गगज	78465/-	22000/-
3	जवाहर नगर (D-210)	रिहाईशी	201.70 वर्गगज	226913/-	56250/-
4	जवाहर नगर (A-297)	रिहाईशी	64.45 वर्गगज	58005/-	45000/-

ई-ऑक्शन कार्य की शर्ते, अमानत राशि, भागदारी राशि तथा ई-ऑक्शन आदि की जानकारी हेतु साईट lsgeauction.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है तथा इसी साईट पर वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिये इच्छुक संवेदक/फर्म/व्यक्ति निर्धारित पंजीयन शुल्क 1000/- रूपये जमा करवाकर ई-ऑक्शन में भाग ले सकते हैं।
ऑक्शन पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन एवं ऑनलाईन बोली लगाने के सम्बन्ध में विस्तृत दिशा-निर्देश "Bidder User Guide" दी हुई है। किसी भी प्रकार की तकनीकी समस्या अथवा जानकारी हेतु दूरभाष संख्या 8860563984 एवं 8209419615 पर सम्पर्क कर सकते हैं तथा यदि किसी को कोई आपत्ति है तो कार्यालय समय में निविदा से पूर्व मय साक्ष्यों के साथ अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। नीलामी पश्चात् किसी की भी आपत्ति मान्य नहीं होगी।
नीलामी प्रक्रिया में भाग लेने के लिये रजिस्ट्रेशन, अमानत राशि, पहचान पत्र अपलोड करने की कार्यवाही दिनांक 03.09.2024 को प्रातः 11.00 बजे से 17.09.2024 सांय 06.00 बजे तक ऑनलाईन नीलामी दिनांक 18.09.2024 को प्रातः 10.00 बजे से 20.09.2024 सांय 5.00 बजे तक की जावेगी। अन्तिम 15 मिनट में संवेदक/फर्म/व्यक्ति द्वारा बोली दिये जाने पर ई-निविदा की समयावधि में प्रत्येक बार स्वतः ही 30 मिनट की वृद्धि हो जावेगी।
UBN Number :-
1. DLB2425SSOB07262 2. DLB2425SSOB07265
3. DLB2425SSOB07268 3. DLB2425SSOB07271
राज.संवाद/सी/24/4672 आयुक्त

संक्षिप्त

सचिन पायलट का जन्म दिवस 7 को

दौसा। कांग्रेस महासचिव सचिन पायलट के 47वें जन्म दिवस के अवसर पर 7 सितंबर को दौसा में राजेश पायलट स्मारकए जीरोता पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इस कार्यक्रम में रक्तदान शिविर और वृक्षारोपण की व्यवस्था की गई है। कार्यक्रम के पोस्टर का विमोचन सचिन पायलटए सांसद मुरारी लाल मीणाए और भरतपुर सांसद संजना जाटव द्वारा किया गया। इस अवसर पर राजगढ विधायक मांगीलाल मीना, पूर्व प्रधान डीसी बैरवा, ब्लॉक अध्यक्ष हेमराज अवाना, सेवादल के पूर्व जिला अध्यक्ष कैलाश गोठवाल, उमाशंकर बनियाना, मोइन खान, एनएसयूआई जिला अध्यक्ष विजेंद्र गुर्जर, रोहिताश बंसीवाल, हेमराज सिंह बैरवाए और कृष्णा जीरोता सहित कई अन्य प्रमुख नेता और कार्यकर्ता उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य समाज में रक्तदान के महत्व को बढावा देना और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाना है। यह आयोजन पायलट के सामाजिक कार्यों को सम्मानित करने और उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए किया जा रहा है।

'पेड़ों में देवों का वास होता है'

आमेर। उपखंड क्षेत्र के खोरा मीणा में आज प्राणवायु की निरंतर होती कमी को देख कर आभास होता है कि पेड़ हमारे जीवन हेतु कितने आवश्यक हैं। भारतीय संस्कृति में पेड़ों में देवों का वास बताया गया है और प्रकृति को मां का दर्जा दिया गया है। पेड़ों के बिना मानव जीवन की कल्पना अधूरी है। आज हमारे गांव खोरा मीणा के सरकारी विद्यालयों, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खोरा मीणा राजकीय प्राथमिक विद्यालय खानियावाला राजकीय प्राथमिक विद्यालय कांकरेल राजकीय प्राथमिक विद्यालय तलाई स्टेंड राजकीय प्राथमिक विद्यालय चककोठिया में लगभग 751 पौधे, बिल, जामुन, सीताफल, मीठा नीम आदि बच्चों को वितरित किए गयेइसी क्रम में खोरामीणा जनपरिवर्तन सोसायटी के अध्यक्ष बाबूलाल जी मीणा, सचिव शिवपाल मीणा, रामनारायण मीणा, उपाध्यक्ष कालूराम चांदोलिया ने जो वृक्षारोपण कार्यक्रम की मुहिम छेड़कर समर्पित भाव से ग्राम विकास हेतु तत्परता प्रदर्शित की है यह निश्चित ही प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है।

चोरी के कैमरे बरामद

दूदू। मोजमाबाद पुलिस थाना क्षेत्र के अधीन नयावास गांव में स्थित बालाजी मंदिर में गत तीन दिन पूर्व लगे सीसीटीवी कैमरे ले जाने के प्रकरण में पुलिस ने कार्रवाई कर कैमरा चोरी करने के आरोपी को गिरफ्तार कर कैमरे बरामद किए। उप पुलिस अधीक्षक दीपक खंडेलवाल ने बताया कि 1 सितंबर को राकेश कुमावत ने पुलिस थाने में रिपोर्ट दर्ज करवा कर अवगत कराया की 30 अगस्त की रात को बालाजी मंदिर में लगे सीसीटीवी कैमरे ले गये। पुलिस थाने में दर्ज रिपोर्ट के बाद टीम गठित की जाकर आरोपी की तलाश शुरू की। इस दौरान आरोपी विष्णु प्रसाद यादव को गिरफ्तार कर चोरी किए गए सीसी टीवी कैमरे बरामद कर लिए। थाना प्रभारी संजय मीणा ने बताया कि आरोपी से पूछताछ की जा रही है।

गणेश महोत्सव 6 सितम्बर को

टोंक। गणेश महोत्सव के कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रभु बाडोलिया एवं समस्त आनंदम समिति अध्यक्ष भगवानदास गुर्जर ने बताया हजारो श्रद्धालुओं के वितरण के लिए प्रसाद की तैयारी को लेकर भट्टी पूजन कर एंव हलवाइयों का तिलक लगाकर एंव माला पहनाकर विधि विधान से पूजन कर शुरुआत की। गणेश महोत्सव 2024 स्नेहिल स्वर्जन श्री राम (दूधिया बालाजी आश्रम) के सानिध्य में कार्यक्रम आयोजित दिनांक 6 सितंबर को होने जा रहा है जो अन्नपूर्णा गणेश मंदिर में आयोजित किया जायेगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जलदाय मंत्री राजस्थान सरकार कन्हैयां लाल चौधरी होगे।

अस्थाई अनुज्ञा पत्र के आवेदन आमंत्रित

टोंक। दीपावली के पर्व पर जिले में विस्फोटक आतिशबाजी के अस्थाई अनुज्ञा पत्र 19 अक्टूबर से 3 नवंबर की अवधि के लिए जारी किए जायेंगे। अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट ने बताया कि विस्फोटक नियम के तहत आवेदकों द्वारा निर्धारित प्रपत्र में आवेदन पत्र प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि 30 सितंबर है। एडीएम ने बताया कि आवेदक अपना आवेदन पत्र आवक अनुभाग कलेक्ट्रेट, टोंक में प्रस्तुत करें। उन्होंने बताया कि आवेदन पत्र के साथ प्रस्तावित स्थल का ब्ल्यू प्रिंट की 4 प्रतियां, आसपास के व्यवसायिक स्थल की स्थिति एवं पासपोर्ट साईज की 2 नवीनतम फोटो संलग्न करें।

सांसद व विधायक ने विकास कार्यों का शिलान्यास किया

पावटा। विराटनगर विधानसभा क्षेत्र मे सांसद व विधायक ने विकास कार्यों शिलान्यास व लोकार्पण-किया।

इस दौरान मंगलदास महाराज के सानिंध्य व जयपुर ग्रामीण सांसद राव राजेंद्र सिंह के मुख्य आतिथ्य, क्षेत्रीय विधायक कुलदीप धनकड की अध्यक्षता एवं पावटा प्रधान पूजा चौधरी, पूर्व सरपंच जगन चौधरी, भाजपा वरिष्ठ नेता रामनिवास यादव, मुखराम धनकड, आशीष धनकड, मंडल अध्यक्ष प्रकाश राठी, जयराम सिंह, अनिल शर्मा सहित जन प्रतिनिधियों व गणमान्य नागरिको एवं भाजपा पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओ के विशिष्ट आतिथ्य विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न ग्राम पंचायतों में योजना से बनी सडकें व पेयजल योजना कार्यों का लोकार्पण/शिलान्यास समारोह पूर्वक संयुक्त रूप से फीता काट कर किया गया।

इस दौरान जयपुर ग्रामीण सांसद राव राजेंद्र सिंह व विराटनगर विधानसभा क्षेत्रीय विधायक कुलदीप धनकड स्वागत रैली द्वारा जनता के बीच पहुंचे जहाँ क्षेत्र की जनता ने पूरे जोश व उत्साह के साथ माला व साफा पहनाकर, पुष्प वर्षा कर, आतिशबाजी करते हुए डोल नगाडों के साथ उनका भव्य स्वागत किया। इसके बाद जनप्रतिनिधियों व आगंतुक अतिथियो ने गाँव कल्याणपुरा (शिव मंदिर से) जोधपुरा (किशोर नेहरा की ढाणी) सडक निर्माण का शिलान्यास, गाँव कल्याणपुरा (जोधपुरा) में जल जीवन मिशन योजनांतर्गत पेयजल योजना का लोकार्पण, दादाकाबास (चौबाला) में जल जीवन मिशन योजनांतर्गत पेयजल योजना का लोकार्पण, मंढा (संतोषी सडक से) भोमियाँ जी होते हुए प्रेमनगर सडक निर्माण का शिलान्यास, ?संतोषी सडक (कैरोडी) से प्रधान मैरिज गार्डन, कैरोडी में सडक निर्माण का शिलान्यास, भोजावास (वीरतेजाजी नगर) में जल जीवन मिशन योजनांतर्गत पेयजल योजना का लोकार्पण, सितोपसिंह पुरा (वीरतेजाजी नगर) से स्वामियों की ढाणी, कैमरिया (तुलसीपुरा) वाया बावरियों की ढाणी सडक निर्माण का शिलान्यास व लोकार्पण किया। जिसे लेकर क्षेत्रीय विधायक कुलदीप धनकड ने कहाँ कि क्षेत्र के विकास के साथ लोगों की सेवा करना ही मेरी पहली प्राथमिकता है। विधानसभा क्षेत्र के सभी जर्जर एवं कच्ची सडकों का कायाकल्प किया जाएगा। क्षेत्र का सर्वांगीण विकास ही हमारा एकमात्र लक्ष्य है। कोई भी गांव विकास की रोशनी से अछूता नहीं रहेगा। सभी जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ समाज के सभी वर्गों के लोगों तक पहुंचे। उन्होंने कहा कि समाज के अंतिम पायदान पर खडे हर व्यक्ति का समुचित विकास कर उनके जीवन स्तर को बेहतर बनाना मेरा लक्ष्य है।

विराटनगर विधानसभा क्षेत्र में सांसद राव राजेन्द्र सिंह ने विकास कार्यों का शिलान्यास किया।

- जब तक गांव का विकास नहीं होगा तब तक हमारे देश का विकास नहीं हो सकता : राजेंद्र सिंह

अस्पताल में अव्यवस्थित पार्किंग

पावटा। पजिला अस्पताल पावटा में पार्किंग की व्यवस्था न होने के कारण मरीजों व उनके परिजनों को भारी परेशानियों का सामना करना पड रहा है। अस्पताल परिसर में दो पहिया और चार पहिया वाहन बिना किसी नियम के इधर-उधर खडे रहते हैं। ऐसे में गंभीर स्थिति में आने वाले मरीजों की जान जोखिम में पड जाती है। इमरजेंसी के गेट पर खडीं होने वाली बाइकें भी मरीजों के लिए परेशानी का सबब बन रही हैं। अस्पताल में पार्किंग व्यवस्था की कमी से इमरजेंसी सेवाओं पर भी इसका गंभीर असर पड रहा है। इमरजेंसी के गेट पर भी बाइकें खडी रहती हैं। जिसकी वजह से बाहर से मरीजों को लेकर आने वाली एबुलेंस के लिए जगह नहीं मिलता है। जिससे गंभीर रूप से बीमार मरीजों व सडक दुर्घटना में घायल मरीजों को समय से इलाज नहीं मिल पाता है।

भाजपा सदस्यता अभियान में टोंक जिले का नाम रोशन होगा : मेहता

टोंक। भारतीय जनता पार्टी प्रदेश महामंत्री जितेंद्र गोठवाल एवं टोंक जिलाध्यक्ष अजित सिंह मेहता ने 3 सितम्बर को टोंक सर्किट हाउस में प्रेस वार्ता को सम्बोधित किया। इस अभियान के सयोंजक सुनील जैन, सह सयोंजक रमेश गढ्वाल व गौरव चारण ने प्रदेश महामंत्री का दुप्पटा पहनाकर स्वागत किया। प्रदेश महामंत्री गोठवाल ने कहा की दिनांक 2 तारीख को माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत ही नहीं विश्व के सबसे बड़े राजनितिक दल के रूप मे स्थापित भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता लेकर इस अभियान की शुरुआत की।

गोठवाल ने कहा की पिछले 15 दिन से इस अभियान को लेकर व्यापक तैयारी की गई और कल दिनांक 3 सितम्बर को मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौर ने पार्टी की सदस्यता लेकर राजस्थान मे इस अभियान का शुभआरम्भ किया है और पिछले 24 घंटे मे 3 लाख 31 हजार लोगो ने पार्टी की सदस्यता लेकर हमारी विचारधारा का समर्थन किया है, इसके लिए मे समस्त राज्य के कार्यकर्ताओ को धन्यवाद देता हूँ।

गोठवाल ने बताया की टोंक मे भी जिलाध्यक्ष अजित सिंह मेहता के नेतृत्व मे इस अभियान को लेकर काफी तैयारी की गई है, जिला स्तरीय बैठक से लेकर इस अभियान के सयोंजक बनाये गए है और टोलियो का गठन किया गया, अब हम आज से इस अभियान को मण्डल एवं बूथ स्तर पर ले जाने का कार्य करने वाले है, हमारे दल के सविधान मे प्रत्येक 6 वर्ष मे सदस्यता लेने का नियम है और इसको लेकर प्रधानमंत्री जी और हमारे नेताओं का भाव रहता है की हम पुराने वरिष्ठ कार्यकर्ताओ के पास जाकर जाने की उनके मन मे पार्टी को लेकर क्या विचार है, हमारा भाव रहता है की हमारे कार्यकर्ताओ के मन मे क्या चल रहा वो जाने साथ ही हमें ये मालूम चल सके की हमारी सरकार की जन हितकारी योजनाओं का लाभ अंतिम पंक्ति तक पहुंच रहा है या नहीं, उन्होने कहा की जिस तरह की तैयारियां टोंक जिलाध्यक्ष अजित सिंह मेहता के नेतृत्व मे इस अभियान को लेकर की गई है और आज मे जिलाध्यक्ष मेहता के साथ स्वयं वाल्मीकी बस्ती मे इस अभियान को लेकर जा रहा हु तो मुझे पूरा भरोसा है की इस अभियान ने टोंक जिला अव्वल होगा, इस अभियान मे हम राजस्थान मे 1 करोड़ 25 लाख सदस्य बनाने जा रहे है।

टोंक में भाजपा नेता जितेन्द्र गोठवाल ने प्रेस वार्ता की।

'कार्यकर्ता संगठन को मजबूत करें'

कोटपूतली। विधानसभा चुनाव के बाद कोटपूतली की कांग्रेस में मची उठा पटक से उभरते हुये आलाकमान ने यहां के संगठन को धीरे-धीरे जागरूक व मजबुत बनाकर ब्लॉक कांग्रेस कमेटियों के गठन व आगामी पंचायती राज एवं नगरीय निकाय चुनावों की तैयारियां तेज कर दी है।

इसी क्रम में बुधवार को राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के निर्देशानुसार कोटपूतली विधानसभा क्षेत्र की ब्लॉक कांग्रेस कमेटी कोटपूतली व नारेहड़ा एवं नगर कांग्रेस कमेटी के कार्यकर्ताओं की संयुक्त बैठक कस्बा स्थित मोरीजावाला धर्मशाला में जयपुर जिला देहात कांग्रेस कमेटी के जिलाध्यक्ष व पूर्व विधायक गोपाल मीणा के मुख्य आतिथ्य एवं पूर्व विधायक रामचन्द्र रावत की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में ब्लॉक कांग्रेस कमेटियों के संगठन को सर्वसम्मति से गठित करने हेतु आलाकमान को प्रस्ताव भेजने एवं कोटपूतली की जनसमस्याओं के लिये आन्दोलन किये जाने का निर्णय लिया गया। बैठक को सम्बोधित करते हुये मुख्य अतिथि मीणा ने कहा कि कार्यकर्ता एकजुट होकर पार्टी के संगठन को मजबुत करें। कांग्रेस पार्टी जमीन से जुड़े कार्यकर्ता को आगे बढ़ाने का कार्य करेगी। उन्होंने लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को कोटपूतली में मिली शानदार बढ़त पर आभार व्यक्त करते हुये कार्यकर्ताओं व चुनाव संचालन समिति का धन्यवाद् ज्ञापित किया। उन्होंने कहा कि सभी रिक्त पदों पर जल्द ही नियुक्ति होगी। कार्यकर्ताओं के हितों को दबाया नहीं जायेगा। जिला प्रभारी आर.सी. चौधरी ने कहा कि कांग्रेस कार्यकाल में कोटपूतली को जिला बनाया गया। कांग्रेस पार्टी ने कोटपूतली को बहुत कुछ दिया है। संचालन कमेटी ने जो 11 सदस्यों की कमेटी का गठन संगठन के लिये किया है। उसी के प्रस्ताव का प्रदेशाध्यक्ष द्वारा अनुमोदन करवाकर ब्लॉक कमेटियों का गठन किया जायेगा। कार्यकारी जिलाध्यक्ष राजेन्द्र यादव ने संगठनात्मक गतिविधियों की जानकारी दी। अध्यक्षता करते हुये पूर्व विधायक रामचन्द्र रावत ने कहा कि आलाकमान कोटपूतली के संगठन को जिला कार्यकारिणी में जगह दें।

दूसरे दिन भी जारी रहा संत का अनशन

मालपुरा (निसं)। टोडारायसिंह मे राज्य सरकार की बजट घोषणा मे स्वीकृत उपजिला स्वास्थ्य केन्द्र भवन निर्माण के लिये चिन्हित भूमि पर चल रही निस्काम गौशाला को हटाये जाने के विरोध में एकजुट हुये संत व गौभक्तो ने एसडीएम कार्यालय के सामने मंगलवार को धरना प्रदर्शन कर अनशन शुरू किया जो बुधवार को भी जारी रहा। टोडारायसिंह मे जुटे गौभक्तो व संतो ने बताया कि वो अस्पताल भवन बनाने के विरोध मे नही है। उनका विरोध उक्त स्थान से गौशाला को हटाने का है। लम्बे समय से निराश्रित व असहाय गौमाता की सेवा के लिये गौशाला का संचालन किया जा रहा है। लेकिन स्थानीय प्रशासन गौशाला को हटाकर वहां अस्पताल भवन बनाने की जिद्द पर अडा हुआ है। जिसका उन्होने विरोध कर प्रदर्शन किया। दो दिन से अनशन व धरने पर बैठे संत व गौसेवक तभी उठेगें जब उन्है प्रशासन गौशाला को कोई नुकसान नही पहुंचाने तथा यथा स्थिति मे गौशाला संचालन का लिखित मे आश्वासन नही देगा तब तक धरना व अनशन जारी रहेगा।

'हर बूथ पर 20000 नए सदस्य बनाने का लक्ष्य'

दौसा। दौसा जिले में बुधवार को भाजपा सदस्यता महा अभियान 2024 का भव्य शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर भाजपा के संभाग प्रभारी और राज्यसभा सांसद नारायण पंचारिया ने अभियान की मुख्य बातें साझा कीं।

पंचारिया ने बताया कि इस अभियान का उद्देश्य प्रत्येक बूथ पर 20,000 नए सदस्य बनाने का है। वर्तमान में हर बूथ पर 10,000 सदस्य है और अब इसे दोगुना करके 20,000 करने का लक्ष्य रखा गया है। इससे भाजपा का सदस्य संख्या सवा करोड तक पहुंचने का अनुमान है। उनका कहना था कि भाजपा को दुनिया की नंबर एक पार्टी बनाने के हमारे रिकॉर्ड को इस बार हम ही तोडने जा रहे हैं। राजस्थान के 6 विधानसभा क्षेत्रों में होने वाले उपचुनावों में भाजपा को विजयी बनाने के लिए पार्टी ने योजनाओं पर काम शुरू कर दिया है। हर घर में जाकर कार्यकर्ता लोगों को राष्ट्रभक्ति और मोदी से जोडेंगे। पंचारिया ने जोर देते हुए कहा कि 2047 में एक विकसित भारत बनाने का आ ान करेंगे और भाजपा के लिए मतदान कराएंगे।

- 'इस अभियान का उद्देश्य प्रत्येक बूथ पर 20,000 नए सदस्य बनाने का है। वर्तमान में हर बूथ पर 10,000 सदस्य हैं और अब इसे दोगुना करके 20,000 करने का लक्ष्य रखा गया है'

उन्होंने आरक्षण के मुद्दे पर कहा कि केवल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ही संविधान और आरक्षण की रक्षा कर सकते हैं और कांग्रेस पर हमला करते हुए कहा कि कांग्रेस ने अंबेडकर की संसद में मूर्ति नहीं लगने दी थी। पत्रकार वार्ता में भाजपा युवा मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष अंकित चेची, भाजपा जिला अध्यक्ष डॉ. प्रभु दयाल शर्मा, भाजपा जिला प्रभारी संजय नरूका, सदस्यता अभियान जिला संयोजक राजेंद्र शर्मा, जिला मीडिया संयोजक दीपक जोशी भी मौजूद थे।

प्रधानाचार्य व शारीरिक शिक्षकों में खिंची बांहे

मालपुरा (निस) राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय चांदसेन मे पदस्थापित प्रधानाचार्य किशनलाल टेलर के समर्थन में उतरे मालपुरा ब्लॉक के सभी प्रधानाचार्यो ने ब्लॉक शिक्षा अधिकारी मंजू मीणा को ज्ञापन सौंप शारीरिक शर्मा जयमाला शर्मा पर आदेशों की अवहेलना का आरोप लगाते हुये अनुशासनात्मक कार्यवाही की मांग की।

ब्लॉक के शारीरिक शिक्षकों ने शिक्षक जयमाला को मानसिक रूप से प्रताडित करने का आरोप लगाते हुये प्रधानाचार्य किशनलाल टेलर का ब्लॉक स्तर पर होने वाले सम्मान को रद्द करने की मांग की। शिक्षा के मंदिर में नोनीहाल बच्चों को शिक्षा की राह पर चलने का संदेश देने वाले प्रधानाचार्य व युवा खिलाडी प्रतिभाओं को तरासने का कार्य करने वाले शारीरिक शिक्षकों के एक-दूजे पर आरोप-प्रत्यारोप लगा आपस मे बांहे खेंच लेने का मामला संयुक्त शिक्षा निदेशक अजमेर संभाग कार्यालय तक पहुंचने का मामला आया सामने। राजस्थान शारीरिक शिक्षक संघ टोंक की मालपुरा शाखा के ब्लॉक अध्यक्ष सुरेश शर्मा,उपाध्यक्ष राकेश चौधरी सहित महेन्द्र शर्मा, हिमांशु गालव, रेणु खंगार,निखिल नामा,अक्षय शर्मा, नाथी जाट सहित बडी संख्या मे जुटे शारीरिक शिक्षको ने संयुक्त निदेशक के नाम सीबीईईओ को सौंपे गये ज्ञापन में अवगत करवाया कि प्रधानाचार्य किशनलाल टेलर द्वारा शारीरिक शिक्षिका जयमाला शर्मा को मानसिक रूप से प्रताडित करने को लेकर पूर्व में विभाग के समक्ष शिकायत दर्ज करवाये जाने पर ठोस कार्यवाही नही होने पर 23 अगस्त को जिला शिक्षा अधिकारी को ज्ञापन प्रेषित कर निष्पक्ष जांच व कार्यवाही की मांग की गई थी। जो कि जांच विचाराधीन है। ऐसे में किशनलाल टेलर को शिक्षक दिवस पर आयोजित ब्लॉक स्तरीय समारोह मे सम्मानित किया जाना न्याय संगत नही है। तो वही ब्लॉक के प्रधानाचार्यो ने सौंपे ज्ञापन मे शारीरिक शिक्षक जयमाला पर अधिकारियो के आदेशो की अवहेलना करने का आरोप लगा कार्यवाही की मांग की। जिस पर जयमाला शर्मा ने सीबीईईओ को अवगत करवाया कि जानबुझकर किशनलाल टेलर द्वारा मामले को तूल देते हुये उनकी छविं धुमिल करने का षडयंत्र रचा जा रहा है। एक महिला को मानसिक रूप से प्रताडित करने का सिलसिला नही रोका गया तो मामले की शिकायत महिला आयोग व पुलिस थाने तक भी करने पर विवश होना पडेगा। जिस व्यक्ति के विरूद्ध विभागीय जांच विचाराधीन हो उसे ब्लॉक स्तर पर सम्मानित करना नियमो के विरूद्ध है।

प्रधानाचार्य की मानसिक प्रताड़ना के विरूद्ध शारीरिक शिक्षकों ने सीबीईईओ मंजू मीणा को ज्ञापन सौंपा।

- संयुक्त निदेशक अजमेर संभाग तक पहुंचा मामला
- सीबीईईओ मंजू मीणा को ज्ञापन सौंप की कार्यवाही की मांग

सार-समाचार

'स्वास्थ्य के साथ किसी भी प्रकार का खिलवाड़ नहीं'

कोटपूतली। कोटपूतली-बहरोड़ जिला कलेक्ट्रेट कार्यालय में बुधवार को जिला कलेक्टर कल्पना अग्रवाल की अध्यक्षता में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में जिला कलेक्टर कल्पना अग्रवाल द्वारा विभागीय योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की गई। जिला कलेक्टर ने जिले में टीकाकरण में कम प्रगति वाले चिकित्सा संस्थान के प्रभारियों के विरुद्ध कार्यवाही करने के निर्देश दिये। उन्होंने गर्भवती महिलाओं का समय पर पंजीकरण करने एवं जेएसवाई व राजश्री योजना का भुगतान करने के निर्देश दिये। सीएमएचओ डॉ. आशीष सिंह शेखावत ने बताया कि मौसमी बीमारियों को देखते हुए क्षेत्र में एंटीलार्वा गतिविधि एवं फोगिंग कार्य करवाया जा रहा है। आरसीएचओ डॉ. अरविंद अग्रवाल ने समय पर गर्भवती महिलाओं का पंजीकरण एवं बच्चों के पूर्ण टीकाकरण करवाने के बारे में अवगत करवाया। डीएनओ रविकान्त जाँगिड़ ने प्रजेंटेशन के माध्यम से विभागीय योजनाओं की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। बीसीएमओ द्वारा क्षेत्र में करवाई जा रही फोगिंग एवं एंटीलार्वा गतिविधि की जानकारी दी गई। इस दौरान जिले के समस्त प्रमुख चिकित्सा अधिकारी, बीसीएमओ, सीएचसी एवं पीएचसी प्रभारी मौजूद रहे।

'किसान सीख सकेंगे उन्नत खेती के गुर'

अलवर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की बजट घोषणा वर्ष 2024-25 के तहत किसानों की क्षमता वृद्धि हेतु नॉलेज एनहांसमेंट प्रोठाम अन्तर्गत प्रथम चरण में 100 प्रगतिशील युवा कृषकों चयन कर इजरायल सहित अन्य देशों में प्रशिक्षण एवं भ्रमण हेतु भेजा जायेगा। इसके लिए किसान 10 सितम्बर तक राजकिसान साथी पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। उद्यान विभाग के उप निदेशक उद्यान कन्हैया लाल मीना ने बताया कि प्रशिक्षण में भाग लेने के लिए प्रदेश के 10 कृषि संभागों से कृषि एवं डेयरी में विशेष उपलब्धि के लिए पहचान बनाने वाले सम्मानित कृषकों का चयन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि प्रशिक्षण में किसानों को कम भूमि और कम पानी में पॉली हाउस व ऑफ सीजन में बेहतर खेती एवं पशुपालन के तरीके सीखाए जाएंगे। निर्धारित योग्यता एवं मापदण्ड को पूर्ण करने वाले जिले के किसान कार्यालय उप निदेशक उद्यान विभाग अलवर में सम्पर्क करें। उन्होंने बताया कि कृषि क्षेत्र में चयन हेतु कृषक के पास कम से कम एक हैक्टेयर कृषि भूमि का भूस्वामित्व होना आवश्यक है। कृषक विगत 10 वर्षों से लगातार अपनी कृषि भूमि पर खेती कर रहा हो, कृषक द्वारा उच्च कृषि तकनीक (संरक्षित खेती, सूक्ष्म सिंचाई, मल्चिंग, सौर ऊर्जा पम्प, ड्रोन, फर्टिगेशन, ऑटोमेशन, फार्म पौंड/डिग्गी) अपनाई जा रही हो, कृषक का कृषि विभाग द्वारा जिला/राज्य स्तरीय पुरस्कार हेतु चयन किया गया हो, कृषक पंचायती राज संस्था, सहकारी संस्था, वाटर यूजर एसोसिएशन, कृषि मंडी आदि में विगत 10 वर्षों में किसी पद पर रहा हो या एफपीओ का सदस्य हो, कृषक की आयु 50 वर्ष से कम हो, कृषक के विरूद्ध पूर्व/वर्तमान में संज्ञेय अपराध के प्रकरण लंबित न हो, कम से कम माध्यमिक स्तर की शैक्षिणक योग्यता धारक हो, कृषक के पास वैध पासपोर्ट हो। इसी प्रकार दुग्ध उत्पादक/पशुपालन क्षेत्र में चयन हेतु कृषक वास्तविक रूप से कम से कम 20 गाय/भैंस की डेयरी या 10 ऊंट या 50 भेड/बकरी का स्वामित्व रखता हो, कृषक विगत 10 वर्षों से डेयरी या पशुपालन के पेशे से जुडा हो।

डीजल चोरी करने का आरोपी पकड़ा

टोंक। जिला पुलिस अधीक्षक संजीव नैन के द्वारा चलाये गये अपराधियों की धरपकड विशेष अभियान के निर्देशन में वृताधिकारी निवाई मृत्युजंय मिश्रा एवं थानाधिकारी निवाई हरिराम वर्मा ने विशेष दल का गठन कर कस्बा निवाई व एनएच 52 बाईपास निवाई पर खडे वाहनों से डीजल चोरी करने वाली गैग के एक सदस्य उगमता उर्फ राहुल पुत्र रामस्वरूप उर्फ गोपाल जाति मोग्या उम्र 24 निवासी हिगौटिया हाल पांचकुआ कच्ची बस्ती निवाई को डीजल चोरी करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया। थानाधिकारी निवाई हरिराम ने बताया कि बालाजी रेस्टोरेन्ट निवाई बाईपास के बाहर खडे वाहनों से डीजल चोरी करने वाली गैग ने करिबन 500 लीटर डीजल चोरी कर गैग के आरोपियों की तलाश शुरू करने पर पूर्व में भी दो आरोपियों को गिरफ्तार किया जा चुका है। आरोपी उगमता उर्फ राहुल मोग्या से पूछताछ के दौरान उसने चोरी/लूट/नकबजनी जैसी वारदात को गैग के अन्य सदस्यों के साथ मिलकर करना स्वीकार किया। पूर्व में भी इसके खिलाफ चोरी व नकबजनी के कई प्रकरण अलग-अलग जगह दर्ज है।

नगर परिषद वार्ड 17 के चुनाव स्थगित

दौसा। दौसा नगर परिषद के वार्ड 17 के आगामी चुनाव को 5 सितंबर के लिए स्थगित कर दिया गया है। राज्य निर्वाचन आयोग के निर्देश पर एसडीएम ने यह निर्णय लिया। इस सूचना के बाद सांसद मुरारी लाल मीणा और कांग्रेस कार्यकर्ता आक्रोषित हो गए और कलेक्ट्रेट जाकर कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा। सांसद मुरारी लाल मीणा ने भाजपा पर आरोप लगाया कि वह प्रजातंत्र का गला घोंट रही है। उन्होंने कहा कि भाजपा को यहां जमानत जब्त होती और आगामी डेढ महीने बाद विधानसभा उपचुनाव भी होने वाले हैं। उनके अनुसारए भाजपा ने हार की संभावना को देखते हुए चुनाव स्थगित करवाए हैं। कांग्रेस जिलाध्यक्ष रामजीलाल ओड ने भाजपा की आलोचना करते हुए कहा कि भाजपा माहौल बिगाड रही है और उनकी गुंडागर्दी को किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। कांग्रेस मीडिया प्रभारी उमाशंकर बनियाना ने बताया कि इसके विरोध में सभी कांग्रेस कार्यकर्ता गुरुवार को सुबह 10० बजे शहीद स्मारक पर जाकर गिरफ्तारियां देंगे। यह प्रदर्शन भाजपा के खिलाफ उनके विरोध और आक्रोश को व्यक्त करने का एक तरीका होगा।

शिक्षक सम्मान समारोह आज

दौसा। स्कूल क्रांति संघ के तत्वावधान में शिक्षक दिवस के अवसर पर शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन 5 सितंबर को सुबह 11 बजे राष्ट्रीय बाल शिक्षण केंद्र पीजी कॉलेज के पीछे फलसा वाले बालाजी के पास किया जाएगा। तहसील अध्यक्ष मनोज हरितवाल ने बताया कि इस अवसर पर जिले के शिक्षाविदों का सम्मान किया जाएगा। जिला प्रभारी सत्यनारायण शर्मा ने बताया कि कार्यक्रम में शिक्षा के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य करने पर सेवानिवृत्त शिक्षाविदए सेवारत शिक्षाविद एवं निजी क्षेत्र के संचालक जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में दौसा का नाम अग्रणी किया उनका सम्मान किया जाएगा। जिला अध्यक्ष सुभाष चंद्र बोहरा ने बताया कि इस अवसर पर पूर्व विधायक शंकर शर्मा दौसा, आईएएस सुमेरसिंह गुर्जर ;प्रमुख शासन सचिव पंजाब सरकार, भाजपा जिला अध्यक्ष डॉ पी डी शर्मा, आरपीएससी के पूर्व सदस्य विनोद बिहारी शर्मा, लोकेश शर्मा ;संयोजक कार्यालय निर्माण समिति भाजपा, मंजू सीताराम मीणा ;शहर अध्यक्ष महिला कांग्रेस दौसा, कल्पना जैमन ;उप सभापति नगर परिषद, समाजसेवी संजय खंडेलवाल, स्कूल शिक्षा परिवार के जिला अध्यक्ष अनिल कुमार शर्मा, स्वयंसेवी शिक्षण संस्था संघ के जिला अध्यक्ष देवी सहाय शर्मा कार्यक्रम में अतिथि होंगे।

निःशुल्क कृत्रिम अंग मिलेंगे

कोटपूतली। दिव्यांगजनों के लिए एडिप योजना के तहत कृत्रिम अंग निःशुल्क प्रदान करने के लिए लिए शिविर लगाया जाएगा। शिविर में आने वाले दिव्यांगों को कोई परेशानी ना हो इसके लिए ऑन द स्पॉट जांच की सुविधा रहेगी। इस शिविर का आयोजन आशान्वित ब्लॉक नीमराना में 5 सिंतबर को होगा। इसमें दिव्यांगों को कृत्रिम अंग भी उपलब्ध कराया जाएगा। दिव्यांगजनों को उपलब्ध कराया जाएगा कृत्रिम अंग - जिला समाज कल्याण अधिकारी रमेश दहमीवाल ने जानकारी देते हुए बताया कि एसआर ट्रस्ट रतलाम के द्वारा एडिप योजना के तहत दिव्यांगजन को ऑन द स्पॉट निःशुल्क जांच एवं वितरण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। यह संस्था भारतीय कृत्रिम अंग निर्माण निगम (एलिम्को) कानपुर के सहयोग से दिव्यांगजनों को उच्च कोटि का कृत्रिम हाथ, कृत्रिम पैर एवं कैलीपर इत्यादि उपकरण निःशुल्क प्रदान करेगी। इस शिविर में जांच के साथ ही उसी दिन कृत्रिम अंग और कैलीपर प्रदान किया जाएगा।

मैंने स्पिनरों के खिलाफ अपने डिफेंस पर थोड़ा और काम किया है। जब आप स्पिनरों के खिलाफ 'टर्निंग' पिच पर खेल रहे होते हैं तो आपका डिफेंस अच्छा होना चाहिए जिससे आप रन बनाने वाले शॉट खेल सकते हैं। - **भारतीय क्रिकेट टीम के उपकप्तान शुभमन गिल**

बांग्लादेश के खिलाफ टेस्ट सीरीज से पहले बोले...

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

अजीत सिंह

भारतीय एथलीट अजीत सिंह ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए पेरिस पैरालंपिक की भाला फेंक एफ46 वर्ग की स्पर्धा में रजत पदक और हमवतन सुंदर सिंह गुजर ने कांस्य पदक जीता। मंगलवार देर रात हुये मुकाबले में अजीत सिंह ने 65.62 मीटर के सर्वश्रेष्ठ थ्रो के साथ रजत पदक अपने नाम किया। स्पर्धा के दौरान सुंदर सिंह गुर्जर 64.96 मीटर के अपने चौथे थ्रो के बाद दूसरे स्थान पर थे, लेकिन अजीत सिंह ने वापसी करते 65.62 मीटर का थ्रो करते हुए दूसरा स्थान हासिल किया। उन्होंने कहा, मेरा ध्यान स्वर्ण पर नहीं था, मैं बस कोई भी पदक जीतना चाहता था, इसलिए मैं बहुत खुश हूं।

क्या आप जानते हैं ?... सचिन तेंदुलकर दांये हाथ के बल्लेबाज तथा दांये हाथ के गेंदबाज हैं लेकिन वे बांये हाथ से लिखते हैं।

सचिन खिलाड़ी ने पुरुषों की गोला फेंक इवेंट में जीता सिल्वर मेडल

भारत को झोली में आया 21वां पदक

नयी दिल्ली, 4 सितम्बर। भारत को पेरिस पैरालंपिक 2024 के सातवें दिन सचिन खिलाड़ी ने भारत को 21वां मेडल दिलाया। 34 वर्षीय सचिन ने पेरिस पैरालंपिक में डेब्यू पर ही कमाल कर दिया। उन्होंने मेंस शुटपुट 46 इवेंट का सिल्वर मेडल जीत इतिहास रचा है।

फाइनल मुकाबले में कनाडा के डिफेंडिंग चैंपियन ग्रेग स्टीवर्ट के साथ सचिन की कड़ी टक्कर देखने को मिली। दोनों ने अपने 6 प्रयासों में कई बाद 16 मीटर की बाधा को पार किया। आखिर में स्टीवर्ट ने गोल्ड मेडल जीता। क्रोएशिया के लुका बेकोविक ने 16.27 मीटर के अपने व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रयास के साथ ब्रॉन्ज मेडल जीता।

सचिन ने इससे पहले 2023 और 2024 में दो बार गोल्ड मेडल जीता। साथ ही हांग्जो में एशियाई पैरा खेलों के गोल्ड मेडलिस्ट भी रहे। जिससे पेरिस में उन्हें गोल्ड मेडल का दावेदार माना जा रहा था। सचिन ने अपने दूसरे प्रयास में 16.32 मीटर का रिकॉर्ड बनाया।

महाराष्ट्र के सांगली में जन्में सचिन के बाएं हाथ में हरकत सीमित है। 9 साल की उम्र में साइकिल से गिरने से हाथ में फ्रैक्चर हो गया और बाद में गैंग्रीन की वजह से

उनके हाथ का मूवमेंट प्रभावित हो गया।

सचिन जब कॉलेज में थे तब से ही भाला फेंकना शुरू कर दिया था। बाद में राष्ट्रीय स्पर्धाओं में गोल्ड मेडल जीतने। 2019 में उन्हें कंधे में चोट लग गई, जिसके कारण उन्हें जैवलिन थ्रो को छोड़ना पड़ा। कोच सत्य नारायण से बातचीत के बाद उन्होंने शॉट पुट में हाथ आजमाया। अपने मौजूदा कोच अरविंद चव्हाण के मार्गदर्शन में सचिन ने शॉट पुट में कई रिकॉर्ड तोड़े, जिसे बुधवार को पैरालंपिक में सिल्वर मेडल जीतने के साथ नया मुकाम मिला।

हालांकि, सचिन पढ़ाई में अच्छे थे, जिससे उनके पिता उन्हें इंजीनियर बनाना चाहते थे। फिर उन्होंने 2000 के दशक के अंत में इंजीनियरिंग का एंट्रेस एग्जाम पास किया और इसके बाद पुणे के इंदिरा कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग में दाखिला लिया साथ ही मैकेनिकल इंजीनियरिंग में डिग्री भी हासिल की।

इस बीच सचिन पर कोच अरविंद चव्हाण की नजर पड़ी। जिसके बाद उन्होंने शुरुआत में सचिन को डिस्कस और जेवलिन थ्रो में ट्रेन किया और इस युवा खिलाड़ी ने 2012 में ऑल इंडिया यूनिवर्सिटी स्टेड चैंपियनशिप में जेवलिन थ्रो में 60 मीटर की थ्रो के साथ गोल्ड मेडल जीता।

2013 में यूपीएससी और महाराष्ट्र राज्य परीक्षाओं की तैयारी कनरे के कारण सचिन ने खेलों से 3 साल का ब्रेक ले लिया। यूपीएससी की तैयारी के दौरान, उन्हें रियो पैरालंपिक चैंपियन भाला फेंक खिलाड़ी देवेंद्र झाझरिया के बारे में पढ़ा और पैरा स्पर्धाओं में भाग लेने का फैसला किया। 2016 में अपनी श्रेणी के लिए वर्गीकृत होने के बाद, उन्होंने 2017 में जयपुर में पैरा नेशनल्स में 58.47 मीटर के थ्रो के साथ भाला फेंक में गोल्ड मेडल जीता।

लेकिन फिर एक वक्त आया जब महाराष्ट्र में सूखे के कारण सचिन के परिवार को भारी आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ा था। सचिन को कुछ समय के लिए एक कोचिंग में पढ़ाना शुरू किया। जेवलिन थ्रो में एफ46 श्रेणी में राष्ट्रीय चैंपियन बनने के बाद कंधे में चोट लगने के बाद सचिन ने इस खेल को छोड़ने के बारे में सोचा। जिसके बाद कोच सत्य नारायण के एक कॉल ने उन्हें शॉटपुट में प्रतिस्पर्धा करने का फैसला करने में मदद की और महाराष्ट्र के इस एथलीट ने उसी साल ट्यूनीशिया में विश्व पैरा ग्रैंड प्रिक्स में गोल्ड पदक जीता।

पुणे में हॉकी इंडिया सीनियर पुरुष अंतर विभागीय राष्ट्रीय चैंपियनशिप आज से

पुणे, 4 सितम्बर। हॉकी महाराष्ट्र पांच से 15 सितंबर तक हॉकी इंडिया सीनियर पुरुष अंतर विभागीय राष्ट्रीय चैंपियनशिप के चौथे सत्र की मेजबानी करेगा। प्रतियोगिता में 18 टीम हिस्सा लेंगी जिन्हें चार पूल में विभाजित किया गया है। यह 10 दिवसीय टूर्नामेंट पुणे के मेजर ध्यानचंद स्टेडियम में खेला जाएगा जो बेंगलुरू और नयी दिल्ली के बाद प्रतियोगिता की मेजबानी करने वाला तीसरा शहर होगा। प्रतिभागियों में दो बार का विजेता और गत चैंपियन पेट्रोलियम खेल संवर्धन बोर्ड (पीएसपीबी) तथा 2022 का विजेता रेलवे खेल संवर्धन बोर्ड (आरएसपीबी) भी शामिल है।

प्रत्येक पूल में चार टीमें शामिल होंगी जिसमें से शीर्ष दो टीम अंतिम आठ में जगह बनाएंगी। पूल ए में पीएसपीबी को आईटीबीपी केंद्रीय हॉकी टीम, भारतीय खेल प्राधिकरण, केंद्रीय सिविल सेवा संस्कृति और खेल तथा केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड के साथ रखा गया है। आरएसपीबी, अखिल भारतीय पुलिस खेल नियंत्रण बोर्ड, गुजरात खेल प्राधिकरण, हॉकी अकादमी और स्टील प्लांट्स खेल बोर्ड को पूल बी में जगह मिली है।

पूल सी में सेना खेल नियंत्रण बोर्ड होगा, भारतीय खाद्य निगम, सशस्त्र सीमा बल और तमिलनाडु पुलिस जबकि पूल डी में पंजाब नेशनल बैंक, केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ), भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) की टीमें शामिल होंगी। पहला मैच गुरुवार को स्टील प्लांट्स खेल बोर्ड और अखिल भारतीय पुलिस खेल नियंत्रण बोर्ड के बीच खेला जाएगा।

पेरिस पैरालंपिकः परमजीत पावरलिफ्टिंग मुकाबले में हारे

पेरिस, 4 सितंबर। भारतीय पैरा एथलीट परमजीत कुमार को बुधवार को पावरलिफ्टिंग 49 किलोग्राम वर्ग के मुकाबले में हार का सामना करना पड़ा है। आज यहां हुए मुकाबले में पैरा एथलीट परमजीत कुमार 150 किलोग्राम के सर्वश्रेष्ठ भार उठाने के साथ आठवें स्थान पर रहे।

अजीत ने भाला फेंक स्पर्धा में रजत और सुंदर ने कांस्य पदक जीता

पेरिस, 4 सितंबर। भारतीय एथलीट अजीत सिंह ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए पेरिस पैरालंपिक की भाला फेंक एफ46 वर्ग की स्पर्धा में रजत पदक और हमवतन सुंदर सिंह गुजर ने कांस्य पदक जीता। मंगलवार देर रात हुये मुकाबले में अजीत सिंह ने 65.62 मीटर के सर्वश्रेष्ठ थ्रो के साथ रजत पदक अपने नाम किया। स्पर्धा के दौरान सुंदर सिंह गुर्जर 64.96 मीटर के अपने चौथे थ्रो के बाद दूसरे स्थान पर थे।

पैरा साइकिलिंग में अरशद 11वें और ज्योति 16वें स्थान पर रही

पेरिस, 4 सितंबर। भारतीय पुरुष और महिला पैरा साइकिल चालक बुधवार को हुई स्पर्धाओं में क्रमशः 11वें और 16वें स्थान पर रहे। पैरासाइक्लिंग पुरुष सी2 व्यक्तिगत टाइम ट्रायल में अरशद शेख पोडियम फिनिश से चूक गए। टाइम ट्रायल राउंड में अरशद 25:20.11 के समय के साथ 11वें स्थान पर रहे। वहीं महिला पैरा साइकिलिंग सी1-3 व्यक्तिगत टाइम ट्रायल फाइनल में ज्योति गडेरिया ने किया निराशा। ज्योति ने 30:00.16 के समय के साथ 14.1 किलोमीटर की दूरी तय करके 16वां स्थान हासिल किया। पेरिस पैरालिंपिक 2024 में ज्योति का सफर अभी खत्म नहीं हुआ है। वह सात सितंबर को होने वाली सी1-3 रोड रेस में हिस्सा लेंगी।

जायसवाल ने कहा, रोहित से आप विकेट और स्थिति के अनुसार बल्लेबाजी में बदलाव करना सीख सकते हैं

बेंगलुरू, 4 सितम्बर। यशस्वी जायसवाल को लगता है कि टेस्ट करियर में नई ऊंचाइयों को छूने की उनकी उम्मीदें कप्तान रोहित शर्मा के साथ बल्लेबाजी पर टिकी हैं और उन्होंने इस अनुभव को बेहद शिक्षाप्रद बताया। पिछले साल वेस्टइंडीज के खिलाफ पदार्पण करने वाले जायसवाल ने रोहित के साथ नौ टेस्ट मैच खेले हैं और अपने कप्तान के साथ शीर्ष क्रम में सफल जोड़ी बना चुके हैं तथा कई शतकीय साझेदारियां कर चुके हैं। दलीप ट्रॉफी की पूर्व संध्या पर जायसवाल ने कहा, "जब भी मैं उनके साथ बल्लेबाजी करने जाता हूं तो यह अविश्वसनीय अनुभव होता है। उन्होंने अपने अनुभव मेरे साथ साझा करते हैं। मुझे लगता है कि जिस तरह से वह खेल को नियंत्रित करते हैं और विकेट को समझते हैं, वह बिलकुल सटीक होता है और उनसे सीखने के लिए बहुत कुछ है।"

उन्होंने कहा, "आप उनसे तेज गेंदबाजी या स्पिन के अनुकूल विकेट के हिसाब से अपनी बल्लेबाजी में बदलाव करने या एक या दो विकेट गिरने पर अपनी बल्लेबाजी बदलने जैसी चीजें सीख सकते हैं।" शीर्ष स्तर के क्रिकेट में एक साल पूरा करने वाले जायसवाल ने कहा कि पिछले 12 महीनों में वह अपने खेल के बारे में काफी जागरूक हो गए हैं। उन्होंने कहा, "अब मैं बहुत सारे परिदृश्य देख सकता हूं और टीम के लिए अपने खेल को बदल सकता हूं और परिस्थितियों को पढ़ सकता हूं। मुझे लगता है कि पिछले एक साल में ये मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण रहा है। जब मैं घरेलू क्रिकेट खेल रहा था, तो मुझे कई चीजों के बारे में पता नहीं था।"

जायसवाल ने कहा, "लेकिन जब से मैंने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट खेलना शुरू किया है, संवाद और खेल को पढ़ने की समझ में बहुत सुधार हुआ है। मैं बस सीखना जारी रखना चाहता हूं। इस 22 वर्षीय खिलाड़ी ने कहा कि नए मुख्य कोच गौतम गंभीर खिलाड़ियों का पूरा समर्थन करते हैं। उन्होंने कहा कि इससे खिलाड़ियों को अपना स्वाभाविक खेल दिखाने में मदद मिलती है। उन्होंने कहा, "हां, मैंने श्रीलंका श्रृंखला के दौरान उनसे बात की थी। उन्होंने वास्तव में हमारा समर्थन करते हुए कहा कि बस मैदान में जाओ और खुलकर खेलो और खेल का आनंद लो और हम तुम्हारे साथ रहेंगे। इससे हमें बहुत आत्मविश्वास मिलता है और हमें निडर होकर खेलने में मदद मिलती है।" बाएं हाथ के बल्लेबाज ने कहा कि वह बांग्लादेश के खिलाफ आगामी दो मैचों की श्रृंखला से पहले अपने कौशल को निखारने के लिए दलीप ट्रॉफी का इस्तेमाल एक ट्रेनिंग मंच के रूप में करना चाहते हैं।

बीसीसीआई दलीप ट्रॉफी के पहले दौर के बाद टेस्ट टीम की घोषणा कर सकती है

नयी दिल्ली, 4 सितंबर। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) पांच से आठ सितंबर तक बेंगलुरु और अनंतपुर में खेली जाने वाली दलीप ट्रॉफी के पहले दौर के बाद बंगलादेश के साथ होने वाली दो टेस्ट मैचों की श्रृंखला के लिए टीम की घोषणा कर सकता है। भारतीय टेस्ट टीम का अभ्यास सत्र चेन्नई के चेपॉक स्टेडियम में 12 सितंबर से शुरू होगा। भारत और बंगलादेश के बीच दो टेस्ट मैचों की श्रृंखला की शुरुआत 19 सितंबर से होगी। बंगलादेश का अभ्यास सत्र चेपॉक पर ही 15 सितंबर से शुरू होगा।

दलीप ट्रॉफी में शुभमन गिल, केएल राहुल, ध्रुव जुरेल, कुलदीप यादव, आकाश दीप, यशस्वी जयसवाल, सरफराज खान, ऋषभ पंत, मुकेश कुमार, श्रेयस अय्यर, अर्शदीप सिंह और केएस भरत समेत अन्य खिलाड़ी खेलते नजर आएंगे। इनके अलावा कई और ऐसे खिलाड़ी हैं जो दलीप ट्रॉफी के प्रदर्शन के आधार पर भारतीय टीम में आने की अपनी दावेदारी पेश करेंगे। इनमें देवदत्त पड़िक्कल, रजत पाटीदार, यश दयाल, बी साई सुदर्शन जैसे खिलाड़ी शामिल हैं। भारत बंगलादेश के खिलाफ दो मैचों के साथ अपने लंबे टेस्ट सत्र की शुरुआत के लिए तैयार है यह विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप (डब्ल्यूटीसी) 2023-25 का हिस्सा है। चेन्नई में पहला और कानपुर में दूसरा टेस्ट खेला जाएगा। इसके बाद भारत और बंगलादेश तीन टी-20 मैचों की सीरीज खेलेंगे। इसके बाद भारतीय टीम पांच सफेद गेंद मैचों के लिए दक्षिण अफ्रीका जाने से पहले घरेलू मैदान पर न्यूजीलैंड के साथ तीन टेस्ट खेलेगी और साल के आखिर में पांच टेस्ट मैचों के लिए ऑस्ट्रेलिया जाएगी।

आईपीएल में सालों बाद राहुल द्रविड़ की वापसी, राजस्थान रॉयल्स के हेड कोच बने

नई दिल्ली, 4 सितम्बर। टीम इंडिया के पूर्व हेड कोच राहुल द्रविड़ की सालों बाद आईपीएल में वापसी हो गई है। दरअसल, राहुल द्रविड़ को राजस्थान रॉयल्स के हेड कोच बने हैं। एक रिपोर्ट के मुताबिक द्रविड़ को आईपीएल 2025 से पहले टीम का कोच बना दिया गया है। द्रविड़न ने राजस्थान रॉयल्स के साथ एक डील साइन की है। द्रविड़ अपने आईपीएल करियर के दौरान राजस्थान टीम के कप्तान रह चुके हैं। इसके बाद वह टीम के मेंटर भी रहे।

क्रिकइंफो की एक खबर के मुताबिक राजस्थान ने द्रविड़ को हेड कोच बनाया है। उन्होंने राजस्थान के साथ एक डील साइन की है। द्रविड़ हेड कोच बनने के बाद मेगा ऑक्शन के दौरान अहम भूमिका निभाएंगे। उनका टीम के साथ काफी अच्छा रिश्ता रहा है। कप्तान संजू सैमसन भी द्रविड़ के काफी करीब रहे हैं।

बता दें कि, राहुल द्रविड़ राजस्थान रॉयल्स के मेंटर भी रहे हैं। उनका आईपीएल करियर भी शानदार रहा है। वे आईपीएल 2012 और

2013 में राजस्थान टीम के कप्तान भी रहे। इसके बाद दो साल और जुड़े रहे। इसके बाद 2016 में दिल्ली डेयरडेविल्स के साथ जुड़ गए।

मोदी ने दीप्ति, अजीत, सुंदर, शरद और मरियप्पन को पदक जीतने पर दी बधाई

नयी दिल्ली, 4 सितंबर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पेरिस पैरालंपिक की विभिन्न स्पर्धाओ में पदक जीतने वाले भारतीय एथलीट दीप्ति जीवनजी, अजीत सिंह, सुंदर सिंह गुर्जर, शरद कुमार और मरियप्पन थंगावेलु को बुधवार को बधाई दी।

मोदी ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा, पैरालिंपिक 2024 में महिलाओं की 400 मीटर टी20 स्पर्धा में कांस्य पदक जीतने पर दीप्ति जीवनजी को बधाई। वह असंख्य लोगों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत हैं। उनका कौशल और दृढ़ता सराहनीय है।

उन्होंने अन्य पोस्ट श्रृंखला में भाला फेंक स्पर्धा के विजेताओं को बधाई देते हुए कहा, अजीत सिंह की अभूतपूर्व उपलब्धि, उन्होंने पैरालिंपिक 2024 में पुरुषों की भाला फेंक एफ46 स्पर्धा में रजत पदक जीता। खेल के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और दृढ़ता ने भारत को गौरवान्वित किया है।

उन्होंने पोस्ट किया, सुंदर सिंह गुर्जर का शानदार प्रदर्शन, पैरालिंपिक 2024 में पुरुषों की भाला फेंक एफ46 स्पर्धा में कांस्य पदक जीतना। उनका समर्पण और जोश लाजवाब है। इस उपलब्धि के लिए बधाई।

प्रधानमंत्री ने ऊंची कूद स्पर्धा के विजेताओं बधाई देते हुए लिखा, शरद कुमार ने पैरालिंपिक 2024 में पुरुषों की ऊंची कूद टी 63 में रजत पदक जीता। निरंतरता और उत्कृष्टता के लिए वह प्रशंसा के पात्र है। उन्हें बधाई। वे पूरे देश को प्रेरित करते हैं।

उन्होंने पोस्ट किया, पुरुषों की ऊंची कूद टी63 स्पर्धा में कांस्य पदक जीतने पर मरियप्पन थंगावेलु को बधाई।

शरत कमल की निकट भविष्य में संन्यास की योजना नहीं

टूर पर एक और सत्र खेलेंगे

नयी दिल्ली, 4 सितम्बर। भारत के महान टेबल टेनिस खिलाड़ी शरत कमल के पांचवें ओलंपिक में हिस्सा लेने के बाद संन्यास की योजना बनाने की उम्मीद थी लेकिन 42 साल के इस खिलाड़ी ने बुधवार को पेशेवर टूर पर एक और सत्र में खेलने की प्रतिबद्धता जाहिर की। शरत को बुधवार को एशियाई चैम्पियनशिप की पुरुष टीम का कप्तान बनाया गया जो अगले महीने अस्ताना में खेली जायेगी। पेरिस ओलंपिक में भारत के ध्वजवाहक शरत ने पीटीआई से कहा कि वह सात अक्टूबर से शुरू होने वाले एशियाई चैम्पियनशिप के लिए कजाखस्तान की यात्रा से पहले इस महीने के अंत में चाइना स्मैश में भी हिस्सा लेंगे।

भारत की सर्वश्रेष्ठ 37 रैंकिंग हासिल करने वाले शरत दोहा में 2025 विश्व चैम्पियनशिप में खेलने का लक्ष्य भी बनाये हैं। इस अनुभवी खिलाड़ी ने कहा, "अगले नौ महीने से एक साल तक मैं सक्रिय खिलाड़ी बना रहूंगा। लेकिन साथ ही मैं आईओसी और आईटीटीएफ में विकल्प की तलाश करूंगा। अपने देश में टीटीएफआई के साथ एक ढांचा बनाने में मदद करने की कोशिश करूंगा ताकि साई और टीटीएफआई के

बीच अंतर कम हो सके और खेल में ज्यादा से ज्यादा कोरपोरेट प्रायोजक आयें। "

शरत अंतरराष्ट्रीय टेबल टेनिस महासंघ (आईटीटीएफ) के एथलीट आयोग में चुने जाने वाले पहले भारतीय हैं। वह भारतीय ओलंपिक संघ में एथलीट संस्था का भी हिस्सा हैं और निकट भविष्य में वह अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) के एथलीट आयोग में एक सीट हासिल करने का लक्ष्य बनाये हैं। उन्होंने 2028 ओलंपिक में हिस्सा लेने की बात खारिज की लेकिन उनके 2026 एशियाई खेलों में भाग लेने की संभावना है। उन्होंने कहा, "मैं अगले साल एशियाई खेलों पर फैसला लेना चाहूंगा। ओलंपिक के बाद मेरी फिटनेस ठीक है। मुझे थोड़ा समय भी मिला और चेन्नई में यूटीटी (अल्टीमेट टेबल टेनिस लीग) है। मैं व्यक्तिगत जिंदगी में भी संतुलन बना रहा हूं।

पाकिस्तान की हार पर छलका वसीम अकरम का दर्द

नई दिल्ली, 4 सितम्बर। पाकिस्तान क्रिकेट टीम की हार से हर पाकिस्तान आहात है। बांग्लादेश के खिलाफ दो मैचों की टेस्ट सीरीज में पाकिस्तान की भद्द पिटी है। इस सीरीज को बांग्लादेश ने 2-0 से जीता है। जिसके बाद पाकिस्तान की हार पर पूर्व दिग्गज तेज गेंदबाज वसीम अकरम का दर्द छलका है। उन्होंने कहा कि उन्हें पाकिस्तान की हार हजम नहीं हो पा रही है। वसीम अकरम का मानना है कि पाकिस्तान अच्छी स्थिति में होने के बावजूद कैसे हार गई। पाकिस्तान ने पहले टेस्ट की पहली पारी में 6 विकेट सिर्फ 26 रन पर गिरा दिए थे। हालांकि, पाकिस्तान टीम फिर से मौके को भुनाने से चूक गई।

वसीमन अकरम ने एएफपी से कहा कि, ये बहुत बड़ा झटका है और हमारा क्रिकेट दोराहे पर खड़ा है। बतौर पूर्व खिलाड़ी और कप्तान और एक खेल प्रेमी के होने के नाते मैं इस बात से शर्मिंदा हूं कि वे अच्छी स्थिति में होने के बावजूद हार गए। मैं इसे समझ नहीं पा रहा हूं। हम घरेलू मैदान पर लगातार हार रहे हैं और ये हमारे क्रिकेट की क्वालिटी के बारे में बहुत कुछ बताता है। बांग्लादेश ने पहली बार पाकिस्तान से टेस्ट सीरीज जीती है। अकरम का कहना है कि पाकिस्तान के घरेलू क्रिकेट में प्रतिभा की कमी है, जिसका काफी असर पड़ा है।

नितेश कुमार ने कहा- प्रमोद भगत की गैरमौजूदगी ने गोल्ड मेडल जीतने की 'अतिरिक्त जिम्मेदारी' दी

नई दिल्ली, 4 सितम्बर। भारत के बैडमिंटन पुरुष एकल स्वर्ण पदक विजेता नितेश कुमार ने बुधवार को कहा कि पेरिस पैरालंपिक में प्रमोद भगत की अनुपस्थिति ने उन्हें खिताब जीतने की 'अतिरिक्त जिम्मेदारी' दी। पुरुष एकल एसएलसी वर्ग में स्वर्ण जीतने वाले नितेश, तुलसीमति मुरुगेसन (रजत), सुहास यथिराज (रजत), मनीषा रामदास (कांस्य) और नित्या श्री सिवन (कांस्य) को बुधवार को यहां भारतीय खेल प्राधिकरण (साइ) के मुख्यालय में युवा मामलों और खेल मंत्री मनसुख मांडविया ने उनकी उपलब्धि के लिए सम्मानित किया।

नितेश ने कहा कि पैरा खेलों से पहले भगत को 18 महीने के लिए निलंबित किए जाने के बाद उनका मंत्र पैरालंपिक में एक समय में एक मैच पर ध्यान देना था। नितेश ने पीटीआई से खास बातचीत में कहा, "मैंने एक बार में एक मैच पर ध्यान देने के बारे में सोचा, दुनिया के नंबर एक, शीर्ष वरीय के रूप में वहां जाना, मेरे लिए खिताब जीतना एक जिम्मेदारी थी, विशेषकर तब जब प्रमोद पैरालंपिक में भाग लेने में असमर्थ थे।"

उन्होंने कहा, "भारत के लिए जीतना मेरे लिए एक अतिरिक्त जिम्मेदारी थी। फाइनल

में प्रवेश करते हुए मुझे पता था कि यह हम दोनों के लिए मानसिक रूप से कठिन होगा। मुझे उनसे बेहतर होने और अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने का विश्वास था।" खेल मंत्री मांडविया ने देश के लिए अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए भारतीय दल की सराहना की और उम्मीद जताई कि खिलाड़ी बाकी बची प्रतियोगिताओं में और पदक जीतेंगे।

उन्होंने कहा, "हम भारत का उत्साह बढ़ाएंगे और आने वाले दिनों में हमारे खिलाड़ी 11 और पदकों के लिए चुनौती पेश करेंगे। मेरा मानना है कि जिस तरह से हमारे खिलाड़ी पैरालंपिक में प्रदर्शन कर रहे हैं, उससे उनका भविष्य उज्ज्वल है।" मांडविया ने कहा, "भारत के पास पैरालंपिक में अब भी 11 और पदक जीतने का मौका है।"

तोक्यो में रजत पदक जीतने के बाद पेरिस में भी उप विजेता रहे सुहास ने जल्द ही संन्यास लेने से इनकार कर दिया। उन्होंने कहा, "रजत पदक जीतना अपने आप में एक चुनौती है। हर खिलाड़ी स्वर्ण पदक जीतना चाहता है और जब वे नहीं जीत पाते तो निराशा होती है।" सुहास ने अपने संन्यास के बारे में कहा, "जीवन एक यात्रा है और मैं इस पल को जीना चाहता हूं, खेल में अपने भविष्य के बारे में अभी ज्यादा नहीं सोचना चाहता।"

तुलसीमति ने कहा, "मैं रजत पदक से खुश हूं। मुझे लगता है कि मुझे अपने पदक का रंग बदलने के लिए और मेहनत करनी होगी।" मुख्य कोच गौरव खन्ना ने उम्मीद जताई कि अगले पैरालंपिक में भारत के पदकों की संख्या में सुधार होगा। उन्होंने कहा, "हमारा लक्ष्य आठ से 10 पदक जीतना था लेकिन हमें पांच से ही संतोष करना पड़ा। हमें उम्मीद है कि हम 2028 में अपने लक्ष्य को हासिल कर लेंगे।

नकली नोट छापने की मशीन और 24 लाख रू. के नकली नोटों की खेप पकड़ी

सूरतगढ़ के फ्लैट में छापे जा रहे थे नकली नोट, लैपटॉप, प्रिंटर सहित अन्य सामान भी जब्त

- चंडीगढ़ पुलिस के पांच अधिकारियों ने सूरतगढ़ के फ्लैट में रेड की।
- आरोपियों ने हवाला कारोबार के जरिए ही हरियाणा-पंजाब और राजस्थान के बड़े शहरों में नकली नोट चलाना कबूल किया।

श्रीगंगानगर, 4 सितम्बर निसं)। श्रीगंगानगर में नकली नोट छापने की मशीन के साथ 24 लाख रुपए के नकली नोटों की खेप पकड़ी गई है। चंडीगढ़ पुलिस की स्पैशल टीम ने ये कार्रवाई बुधवार सुबह सूरतगढ़ की ग्रीन वैली कॉलोनी के एक फ्लैट में छापा मारकर की। चंडीगढ़ पुलिस के पांच अधिकारियों ने इस रेड में 24 लाख रुपए के नकली नोटों की खेप पकड़ी है। वहीं नकली नोट बनाने में इस्तेमाल लैपटॉप, प्रिंटर सहित अन्य सामान भी जब्त किया है।

पंचकूला सैक्टर-20 थाने सब इंस्पैक्टर अनिल कुमार ने बताया कि आरोपी यहां से बड़ी संख्या में नकली नोट छापकर कई बड़े शहरों में नोटों की सप्लाई करते थे। वहीं आरोपियों के हवाला कारोबार से भी जुड़े होने की आशंका जताई जा रही है। शुरुआती पूछताछ के दौरान आरोपियों ने हवाला कारोबार के जरिए ही हरियाणा-पंजाब और राजस्थान के बड़े शहर चंडीगढ़, पटियाला, पंचकूला और श्रीगंगानगर में ये नकली नोटों को चलाना कबूल किया है। 1 सितंबर को चंडीगढ़ पुलिस की टीम ने सूरतगढ़ कस्बे के राजियासर थाना इलाके के गांव बीरमाना के रहने वाले रामचंद्र और सुजानगढ़ के रहने वाले जितेन्द्र सिंह को पूछताछ के लिए हिरासत में लिया था। दोनों ने पूछताछ के दौरान नोट छापने के इस अड्डे का खुलासा किया था।

पंचकूला (चंडीगढ़) में 3 अगस्त को रोहित भूटानी (45) नाम के एक शख्स ने पुलिस को शिकायत दी थी। रोहित ने पुलिस को बताया कि था कि वो रेडीमेड कपड़ों का कारोबार करता है। 14 जून को जितेन्द्र उर्फ जीतू नाम के एक आदमी ने 2.50 लाख रुपए कपड़ा खरीदा। इसके लिए उसने कैश पेमेंट की थी। रोहित ने बताया कि जब इससे मैंने किसी और को पेमेंट किया तो पता चला कि जितेंद्र से प्राप्त हुई सारी करंसी नकली है। इसके बाद, जब उन्होंने जितेन्द्र से संपर्क करने की कोशिश की तो पाया कि दोनों मोबाइल नंबर बंद थे। इस पर रोहित भूटानी ने पंचकूला थाने में मामला दर्ज करवाया था। इस मामले की जांच के सिलसिले में बुधवार को चंडीगढ़ पुलिस सूरतगढ़ पहुंची थी।

मु.मंत्री भजनलाल शर्मा ने अधिकारियों के साथ बुधवार को परिवर्तित बजट 2024-25 की घोषणाओं के सम्बंध में समीक्षा बैठक की। बैठक में मु.मंत्री ने स्पष्ट निर्देश दिया कि बजट की घोषणाओं को पूरा करने के संदर्भ में किसी भी स्तर पर कार्यवाही लंबित नहीं होनी चाहिये। उन्होंने कहा कि घोषणाओं को पूरा करने में अगर कोई बाधा आती है तो उन्हें चिन्हित कर उनका त्वरित निस्तारण किया जाये।

बजट घोषणाओं व लक्ष्यों को अधिकारी तय समय में पूरा करें- भजनलाल

मुख्यमंत्री ने परिवर्तित बजट की घोषणाओं की समीक्षा बैठक में अधिकारियों को निर्देश दिये

- सरिस्का, रणथम्भौर व घड़ियाल अभ्यारण्य, कोटा के ईको सैंसिटिव ज़ोन का मास्टर प्लान बनेगा।
- कैप्टिव पावर उत्पादन की सीमा 200 प्रतिशत करने तथा खुले बोरवैल रखने वाले व्यक्तियों व संस्थाओं पर सख्त कार्यवाही करने के निर्देश दिये।

जयपुर, 4 सितम्बर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने अधिकारियों को बजटीय घोषणाओं का समयबद्ध क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि अधिकारी समर्पण-निष्ठा के साथ राज्य सरकार की घोषणाओं एवं लक्ष्यों को तय समय में पूरा करें।

शर्मा बुधवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में परिवर्तित बजट वर्ष 2024-25 की घोषणाओं की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने कहा कि गुड गवर्नैंस का मॉडल स्थापित करके आमजन की सेवा करना राज्य सरकार का प्रमुख ध्येय है। बजटीय घोषणाओं के क्रियान्वयन में किसी भी स्तर पर कार्यवाही लंबित नहीं होनी चाहिए।

मुख्यमंत्री ने सरिस्का, रणथम्भौर एवं कोटा चंबल घड़ियाल अभ्यारण्य को इकोसैंसिटिव ज़ोन में चिन्हित कर मास्टर प्लान बनाने, मेडिकल कॉलेजों में हिन्दी माध्यम से शिक्षा प्रदान करने, ऊर्जा उत्पादन के लिए निजी क्षेत्र को अधिक प्रोत्साहन देते हुए कैप्टिव पावर उत्पादन की सीमा को 200 प्रतिशत करने, स्टेट कैरिज वाहनों के लिए उप नगरीय श्रेणी के 40 नए मार्ग बनाने, जैसी कई बजट घोषणाओं की समीक्षा कर उचित दिशा-निर्देश प्रदान किए। उन्होंने नगरीय विकास विभाग को जयपुर मैट्रो के विस्तार के लिए जॉइन्ट वेंचर कंपनी पर शीघ्र कार्य करने के निर्देश दिए। शर्मा ने वित्त विभाग को स्मार्ट सिस्टम के अंतर्गत ऑटोमेटेड सर्विस डिलिवरी सुविधा शीघ्र शुरू करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि इस सिस्टम के माध्यम से आमजन को 25 सेवाएं 24 घण्टों की सीमा में उपलब्ध करवायी जाएंगी। उन्होंने सफाई कर्मचारियों के लिए आर.जी.एच.एस. के अंतर्गत लंग्स, किडनी एवं स्किन आदि से संबंधित बीमारियों से संबंधित नि:शुल्क विशेष पैकेज शीघ्र शुरू करने के निर्देश दिए।

शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश में औद्योगिक निवेश का अनुकूल माहौल बनाने के लिए कार्य कर रही है। ऊर्जा भण्डारण नीति-2024 एवं नई पर्यटन नीति के साथ-साथ बजट में भी अन्य कई महत्वपूर्ण नीतियों की घोषणा की गई है। जयपुर में 9 से 11 दिसम्बर तक आयोजित होने जा रहे "राइजिंग राजस्थान" समिट के परिप्रेक्ष्य में इन नीतियों को शीघ्र ही अंतिम रूप प्रदान किया जाए।

मुख्यमंत्री ने जन स्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग को प्रदेश में खुले बोरवेल रखने वाले व्यक्तियों एवं संस्थाओं के विरूद्ध सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि खुले बोरवेल से जनहानि का खतरा रहता है। ऐसी कई घटनाएं प्रदेश के कई अंचलों में हो चुकी हैं। उन्होंने कहा कि इन घटनाओं की प्रभावी रोकथाम के लिए विभागीय दल नियमित निरीक्षण करें और खुले बोरवेल रखने वालों पर सख्त कार्रवाई करें। विभागीय शासन सचिव श्री समित शर्मा ने मुख्यमंत्री को अवगत कराया कि खुले बोरवेल पर निगरानी एवं कार्रवाई करने के लिए ऑनलाइन पोर्टल विकसित किया जा रहा है। बैठक में मुख्य सचिव सुधांश पंत, मुख्यमंत्री के अतिरिक्त मुख्य सचिव शिखर अग्रवाल एवं प्रमुख शासन सचिव आलोक गुप्ता सहित विभिन्न विभागों के अतिरिक्त मुख्य सचिव, प्रमुख शासन सचिव, शासन सचिव एवं वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे।

'होम लोन के ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

ने इंदिरा गांधी नगर में वर्ष 2010 में आवास खरीदा था। एस.बी.बी.जे. बैंक की ओर से उसे 10.69 लाख रुपए का लोन स्वीकृत किया गया। साथ ही, होम लोन के बीमा कवर के रूप में 1.34 लाख रुपए की कटौती की गई। इस दौरान परिवादी को आश्वस्त किया गया कि यदि वह बीमा नहीं चाहेगा तो यह राशि उसे लौटा दी जाएगी। परिवाद में कहा गया कि परिवादी ने जनवरी, 2011 में लोन की पहली किस्त का भुगतान कर दिया। जब परिवादी ने बीमा कवर के रूप में काटी राशि लौटाने को कहा तो उसे बीमा पॉलिसी बॉन्ड की कॉपी भेज दी गई। परिवादी ने बीमा पॉलिसी के संबंध में असहमति जता दी। परिवाद में कहा गया कि बाद में, बीमा कवर के रूप में काटे गए उसके 1.34 लाख रुपए के बजाए 92,941 रुपए ही तीस मई, 2011 को लौटाए गए। इस प्रकार परिवादी से 41,059 रुपए की अवैध रूप से कटौती की गई है।

मामले पर सुनवाई करते हुए आयोग ने काटी गई राशि ब्याज सहित लौटाने के आदेश देते हुए बीमा कंपनी पर हर्जाना लगाया है।

राजस्थान पुलिस...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जाने से रह गए थे। उन्होंने बताया कि उत्कृष्ट खिलाड़ियों संबंधी स्पष्टीकरण को इन सेवा नियमों में शामिल करने के लिए नियमों में संशोधन के प्रारूप का आज मंत्रिमंडल की बैठक में अनुमोदन किया गया।

जैसलमेर : दलित युवती से पांच युवकों ने सामूहिक दुष्कर्म किया

- गैंगरेप के चार आरोपी युवकों को पकड़ा, एक युवक की तलाश जारी।
- युवती बाहरी जिले की है और जैसलमेर में किराये के कमरे में पढ़ाई कर रही है।

जैसलमेर, 4 सितम्बर (निसं)। जैसलमेर के महिला थाना क्षेत्र में एक युवती ने बुधवार को गैंगरेप का मामला दर्ज करवाया है। युवती ने 28 अगस्त की रात पांच युवकों द्वारा उसे जैसलमेर लाकर किसी जगह पर नशा करवाकर उसके साथ रेप करने का आरोप लगाया है। महिला थाने ने दलित युवती के साथ गैंगरेप का मामला दर्ज कर चार आरोपी युवकों को पकड़ लिया गया है, वहीं एक युवक की तलाश जारी है।

महिला अपराध प्रकोष्ठ की ए.एस.पी. प्रियंका कुमावत ने बताया कि युवती बाहरी जिले की है और जैसलमेर में पढ़ाई कर रही है। युवती ने पांच युवकों पर जैसलमेर के किसी गांव से उसे जैसलमेर शहर लाकर नशा करवाकर उसके साथ गैंगरेप करने का आरोप लगाया है। प्रियंका कुमावत ने बताया कि हमने मामला दर्ज कर लिया है और चार युवकों को पकड़ लिया है। एक युवक की तलाश जारी है। ए.एस.पी. राजेश शर्मा इस मामले की जांच कर रहे हैं। प्रियंका कुमावत ने बताया कि युवती जैसलमेर के सदर थाना क्षेत्र के एक गांव में पढ़ाई कर रही है और गांव में ही कमरा किराये पर लेकर अकेली रहती है।

दो सितंबर को युवती नशे की हालत में ग्रामीणों को गांव में मिली थी। उसे सदर थाना पुलिस द्वारा हॉस्पिटल लाकर इलाज करवाया गया। उसे इलाज के बाद सखी केन्द्र में रखा गया। युवती के परिजनों के आने के बाद युवती ने गांव के ही पांच युवकों पर 28 अगस्त को उसके साथ गैंगरेप करने की शिकायत की। परिजनों द्वारा पुलिस को इसकी जानकारी दिये जाने के बाद बुधवार को महिला थाना पुलिस में युवती से गैंगरेप का मामला दर्ज करवाया गया है।

जनता नाखुश ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

बंगाल की जनता बहुत ज्यादा आक्रोशित एवं आवेशित थी तथा इस निर्णय पर बहुत निराश एवं हताश थी।

सर्वोच्च न्यायालय ने रेप और हत्या के इस केस को कलकत्ता उच्च न्यायालय से स्वप्रेरणा से ही अपने हाथों में लिया था।

चूँकि सर्वोच्च न्यायालय ने इस केस को अपने हाथ में ले लिया था, इसलिए कलकत्ता उच्च न्यायालय में चल रही सुनवाई रोक दी गई। इन परिस्थितिथियों में, केस को आगे के लिए टाल देने का निर्णय बहुत बड़ी एवं गहरी चिन्ता का विषय बन गया है। जिस तरह से इस केस को दबाया या टाला जा रहा है, उसे लेकर लोग गहरी निराशा व्यक्त कर रहे हैं।

जो भी हो, रवीन्द्र नाथ टैगोर लोगों के मुख्य हथियार बने हुए हैं तथा कवीन्द्र रवीन्द्र के बहुत से गीत विरोध-प्रदर्शन के विभिन्न स्थलों पर गूँज रहे हैं। बहुत-से बुद्धिजीवी, अग्रणी अभिनेता तथा अभिनेत्रियाँ अब इन विरोध-प्रदर्शनों का हिस्सा बन गए हैं।

जनसामान्य के झुंड के झुंड डॉक्टरों तथा नर्सों से लेकर पैरा-मेडिकल स्टाफ व अन्य प्रोफेशनल्स के विरोध-प्रदर्शनों से जुड़ते जा रहे हैं।

पेरिस पैरालिंपिक की तीरंदाजी स्पर्धा में हरविंदर सिंह ने गोल्ड मैडल जीत लिया है। पैरालिंपिक के इतिहास में भारत ने पहली बार तीरंदाजी स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता है। बुधवार को मेन्स इंडिविजुअल रिकर्व ओपन के फाइनल मे 33 वर्षीय हरविंदर ने पोलैण्ड के लुकाज सिजेक को 6-0 से हराया। मौजूदा पैरालिंपिक गेम्स में भारत का ये चौथा गोल्ड मैडल है। हरविंदर के गोल्ड मैडल के साथ ही भारत के पदकों की संख्या अब 22 हो गई है। भारत अब तक 4 गोल्ड, 7 सिल्वर और 11 ब्रॉन्ज़ मैडल जीत चुका है।

दो राज्य, एक संकट...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उन्होंने इन दोनों से निवेदन किया कि बाढ़ से हुई तबाही को प्राकृतिक आपदा के रूप में लिया जाये। केन्द्र ने तुरन्त सक्रिय होते हुये, लोगों को बचाने हेतु 10 एन.डी.आर.एफ. टीमें, 40 पॉवर वोट तथा 6 हेलिकॉप्टर उपलब्ध करा दिये। और अब पड़ोसी राज्य तेलंगाना की स्थिति कभी नायडू के शिष्य एवं सहकर्मी रहे, कांग्रेस नेता तथा राज्य के मुख्यमंत्री रैवन्त रेड्डी ने नायडू से मदद का अनुरोध करते हुये कहा कि उन स्थानों पर राहत-सामग्री भेजें, जहाँ तेलंगाना प्रशासन नहीं पहुँच सकता तथा मुख्यमंत्री स्वयं राज्य में बचाव कार्य तथा राहत की कार्यवाही के निरीक्षण के लिये निकल पड़े।

वारंगल के लिये रवाना हुये मुख्यमंत्री रेड्डी ने केन्द्र सरकार से इस भंयकर बाढ़ को राष्ट्रीय आपदा घोषित करने का अनुरोध किया। तेलंगाना में बाढ़ के कारण, अभी तक 16 लोग मर चुके हैं तथा सैंकड़ों लोग बेघर हो गये हैं। 2 सितम्बर को सुबह-सुबह ही सड़क मार्ग से बाढ़ प्रभावित वारंगल के लिये रवाना होने से पहले, रैवन्त रेड्डी ने अधिकारियों को निर्देश दिये कि पुलिस बटालियनों को आपदा प्रबंधन का प्रशिक्षण उपलब्ध करायें तथा कुछ प्रशिक्षण डी.डी.आर.एफ. को भी उपलब्ध करायें।

राजस्थान में ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अनिल सरसावन और उदयपुर के पर्यावरण वैज्ञानिक एवं सेवानिवृत्त सहायक वन संरक्षक डॉ. सतीश शर्मा ने यहां एक अनोखी फंगस की खोज की है। इस फंगस का वैज्ञानिक नाम स्पिरोबोलस जयसुखियेंसिस है, लेकिन स्थानीय लोगों के बीच इसे "गोले दागने वाली फंगस" के नाम से जाना जाता है। डॉ. शर्मा ने बताया कि जब इस फंगस को छुआ जाता है, तो यह छोटे-छोटे काले रंग के गोले यानी बीजाणुओं की तेजी से बरसात करती है, मानो कोई तोप गोले दाग रही हो। यही कारण है कि इसे अंग्रेजी में 'आर्टिलरी फंगस' कहा जाता है। अगर आप सफेद कपड़े पहने हुए इस फंगस को छू लें तो ये गोले आपके कपड़ों पर चिपक जाएंगे और दूर से ही दिखाई देंगे। डॉ. सरसावन और डॉ शर्मा के मुताबिक राजस्थान में इसकी उपस्थिति पहली बार और भारत में दूसरी बार दर्ज की गई है। इससे पहले भारत में इस फंगस की उपस्थिति गुजरात में 2020 में दर्ज की गई थी। मांडलगढ़ के राजपुरा गांव में तालाब के किनारे जमा कचरे में यह फंगस पाई गई। इस शोध को तमिलनाडु से प्रकाशित स्पीशीज जर्नल के 25वें अंक में प्रकाशित किया गया है। डॉ. सरसावन और डॉ. शर्मा के अनुसार इस शोध से यह साफ हो गया है कि जैव विविधता सिर्फ संरक्षित क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं है बल्कि हमारे गांवों के खेतों, तालाबों और चरागाहों में भी भरपूर पाई जाती है। हमें इन शामलात संसाधनों के महत्व को समझना होगा और इन पर लगातार शोध करते रहना होगा ताकि कई अज्ञात प्रजातियों को सामने लाया जा सके व संरक्षण किया जा सके।

पायलट ने शहीद हवलदार अनय सिंह की मूर्ति का अनावरण किया

- पायलट ने नाहिड़ा में श्री बाबू महाराज जी के वार्षिक मेले पर आयोजित विशाल किसान सम्मेलन में भी भाग लिया।

महुवा, दौसा, 4 सितम्बर (निस)। कांग्रेस नेता सचिन पायलट ने गांव सिकंदरपुर (महुवा, दौसा) में शहीद हवलदार अनय सिंह की मूर्ति का अनावरण किया। यहां कांग्रेस कार्यकर्ताओं व पदाधिकारियों ने सचिन पायलट का भव्य स्वागत - सत्कार किया।

यहाँ पर पायलट ने जब लग्ज़री गाड़ी छोड़ ट्रैक्टर की स्टियरिंग थामी तो कार्यकर्ताओं ने सचिन पायलट के समर्थन में नारे लगाए।

ट्रैक्टर के आगे सचिन पायलट का कटआउट भी लगा हुआ था। काफी संख्या में लोग उनके साथ सैल्फी लेने का प्रयास कर रहे थे। इस अवसर पर पायलट ने कहा, "पेपर लीक की जांच आखिरी तह तक पहुंचनी चाहिए। मैने शुरु में ही कहा था कि आर.पी.एस.सी. को पुनर्जीवित करना पड़ेगा। इस मामले का पूरी तरह खुलासा होना चाहिए। चाहे बड़ा से बड़ा कोई भी व्यक्ति हो, उसका नाम सामने आना चाहिए और उसे सख्त से सख्त सजा मिलनी चाहिए।" इसके अलावा पायलट ने नाहिडा, सिकंदरपुर में आयोजित विशाल किसान सम्मेलन व श्री बाबू महाराज जी के वार्षिक मेले में शिरकत की।

इस अवसर पर सांसद मुरारी लाल मीणा, सांसद भजन लाल जाटव, सांसद संजना जाटव, विधायक मांगी लाल मीणा, विधायक अनिता जाटव, पूर्व विधायक गजराज खटाना, पूर्व विधायक ओमप्रकाश हुडला, पूर्व विधायक इंद्राज गुर्जर, पूर्व जिला प्रमुख अजीत सिंह महुवा एवं बड़ी संख्या में बाबू महाराज के भक्तगण मौजूद थे।

भाजपा मीडिया ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

केन्द्र शासित प्रदेश में अगली सरकार भाजपा के नेतृत्व में गठित होगी। माधव ने कहा, "यह एक ऐतिहासिक चुनाव होगा।"

वायनाड पीड़ितों ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

वायनाड से सांसद भी रह चुके हैं। वायनाड की त्रासदी के लिए अपनी तनख्वाह दान करने को लेकर राहुल गांधी ने अपने पोस्ट में लिखा, "वायनाड में हमारे भाई-बहनों ने एक बहुत बड़ी त्रासदी का सामना किया है और उन्हें हमारे समर्थन की जरूरत है ताकि वे अपने नुकसान से उबर सकें। मैंने अपने एक महीने की तनख्वाह बाढ़ पीड़ितों के राहत और पुनर्वास के लिए दान कर दी है। मैं सभी भारतीयों से गुजारिश करता हूं कि जितना हो सके मदद करें क्यों हर छोटी मदद मायने रखती है।" आपको बता दें कि गत वायनाड में हुये भूस्खलन और बाढ़ की चपेट में आने से करीब 240 लोगों की मौत हो गई थी। उन्होंने वायनाड के पुनर्निर्माण के लिए लोगों से कांग्रेस केरल के फंड में योगदान देने की अपील भी की। राहुल गांधी ने कहा, "वायनाड हमारे देश का एक खूबसूरत हिस्सा है, और हम सब मिलकर यहां के लोगों की जिंदगी को फिर से पटरी पर ला सकते हैं।"

नायडू आंध्र में भारी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

इससे राजनैतिक हलकों में अटकलों का बाज़ार गर्म हो गया है।

तेंलगाना के राजनैतिक विश्लेषकों ने कहा कि चन्द्रबाबू भले ही अपने कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाने के लिए यह कह रहे हो पर तेलगांना में नए सिरे से पार्टी को खड़ा करना भारी चुनौती साबित होगी।

भाजपा व बी.आर.एस. के बीच सांठगांठ की चर्चा इतनी ज्यादा है कि बी.आर.एस. का इससे निकल पाना कठिन हो रहा है। इसके अलावा राज्य में कांग्रेस के पुनर्जीवित होने के बाद तेलंगाना की राजनीति में फिलहाल ना तो भाजपा की जगह है ना ही तेलुगूदेशम की जब से आंध्र का विभाजन हुआ है तब से तेलंगाना में पैर जमाने की तेलुगूदेशम पार्टी की हर कोशिश बुरी तरह फेल हो गई है।

तेलंगाना में 2018 से पूर्व टी.डी.पी. से नेताओं के बाहर जाने का सिलसिला शुरु हुआ था। सबसे पहले तेलंगाना में तेलुगूदेशम के अध्यक्ष एल.रामन्ना ने पार्टी छोड़ी थी और वे बी.आर.एस. में चले गए थे उसके बाद तो कई नेताओं ने तेलुगूदेशम छोड़ दी थी तब के.सी.आर. कहते थे कि वे तेलुगूदेशम को खाली कर देंगे और वास्तव में वही हुआ।

लेकिन आज नायडू फिर से ताकतवर हैं और हैदराबाद नगर निगम चुनाव में वे अपनी ताकत आजमा रहे हैं। यही वजह है कि वे तेलंगाना में अपनी पार्टी को पुन: खड़ा करने की बात कर रहे हैं।

'आर्थिक स्थिति ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

तरीके से रह रहा था, लेकिन वह उसे उसकी जानकारी के बिना ही गलत तरीके से भारत में ले आई। बच्चे के प्रति उसका व्यवहार भी सही नहीं है। इसलिए उसे उसके बच्चे की कस्टडी दिलवाई जाए। इसके विरोध में पत्नी की ओर से कहा गया कि बच्चे की उम्र 7 साल है और वह उसकी अच्छी तरह से देखभाल कर रही है और सबसे करीबी भी है। याचिकाकर्ता का यह आरोप भी गलत है कि उसका बच्चे से अच्छा बर्ताव नहीं है, बच्चा अपनी मां के साथ अच्छी तरह से रह रहा है। इसलिए ऐसा कोई भी कारण नहीं है कि बच्चे की कस्टडी मां से लेकर दुबई में रह रहे पिता को सौंप दी जाए।

खंडपीठ ने मां के पक्ष में फैसला देते हुए बच्चे को मां के साथ ही रहने और पिता को मिलने-जुलने की छूट देते हुए याचिका को निस्तारित कर दिया है।

राहुल ने कश्मीर में प्रचार की शुरुआत मोदी के खिलाफ बड़े ही आक्रामक अंदाज़ में की

राहुल गांधी ने कहा हमने प्रधानमंत्री मोदी को मानसिक रूप से परेशान कर दिया है, उनका आत्मविश्वास ही गायब हो गया है, अब वे सीना तानकर नहीं चलते

- राहुल गांधी ने कहा भाजपा वालों ने पहले कहा कि जाति जनगणना नहीं होगी। अब आर.एस.एस. के लोग कह रहे हैं कि जाति जनगणना सही बात है। पहले उन्होंने कहा कि लेटरल एंट्री से बाहर के लोगों को सरकार में लाएंगे। थोड़ा सा दबाव डाला तो भाजपा बोली ऐसा नहीं होगा। आप यह समझ लीजिए कि नरेंद्र मोदी अब देश की जनता से डरते हैं।

श्रीनगर, 4 सितम्बर। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने आज से जम्मू-कश्मीर में चुनाव प्रचार की शुरुआत की। इस दौरान उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर एक बार फिर तीखा हमला बोला। कांग्रेस लीडर ने कहा कि हमने नरेंद्र मोदी को मानसिक रूप से परेशान कर दिया है। उनका आत्मविश्वास ही गायब हो गया। उन्होंने पहले कहा कि जाति जनगणना नहीं होगी। अब आर.एस.एस. के लोग कह रहे हैं कि यह सही बात है। पहले उन्होंने कहा कि लैटरल एंट्री से बाहर के लोगों को सरकार में लाएंगे। थोड़ा सा दबाव डाला तो भाजपा बोली ऐसा नहीं होगा। आप यह समझ लीजिए कि नरेंद्र मोदी अब देश की जनता से डरते हैं। राहुल गांधी ने कहा कि थोड़ा ही समय बचा है और हम नरेंद्र मोदी एवं भाजपा को सत्ता से हटा देंगे।

उन्होंने कहा कि पहले नरेंद्र मोदी जी सीना फैला कर आते थे, अब ऐसा नहीं है। पहले बड़े-बड़े भाषण देते थे। अब संसद में जाने से पहले संविधान को सिर पर रखा और फिर अंदर गए। इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ कि एक राज्य से उसका दर्जा छीन लिया गया और यूटी बना दिया। हमने तय किया है कि सबसे पहले जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा देना है। आपका धन छीना जा रहा है। आपकी जमीन छीनी जा रही है। आपका पैसा बाहर के लोगों को दिया जा रहा है। सारे ठेके बाहर के लोगों को मिल रहे हैं। हमारा पहला कदम जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा वापस देने का होगा। हम चाहते हैं कि पहले आपको राज्य का दर्जा मिले और फिर चुनाव हो।

भाजपा ऐसा नहीं चाहती और उनका कहना है कि पहले चुनाव हो फिर राज्य के दर्जे पर बात होगी। हम कहते हैं कि भाजपा चाहे या न चाहे, लेकिन इंडिया अलायंस इतना दबाव डालेगा कि जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा देना ही होगा। राहुल ने कहा,हम सभी जानते हैं कि यहां बिजली परियोजनाएं बनाई जा रही हैं। कहा गया कि आपको फ्री में बिजली मिलेगी, लेकिन ऐसा नहीं हो रहा है। चुनाव में हम जीतेंगे तो यह काम कर के देंगे। आप देश के लोगों को बिजली दे रहे हो, लेकिन आपकी जेब से ही पैसा भी लिया जा रहा है। पूरे देश में नरेंद्र मोदी ने बेरोजगारी फैलाई है।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुंभाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908